ज्यौतिष में स्वर-विज्ञान का महत्त्व

लेखक :-

केदारदत्त जोशी

ज्योतिश्शास्त्राचार्य (गणित + फलित)

प्राध्यापक ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली - पटना - वाराणसी.

प्रकाशक :–

मोतीलाल बनारसीदास

चौक, वाराणसी।

प्रथम संस्करण १९६८

मूल्य—३·००

मुद्रक :–

महादेव प्रसाद,

दीपक प्रेस,

१७/२७२ नदेसर, वाराणसी कैंट।

फोन ३९०८

नम्र निवेदन

भविष्य ज्ञान के लिए फलित ज्यौतिष की अनेक विध सरणियों में स्वर-विज्ञान, ज्यौतिष-शास्त्र की एक सर्वमान्य प्राचीन पद्धति है, जिसमें मनुष्य के नाम के अनुसार भविष्य का ज्ञान किया जाता है। लेकिन आज यह प्राय: लुप्त ही है।

ज्योतिश्शास्त्र की इस शाखा का उल्लेख भारतीय धर्मग्रन्थों में भी पर्याप्त विस्तार से मिलता है। "शक्ति" "ब्रह्म" "रुद्र" और "विष्णु" प्रभृति प्राचीन यामल ग्रन्थों में भी इस विज्ञान पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ है।

वाल्मीकि रामायण श्रीमद्भागवत में भी भिन्न-भिन्न स्थानों पर ज्यौतिष शास्त्र के अंगों उपांगों का विशद परिचय और विश्लेषण ग्रन्थ में (वर्णित) चित्रित नाम आदि के चरित्र के माध्यम से हुआ है। इस तरह पूर्ववर्ती ग्रन्थों में इस शास्त्र की परम्परा का निर्वाह सुन्दर ढंग से मिलता है। (देखें परिशिष्ट ख)

कालान्तर में गोरख-पन्थियों और नाथ-पन्थियों के यौगिक साधनाओं से सम्बन्धित योग शास्त्र के ग्रन्थों (शिवस्वरोदय-हठयोग) ने इस स्वर विज्ञान के विकास में काफी योगदान किया।[1]

---

१ "हठ्योग प्रदीप" ग्रन्थ में (सहजानन्द सन्तान चिन्तामणि स्वात्माराम योगीन्द्र-विरचित जिसमें ज्योत्स्ना टीका है) "राज योग द्वारा कैवल्यफलप्रद के लिए...... आदिनाथ शिव ने गिरिजा को हठ योग विद्या बताई है। अर्थात् प्राण और अपान की (सूर्य + चन्द्र) एकता, प्राणायाम या हठ योग है" हठ योग का यही तात्पर्य है। इसी आशय को "सिद्धसिद्धान्त" पद्धति में "गोरक्षनाथ" ने "हकार: कीर्त्तित: सूर्य: ठकारस्तु चन्द्रमा" इत्यादि से स्पष्ट किया है।

प्रत्येक मानव के २४ घण्टा = ६० घटी = ३६०० पल × ६ (६ प्राण =

अब प्रश्न यह उठता है कि जिसने इस संसार को छोड़ दिया, जिसे कोई इच्छा नहीं, जो निर्लोभी है उसे अपने भविष्य चिन्ता की क्या इच्छा ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि मनुष्य जीवित रहते इच्छा विहीन नहीं हो सकता, किसी न किसी तरह की आकाङ्क्षा उसे अवश्य रहती है। चाहे वह निज स्वार्थ की हो अथवा परमार्थ की अतः—जहाँ साधारण गृहस्थों में पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा आदि व्यक्तिगत स्वार्थ सम्बन्धी आकाङ्क्षाऐं होती हैं वहीं परोपकार भावना में जीवन समर्पण करने वाले परम हंस योगियों या सिद्धों को परोपकार रूप स्वार्थसिद्धि की आकाङ्क्षा "सर्वः स्वार्थं समीहते" प्रबल रहती है। यही कारण है कि प्राचीन धर्म ग्रन्थों के अतिरिक्त हठ-योगियों और सिद्ध साधकों ने भी ज्यौतिष एवं स्वर-विज्ञान का साहाय लिया।

आदि काल से ज्यौतिषी का समाज में आदर रहा है। इस प्रकार भविष्य ज्ञान को अपने गर्भ में समेटे हुए यह प्राचीन शास्त्र, युग युगों से समाज के प्रत्येक वर्ग और आश्रमों की सेवा करता आ रहा है। यही कारण है कि इस शास्त्र का ज्ञाता भारतीय समाज और संस्कृति में पूजनीय और महनीय स्वीकार किया गया है। क्योंकि दैवज्ञ संज्ञाधारी, समाज का यह प्राणी, ग्रहचार का सम्यक् ज्ञाता होते हुए तपोमय जीवन व्यतीत करता है और यही कारण है कि मुमुक्षु भी इससे अपने भविष्य ज्ञान काल की जिज्ञासा रखते हैं।

असु = पल) = २१६०० प्राणों से एक अहोरात्र में श्वास का आदान प्रदान होता रहता है। श्वास की आदान प्रदान क्रिया हं सः या सो ऽहं यह जीव की स्वाभाविकता है। इसी को शि + व, या, ता + ल आदि शब्द संकेतों से व्यक्त किया गया है (शिव स्वरोदय)

संगीत शास्त्र के गर्भ में भी

"त कारः शंकरः प्रोक्तः लकारः पार्वती स्मृतः"

शिवशङ्कर संयोगात्ताल इत्यमिधीयते" यही योग विद्या निहित है।

"एकासनस्था जलवायुभक्षा मुमुक्षवस्त्यक्तपरिग्रहाश्च
पृच्छन्ति तेऽप्यम्बरचारिचारं दैवज्ञमन्ये किमुतार्थं चित्ताः" ।

स्वभावतः मानव सरलता की ओर उन्मुख होता है। इसलिए उसका हृदय और मस्तिष्क दोनों ही शुष्कता और दुरूहता से दूर रहने की कोशिश करता है। तथापि कभी-कभी अपनी अनभिज्ञता या अन्धविश्वास के कारण तथा कथित दुरूहता के प्रति श्रद्धा या प्रशंसा का भाव अवश्य रखता है। दुर्भाग्यवश कुछ ऐसी ही प्रवृति इधर कुछ समय से ज्योतिष शास्त्र के साथ भी हो गई है।

आधुनिक काल के तथा कथित ज्योतिश्शास्त्राचार्यं विद्वानों की कृपा से जन-जन में व्याप्त यह शास्त्र केवल श्रद्धा का पात्र रह गया है। फलतः सर्व साधारण में इस शास्त्र का ज्ञान लुप्त प्राय हो रहा है। भारतीय धर्म एवं संस्कृति की इस अमूल्य निधि की स्वभाव सिद्ध सरलता उपयोगिता और महत्त्व के प्रति जन साधारण का ध्यान आकृष्ट करने के उद्देश्य से इन पंक्तियों के लेखक ने इस लघुग्रन्थ की रचना का संकल्प किया।

प्रस्तुत लेखक ने इस ग्रन्थ में ज्योतिष के सरलतम विधि सरणियों को दृष्टिपथ में रखते हुए उसके विभिन्न अंगों के उपाङ्गों के विश्लेषण का प्रयत्न किया है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रस्तुत ग्रन्थ में व्यक्ति के जीवन के आगामी अध्यायों को खोलने का प्रयत्न किया। मूल आधार उसका लाक प्रचलित नाम बताया गया है, न कि तथा कथित विद्वान् आचार्यों की दुरूह और श्रम जाल से भरी प्रणालियाँ।

किसी व्यक्ति के नाम के ही अनुसार उसके दुख-सुख जन्म मृत्यु आदि का पता या ज्ञान इस स्वरोदय शास्त्र के द्वारा सम्भव है।

आधुनिक काल में जिन्हें हम '-मनोविज्ञान" (Psychology) और समाचार सम्प्रेक्षण (दूरानुभूति) (Telipathy) संज्ञा से समझ रहे हैं, इनके साथ भी स्वर ज्ञान पद्धति का समन्वय किया जा सकता है।

इन पंक्तियों के लेखक ने सन् १९४२ में एक शोध-प्रबन्ध इस विषय पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया था, जिसमें इस सन्दर्भ में काफी

गहराई से चिन्तन किया गया है, जो विश्वविद्यालय के गायकवाड़ पुस्तकालय में सुरक्षित है। उक्त शोध-प्रबन्ध में ब्रह्मर्षि महामना पं० मदनमोहन मालवीय के नाम के आधार पर उनका भविष्य निर्धारित किया गया है जो कालान्तर में प्रायः सत्य सिद्ध भी हुआ। उक्त शोध प्रबन्ध विद्वानों द्वारा काफी प्रशंसित हुआ उसी प्रेरणा से ज्यौतिष-शास्त्र को सर्वं साधारण तक पहुँचाने के लिए स्वरोदय की इस सरल शैली पर लघु ग्रन्थ लिखने की आवश्यकता प्रस्तुत लेखक ने महसूस की।

व्यक्ति के नाम के मात्रादिक आठ स्वर

(मात्रा, वर्ण, ग्रह, जीव, राशि, नक्षत्र, पिण्ड और योग) आठ काल

१ घटी $= \frac{\text{१ घण्टा} \times \text{२}}{\text{५}} = \frac{\text{६०}' \times \text{२}}{\text{५}} =$ २४ मिनट, दिन (तिथि) पक्ष, मास, ऋतु, अयन, वर्ष, १२ वर्ष, तथा मानव जीवन के तत्तत्समय की ५ अवस्थाओं, (बाल-कुमार-युवा-वृद्ध और मृत्यु) तथा ५ तत्त्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, के आधार पर गणित के माध्यम से इस स्वर विज्ञान को सरल ढंग से समझाने का प्रयास इस ग्रन्थ में किया गया है।

इस लघु ग्रन्थ में प्रायः तीन विभाग हैं। प्रथम में स्वर साधन की पृष्ठ भूमि एवं उदाहरण स्वरूप दिए गए प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों के आधार पर, उसकी प्रक्रियाओं, का तर्क-सम्मत विश्लेषण परिचय, दूसरे विभाग में प्रमाण स्वरूप दिए गये उक्त सभी ३० या इससे कुछ अधिक व्यक्तियों के नामों के सभी स्वर उनके साधन तथा कारण कार्य सम्बन्ध को स्पष्ट किया गया है। साथ ही साथ इस सम्बन्ध में विद्वानों के हृदय में उठने वाली शङ्काओं का समाधान भी करने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है। [उदाहरण स्वरूप दिए गए व्यक्तियों के नामों के स्वर साधन में त्रुटि हुई होगी यदि वास्तव नाम कुछ और होंगे जिनकी लेखक को जानकारी नहीं थी तो ऐसी स्थिति में फलादेश लक्षित व्यक्तियों को रुचिकर न होगा, तथापि स्वर-साधन प्रक्रिया तो निर्दोष ही रहेगी। ऐसी स्थिति में सहृदय पाठक क्षमा करेंगे। आशा है उनसे प्राप्त निर्देशों से उक्त परम्परा का विशेष विकास होगा।]

तृतीय विभाग में भारत, नयपाल, चीन और पाकिस्तान चार राष्ट्रों तथा भारत की राजधानी दिल्ली एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के १५ अगस्त १९६८ के झण्डाभिवादन समय से भविष्य का भी फलाफल दिया गया है।

इस ग्रन्थ में दो परिशिष्ट भी हैं। प्रथम—रोचक ढंग से मानव जीवन के साथ ज्योतिष के सम्बन्ध को स्पष्ट करने के उद्देश्य से रखा गया है। द्वितीय परिशिष्ट ज्यौतिष-शास्त्र की अटूट परम्परा का परिचय प्रस्तुत करता है।

यद्यपि इस शैली के ज्यौतिष ज्ञान के लिए गुरुमुख से ही ज्ञान प्राप्त करके पारङ्गत हुआ जा सकता है।

"पिण्डं पदं तथा रूपं रूपातीतं निरञ्जनम्।
स्वरभेदस्थितं ज्ञानं ज्ञायते गुरुतः सदा"॥

तथापि श्री गुरु कृपा से इसके प्रणयन में पूरा प्रयास किया है कि यह जन साधारण के लिए भी सहज बोध गम्य हो जाय, और मुझे पूरा विश्वास है कि यदि इस लघु ग्रन्थ को एक बार भी पढ़ कर पाठक मनन और चिन्तन करेंगे तो अवश्य ही इससे लाभान्वित होंगे।

यदि इस ग्रन्थ ने ज्यौतिष शास्त्र के स्वर विज्ञान को जन साधारण तक पहुँचाने में किञ्चित् भी योग दिया और एक भी व्यक्ति ने इससे लाभ उठाया तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

अन्त में, मैं कलकत्ते के अपने मित्र श्री रमाप्रसाद जी "गोयन्का" को हृदय से धन्यवाद देते हुए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने मुझे इस ग्रन्थ को लिखने के लिए प्रेरित किया।

हरि-हर्ष निकेतन
१/२८ नगवा, वाराणसी—५

केदारदत्त जोशी

ज्यौतिष में स्वर विज्ञान

विषय सूची

विषय — पृष्ठ संख्या

परिशिष्ट (क)

परिशिष्ट (ख)

यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अनेक प्रकाशमय पिण्डों (ज्योतिष्क पिण्ड) का समूह है, जिसकी संघटना से ही सृष्टि की स्थिति है। ये सूर्य चन्द्र तारक आदि ज्योतिर्मय पिण्ड चिरन्तन काल से मानव मात्र के आकर्षण किंवा कौतूहल के विषय रहे। आदि मानव ने कदाचित् इन चमकते हुए तत्त्वों को देख न जाने कैसे-कैसे अटकल लगाए होंगे। ज्ञान विज्ञान की प्रगति ने उसकी इस कौतूहल प्रेरित जिज्ञासा को दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ाया। कभी तो उन्होंने इन प्रकाश पुंजों की स्तुति की, कभी उन्हें मानवी आकृति युक्त दैवी शक्ति का प्रतीक मान अनेक मधुर सम्बन्धों की कल्पना की, और सूर्य चन्द्र, उषा की स्तुतियों द्वारा अपनी अभिवृद्धि की प्रार्थना की। वेदों की ऋचाओं में ही अनेक ग्रहों के संचालन गति, स्थिति के विषय मे स्पष्ट निर्देश किया गया है। वैदिक ऋषियों ने ही ज्योतिष्क पिण्डों के अध्ययन को अपने चिन्तन का मुख्य विषय बनाया। यही नहीं ब्रह्म के स्वरूप को ही ज्योतिष के नाम से अभिहित किया गया है। जिसे सम्वत्सरात्मा और महाकाल ब्रह्म भी कहा गया है। उसी अक्षर रूप सम्वत्सरात्मा ब्रह्म के सृष्टि मूल बीज अक्षरों या कलाओं को एक-एक करके जानना ही ज्योतिष विद्या है। स्थूल प्रचलित अर्थों में इस प्रकार खगोल के अनेक ज्योतिर्मय पिण्डों (ग्रहों) के संचालन का अध्ययन तथा उनका सचराचर प्रकृति पर पड़ने वाले तत्तत् प्रभावों से मानव को परिचित कराना, साथ ही विशेषकर मनुष्यों के क्रिया कलापों पर अनेकानेक ग्रहों के सुप्रभाव कुप्रभाव को बतलाते हुए भावी जीवन के लिए निश्चित गति विधि के स्पष्ट निर्देश के साथ उसका मार्गदर्शन करना ही ज्योतिष विद्या है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ज्योतिष-शास्त्र की अध्ययन सामग्री ग्रह संचालन और उसका सचराचर प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन है। यहाँ ग्रहों के विषय में थोड़ा बहुत विचार करना अपेक्षित हो जाता है। ज्योतिर्विदों के अनुसार सूर्य ही एक प्रमुख ग्रह है जिसके चुम्बकीय आकर्षण से समस्त ग्रह बँधकर अपनी अलग-अलग नियत कक्षा में उसकी परिक्रमा करते हैं।

आधुनिक तरंग विज्ञान वेत्ताओं के अनुसार "सूर्य से प्रकाश हमको विद्युत-चुम्बक (Electro magnetic) की तरंग गति (Wave Motion) के द्वारा अप्रमाणिक माध्यम से (Hypothetical) ईथर (ether) के द्वारा प्राप्त होता है। इन किरणों की उत्पत्ति (Origin) सूर्य किरणों के भीषण चहल-पहल के कारण (हलचल) (Violent disturbances) परि-णाम-स्वरूप होता है जो कि उसमें अत्यधिक तापमान पर (high temperature) हो रहे हैं। (Atom and molecules) परमाणु और अणु जो कि सूर्य में विद्यमान हैं, आपस में प्रत्येक दिशा में टकराते हैं जिससे अणु का एक और छोटे हिस्से (electrons) अपने वास्तविक स्थान से च्युत होते जाते हैं। ऐसे परमाणु "Atoms excited" कहलाते हैं ये (excited atoms) अपने स्थान पर क्षण से भी कम समय (fraction of a second) में वापिस लौट आते हैं।[1]

सूर्य अपने प्रकाश और चुम्बकीय शक्ति से सम्पूर्ण ग्रहों को उद्भासित और आर्कषित किए हुए है। सम्पूर्ण ग्रहों के सूर्य की परिक्रमा करने से ही उन्हें सौर मण्डल के नाम से जाना जाता है। सूर्य से ऊपर कुछ ग्रह स्थित हैं और कुछ नीचे या दाहिने या वायें। सूय के ऊपर मंगल ग्रह अपने परिवार के बृहस्पति शनि ग्रहों के साथ सूर्य की परिक्रमा करता है सूर्य के नीचे पृथ्वी अपने परिवार के चन्द्र, बुध, शुक्र ग्रहों के साथ सूर्य की परिक्रमा करती है। ध्यान रहे कि जिस प्रकार चन्द्रमा पृथ्वी बुध और सूर्य की परिक्रमा करते हैं। उसी प्रकार सूर्य के ऊपर के ग्रहों में मंगल वृहस्पति और शनि भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं। इसी क्रम से सूर्य का प्रकाश भी तत्तत् ग्रहों पर पड़ने से उनकी समीप और दूरी क्रम से प्रकाश मात्राओं में भी अन्तर पड़ता है। जिसमें सूर्य से उस ग्रह की दूरी और सामान्य जन की प्रतीति के लिए पृथ्वी से उस उस ग्रह की दूरी का ज्ञान भी प्रमुख है। उक्त ग्रह क्रम से दिनों का

---

१. सिद्धान्त शिरोमणेः ग्रहगणिताध्यायः की भूमिका पृ० ६१ सम्पादक केदारदत्त जोशी।

नामकरण भी किया गया है। (जो रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि)।[१]

यही नहीं अनेक छोटे-छोटे चमकते हुए असंख्य पिण्ड अनन्त आकाश में ग्रहों की परिक्रमा करते हैं, जो दिखाई देते हैं उन्हें उपग्रह कहते हैं। आधुनिक खगोल वेत्ताओं ने, यूरेनेस, नेप्च्यून, प्लूटो आदि उपग्रहों की खोज की है। सम्भवतः वैदिक परम्परा में इनका अतिरविज (शनि से आगे) और वरुण (पाशी) भी कहा गया होगा। साथ ही कुछ प्रसिद्ध तारक समूह जिन्हें नक्षत्र कहते हैं। यों तो नक्षत्र समूह अगणित हैं तथापि चन्द्रमा के या ग्रह कक्षाओं के परिभ्रमण मार्ग में पड़ने वाले प्रमुख अश्विनी भरणी आदि प्रसिद्ध २७ नक्षत्र माने गए हैं। इन सत्ताईस नक्षत्रों के समीपवर्त्ती अन्य कई नक्षत्र समूह की विशिष्ट आकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं। जिनके अनुरूप मेषादि बारह राशियाँ स्थिर की गई हैं। चन्द्रमा और सूर्य आदि सभी ग्रह इन बारह राशियों एवं २७ नक्षत्रों पर से गुजरते हैं। जिससे वर्ष, मास, ऋतु, पक्ष और दिनमान निकलता है। इसी विवेचना से प्रधानतः सौर मास, चन्द्रमास अनेक ग्रहों के सम्बन्ध से अनेक प्रकार वर्षादि की गणना चल पड़ीं। अस्तु इस विशद सैद्धान्तिक जटिलता में न उलझकर (जो कि सिद्धान्त ग्रन्थ की भूमिका में हम वर्णन कर चुके हैं) इन ग्रहों, नक्षत्रों और राशियों के प्रभाव पर विहंगम दृष्टि डालते हुए विषय की स्थापना करना चाहते हैं।

इन ग्रहों, नक्षत्रों और राशियों का सचराचर मात्र प्रकृति पर व्यापक प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। उनके संचालन से पृथ्वी के तल पर अनेक परिवर्तन जैसे—भूकम्प, उल्का, दिग्दाह, अनावृष्टि, अतिवृष्टि जैसे—आकस्मिक अघटित घटनाएँ घटती हैं। साथ ही मानव समाज में अकाल, महामारी आदि के संकट उपस्थित होते दिखाई पड़ते हैं। यही नहीं सामान्य मानव की जीवन-चर्या बहुत कुछ ग्रहों के संचालन से प्रभावित होती है। यही

---

१. विशेष अध्ययन के लिए देखिए-सिद्धान्त शिरोमणि भूमिका केदारदत्त जोशी पृ० ६४

कारण है कि कभी वह दर-दर की ठोकरें खाता फिरता है तो कभी समाज में अत्यधित सम्मान, सम्पत्ति और सुख का उपभोग करता दिखाई पड़ता है। सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों के गुणों की तात्विक मीमांसा से कुछ अन्न तथा वस्तुएँ सम्बन्धित की गई हैं। जैसे—सूर्य ताम्रवर्ण, माणिक्य से, चन्द्रमा, श्वेत मुक्ता से, मंगल-प्रवाल, (मूंगा) बुध-दूर्वा, गुरु पुष्पराग (मणि) शुक्र - हीरा, शनि—निर्मल नीलम से सम्बन्धित किया गया है। यही नहीं उन ग्रहों के तत्तत् गुणों की भी निश्चित विवेचना की गई है जिसके अनुसार—सूर्य को आत्मा, चन्द्रमा को चित्त अन्तःकरण, मंगल को सत्त्व बल, बुध को वचन, बृहस्पति को विज्ञान सार, शुक्र को काम और शनि—को दुःख रूप कहा गया है।

ज्योतिष शास्त्र के तीन स्कन्ध--

खगोल विद्या की सहायता से तथा ग्रहाचार विचार से शुभाशुभ ज्ञान के लिए ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन के मुख्यतः तीन स्कन्ध सर्वमान्य हैं। यद्यपि कतिपय आचार्यों ने इसको पंचस्कन्धों से भी युक्त माना है। यथा—

"पञ्चस्कंधमिदं शास्त्रं होरा-गणित-संहिताः।
केरलिः शकुनं चेति ज्योतिश्शास्त्रमुदीरितम् ॥"

किन्तु वाराह मिहिर जैसे ज्योतिषाचार्य की यह मान्यता ही सर्वमान्य है जैसा कि उन्होंने लिखा है—

ज्योतिः शास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितम्।
तत्कार्तस्न्योपनयस्य नाम मुनिभिः संकीर्त्यते संहिता॥

शास्त्रेऽस्मिन् गणितेन या ग्रह गतिस्तन्त्राभिधानस्त्वसौ।
होरान्योऽङ्ग विनिश्चयश्च कथितः स्कन्धस्तृतीयो परः॥

इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र के अनेक विषय भेद होने पर भी इसके तीन स्कंधों की यत्किंचित् विवेचना अपेक्षित है। इन स्कंधों को विद्वानों

ने अनेक क्रमों में भी रखा है। किन्तु विवेचना की सुविधा के लिए मुख्यतः तीन विभागों को इस प्रकार संयोजित किया गया है—

१. सिद्धान्त

२. संहिता

३. होरा

सिद्धान्त ज्योतिष

यह ज्योतिष का प्रथम स्कंध है जिसमें प्राचीन ऋषियों के खगोलीय विद्या की सहायता से ग्रहों के संचार का ज्ञान प्राप्त होता है। ग्रह नक्षत्रों के परिज्ञान से काल का उद्बोधन कराने वाला शास्त्र सिद्धान्त ज्योतिष ही है। इसमें सभी मान्य सिद्धान्तों के नियम गृहीत होते हैं, जो प्राचीन काल से प्रत्यक्ष तथा प्रयोगात्मक पद्धतियों के द्वारा एक साथ प्रमाणित किए जा चुके हैं। इसके अन्तर्गत गणित के सिद्धान्तों के आधार पर, मान्य ग्रह गति के अनुसार आकाशीय चमत्कार का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसके साधन रूप तीन प्रकार की ग्रह गणित क्रिया की जाती है।

अ. सिद्धान्त गणित

इ. तंत्र गणित

उ. करण गणित

अ—सिद्धान्त गणित—

जिस गणित के अनुसार सृष्टि के आदि काल से आरम्भ कर वर्तमान काल तक खगोलीय ग्रह स्थिति का ज्ञान प्राप्त, गताब्द मास दिन सावन, चान्द्र आदि मान को जान कर, सौर सावनगत अहर्गण बनाकर मध्यमादि ग्रह कर्म किया जाये उसे सिद्धान्त ग्रह गणित कहते हैं।

इस सिद्धान्त गणित के द्वारा ही ग्रह गति से, काल ज्ञान (वर्ष अयन ऋतु मास दिन) तथा दिनों का नामकरण तक साथ ही ब्राह्म दिव्य सौर सावनगत

आदि प्रमुख नौ कालों की गणना, यही नहीं ग्रह वेध से ग्रह छाया से समय ज्ञान, आदि समाज उपकारक विषयों का ज्ञान होता है।

इ—तंत्र गणित —

जिस गणित के द्वारा वर्तमान युगादि वर्षों को जानकर, मध्यादि ग्रहगत्यादि चमत्कार देखे जाँय उसे तंत्र गणित कहते हैं।

उ—करण गणित—

किसी इष्टशक से, वर्तमान शक के बीच के वर्षों के अभीष्ट दिनों की गणना कर (किसी दिन तक) तथा वेध यंत्रों के द्वारा भी ग्रह स्थिति देखकर दोनों का साम्य जिस गणित से हो रहा है उसे करण ग्रन्थ कहते हैं। और स्थूल रूप से यह ग्रहस्थिति कब होगी, तथा देखकर ग्रहों का स्पष्ट रूप से सूर्य चन्द्र ग्रहण आदि का विचार, गणित से होता है उसे करण गणित कहते हैं। करण गणित पर आधारित ग्रंथों में ग्रह लाघव, केतकी और सर्वानन्द करण आदि अधिक महत्वपूर्ण हैं इस प्रकार यह तीन भेदों का ग्रह गणित है।

इस प्रकार सिद्धान्त ज्योतिष, मूलतः गणित क्रिया पर आधारित है। जिसके द्वारा काल ज्ञान, ग्रह संचालन, ग्रह गति और आकाशीय चमत्कारों के विषय में अध्ययन किया जाता है। खगोल ही इसकी विषय वस्तु है और ग्रह संचालन से पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों को भी स्पष्ट रूप से इस भाग में प्रदर्शित किया जाता है।

संहिता ज्योतिष--

संहिता ज्योतिष के द्वारा सूर्यादिग्रहों के संचार एवं स्वभाव, विकार प्रमाण, वर्ण, किरण, स्थान, अस्त, उदय मार्ग, वक्र, अनुवक्र, नक्षत्रों के साथ ग्रह समागम, नक्षत्र में चलन आदि के अनुरूप ग्रहों नक्षत्रों का सामाजिक व्यक्तिगत जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, किस ग्रह का क्या शुभ या अशुभ प्रभाव होगा ? चन्द्रमा के किस नक्षत्र में होने से वस्तुएँ सस्ती और किसमें

महँगी होगीं। वायु कम्प, उल्का, दिग्दाह, भूकम्प के लक्षणों का ज्ञान वृष्टि कब होगी, गृहादि निर्माण कार्यों के लिए शुभ नक्षत्रों का ज्ञान, यज्ञादि शुभ कर्मों को करने के लिए शुभ मुहूर्त आदि का ज्ञान हमें संहिता द्वारा प्राप्त होता है। इस प्रकार संहिता के द्वारा अनेक उपयोगी शुभाशुभ ग्रहगति का ज्ञान होता है। मुहूर्त्त ग्रन्थ फलित ज्योतिष के जो स्वतंत्र ग्रन्थ माने जाते हैं उसका बहुत कुछ समाहार इस स्कंध में होता है। आचार्य वाराहमिहिर ने संहिता ज्योतिष के विषय-सामग्री की, एक लम्बी तालिका प्रस्तुत की है जिसके अनुरूप ज्योतिष का अधिकांश लोकोपकारी अंश पर प्रकाश पड़ गया है। इसके अनुसार शकुन, वास्तु, राजाओं के अनेक कार्यों के शुभ अशुभ योगों की चर्चा से लेकर सामान्य मानव के जीवन की घटनाओं, नवीन शुभ कार्यों के प्रारम्भ के लिए मुहूर्त्त ज्ञान के साथ भूमि लक्षण से लेकर उत्पत्ति (कृषि, खनिज, वन) के विषय में विचार किया जाता है।

होरा —

ज्योतिष का यह स्कंध जातक से सम्बंधित है। मनुष्य के जन्मलग्न के अनुसार जीवन मरण पर्यन्त शुभाशुभ घटनाओं का अध्ययन करता है। मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन का अध्ययन ही इसका लक्ष्य होता है।

होरा शब्द की निष्पत्ति के विषय में भी अनेक मत हैं। मान्य त्रिस्कन्ध ज्योतिषाचार्य वाराह मिहिर ने इसे संस्कृत अहोरात्र शब्द का अपभ्रंश रूप माना है। जो अहोरात्र के आदि और अंत्यवर्ण के लोप से होरा बन गया है। अंग्रेजी में यही आवर (hour) के रूप में और ग्रीक में "होरा" के रूप में प्रसिद्ध है। 'राशेरर्द्ध होरा' की उक्ति के अनुसार एक राशि के आधे भाग को होरा कहते हैं। इस प्रकार से दिन रात (अहोरात्र) २४ घण्टे (hours) १२ राशि × २ = २४ होरा होती हैं। इसीलिए ज्योतिष के इस विभाग का नाम जातक या होरा शास्त्र है।

इस प्रकार होरा स्कन्ध के निम्न क्रम से अनेक विभाग किए जा सकते हैं।

१. जातक ज्योतिष

२. प्रश्न ज्योतिष

३. नष्ट जातक ज्योतिष

४. पंचांग सम्बन्धी ज्योतिष

५. मुहूर्त्त ज्योतिष

६. स्वप्न ज्योतिष

७. स्वर ज्योतिष

८. अंग विद्या ज्योतिष (सामुद्रिक)

९. वास्तु विद्या ज्योतिष

१०. शाकुन ज्योतिष

११. वृष्टि विचार ज्योतिष

१२. ग्रहों से सम्बन्धित जडी बूटियों का ज्योतिष

और

१३. मनोविज्ञान भी ज्योतिष है।

१४. साथ ही संसार में कुछ ऐसे भी मानव हैं जो अकस्मात् कुछ कह दें उनका कथन भविष्य के लिए वह सही होते देखा गया है।

१५. कुछ अनेक प्रकार की यक्षिणी, डाकिनी, भूत आदि साधनिकाओं से भी भविष्य फल कहते हैं।

१६. कुछ ऐसे भी हैं प्रश्न में संख्या पूछकर प्रश्न कर्त्ता के लिए आश्चर्य पैदा करते हुए उसे अपने वश में कर लेते हैं। यहाँ कुछ औघड़ सम्प्रदाय के सन्यासी रूप में ज्योतिषियों का कार्य करते हैं।

१७. भृगुसंहिता तो भारतवर्ष प्रसिद्ध ज्योतिष है, जिसमें ग्रहों लग्नों राशियों की अनेक विधियों के नियत सिद्धान्त से

$$(१२) = १२$$

$$(१२)^{२} = १४४$$

$$(१२)^{3} = १४४ \times १२ = १७२८$$
$$(१२)^{४} = १७२८ \times १२ = २०७३६$$
$$(१२)^{५} = २०७३६ \times १२ = २४८८३२$$
$$(१२)^{६} = २४८८३२ \times १२ = २९८५९८४$$
$$(१२)^{६} = \frac{२९८५९८४ \times ३०}{२} = ४४७८९७६०$$

चार करोड़ सैंतालीस लाख नवासी हजार सात सौ साठ संख्या की जन्म पत्रियों के संकलन का एक महान् ग्रन्थ जिसके लिए एक बड़ी (लाइब्रेरी) पुस्त-कालय चाहिए वह कहाँ है ? मुझे भृगु संहिता नाम के ग्रन्थ के सम्बन्ध में महान् सन्देह है कि और वह ऋषि प्रणीत ग्रन्थ नहीं है। समय पर कुछ कुण्डलियों के संग्रह को यदि किसी बुद्धिमान् ने उसे भृगु संहिता संज्ञा दे दी हो ?

ज्योतिष के इस होरा स्कंध के अनेक विभाग किए जा सकते हैं—

अ—जातक

आ—मुहूर्त्त

इ—शकुन

उ—पशु पक्षियों की बोली

ए—वंश परम्परा की शृंखला

ओ—स्वप्न

आ—रमल या पाशा

ई—सूत्र ग्रंथ

ऊ—स्वर शास्त्र

ऐ—ताजिक वर्षफल आदि निर्माण के यवन मत का नया (ताजा) ज्योतिष।

मुहूर्त्त ज्ञान—पंचागों के अध्ययन से शुभाशुभ तिथियों नक्षत्रों का विचार किया जाता है। शकुन में अनेक द्रव्यों वस्तुओं तथा पशु-पक्षियों के दर्शन से किसी ार्य की सिद्धि असिद्धि का अनुमान किया जाता है। वंश परम्परा और स्वप्नों द्वारा भी भावी शुभाशुभ का ज्ञान किया जाता है। कुछ पाशा (रमल)

के द्वारा भी शुभाशुभ का विचार किया जाता है। जैमिनि आदि अनेक सूत्र ग्रंथो के द्वारा भी सूक्ष्म फलादेश किया जाता है।

फलादेश की इन अनेक पद्धतियों में स्वर शास्त्र की पद्धति अति प्राचीन और प्रमाणित है, जिसके प्राचीन ग्रंथ, रुद्रयामल, विष्णु यामल, शक्तियामल समरसार और नरपति जय चर्या आदि हैं। इस पद्धति में पाणिनि के चतुर्दश सूत्रों के अच् प्रत्याहार अ इ उ ण्, ऋ लृ क्, ए ओ ङ्, ऐ औ च्, से, अ से औ से तक के स्वरों में ५ मूल स्वर (अ[१], इ[२], उ[३], ए[४], ओ[५]) के अनुरूप फलादेश किया जाता है। जिसको हम आगे यथास्थान सविस्तर वर्णन करेंगे इसमें अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय यह है कि इस पद्धति में नाम स्वरों के अनुरूप फलादेश किया जाता है। इस ग्रन्थ में स्वरशास्त्र की पद्धति की विशेष चर्चा अभिप्रेत है। यहाँ पर उसके मूल भूत सिद्धान्तों की यत् किञ्चि विवक्षा के साथ ज्योतिष शास्त्र की इस स्वर पद्धति पर विचार करते हैं—

मूल पाँच स्वरों को ही १—बाल, २—कुमार, ३—युवा, ४—वृ और ५—मृत्यु स्वर के रूप में मानते हैं। नाम स्वर के अनुसार ही पहल स्वर बाल और बाद वाला स्वर कुमार आदि पूर्वोक्त क्रम के अनुरूप स्वीका किया जाता है। मात्रा के साथ इन स्वरों के अवान्तर भेद मिलाकर स्व के ८ भेद मानते हैं जिनका १२ वर्ष की अवधि से लेकर वर्ष, अयन, ऋ मास, पक्ष, दिन, और घटी तक भोग काल का विचार कर शुभाशुभ का फ देश करते हैं। इन स्वरों को नक्षत्रों, राशियों, और ग्रहों से सम्बन्धित कर हैं। यही नहीं दिशा, पिण्ड, नाड़ी, योग करण आदि से सम्बन्धित कर शुभाशु के विचार करने में अत्यधिक सहायता लेते हैं। अंकों की एक सरणि से इ १, २, ३, ४, ५, इन पाँच अंको के अनेक प्रस्तरों से भी अंक सम्बन्धि फलादेश की यहीं पर यह एक मूल भित्ति भी मालूम पड़ती है।

यही कारण है कि प्राचीन काल में स्वर शास्त्रज्ञ ज्योतिषी को समा में अत्यधिक समादर का स्थान प्राप्त था। राजा को शक्ति के संचालन में विशे कर युद्ध के समय स्वरशास्त्रज्ञ ज्योतिषी का अत्यधिक महत्वपूर्ण योग प्रा होता था। उस समय ऐसी मान्यता थी कि स्वरशास्त्रज्ञ ज्योतिषी

रहित अत्यधिक सैन्य बल सहित राजा भी अल्प सेनाबल वाले राजा के द्वारा पराजित होता था। जैसा कि नरपतिजय चर्या ग्रन्थ में लिखा है—

पत्यश्वगजभूपालैः संपूर्णा यदि वाहिनी।
तथापि भंगमायाति नृपो हीनस्वरोदयी ।।११।।

इस प्रकार स्वर शास्त्री (ज्योतिषी) से युक्त राजा एक शत्रु को क्या दश, सैकड़ों हजारों शत्रु राजाओं को सहज रूप में जीत सकता है। स्वर शास्त्रज्ञ ज्योतिषी को अन्य ज्योतिष शास्त्र के स्कंधों का ज्ञान तो होना ही चाहिए। इसके साथ ही साथ उसे अंगभूत शकुन ज्योतिष, मंत्र, केरली शास्त्र का भी ज्ञान होना आवश्यक है। यामल ग्रन्थों का ज्ञान होने के साथ ही अनेकानेक चक्रों, भूबल, बलादि के ज्ञान का विचार भी स्वर शास्त्री के प्रधान गुण स्वीकृत किए गये हैं। इस प्रकार सूत्र रूप में स्वर शास्त्र की रूप रेखा प्रस्तुत कर विस्तार भय से इस चर्चा को यहीं विराम देना चाहिए।

फलित ज्योतिष के अन्तर्गत एक वर्ष के वर्षफल में ग्रहों नक्षत्रों और राशियों के अनुसार शुभाशुभ का फलादेश करते हैं। वार्षिक मासिक और दैनिक रूप में राशियों के अनुरूप शुभाशुभ का विचार किया जाता है। इसे ज्योतिष के अन्तर्गत ताजिक कहते हैं। जो अरबी भाषा का शब्द है। इसमें मनुष्य के वर्ष पर्यन्त, शरीर, धन, भाई, माता, संतान, बुद्धि, विद्या, रोग, शत्रु, स्त्री, धर्म, राज्य, लाभ और व्यय आदि १२ प्रभेदों द्वारा शुभाशुभ का विचार किया जाता है। अरबी ज्योतिषियों के द्वारा ही भारतीय ज्योतिष शास्त्र को यह विद्या मिली होगी। इसके इकबाल, ईसराफ, इत्थशाल आदि सोलह योग, तथा मुन्थाहा सहम आदि शब्द अरबी ही हैं।

रमल या पाशा की पद्धति से फलित विचार भी अरबी ज्योतिषियों की ही देन है जिसमें पाशा के अंकों द्वारा ही फलाफल का विचार करते हैं। अंकों से राशियों और ग्रहों का भी स्पष्ट सम्बन्ध प्रतीत होता है। यह शब्द अरबी रम्माल शब्द का अपभ्रंश रूप है जिसका अर्थ ज्ञाता होता है। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र के कुछ अंगागी विभागों की विवेचना संक्षेप में प्रस्तुत की गई है। यद्यपि इस प्रकार से अनेक विभेदों की भी चर्चा मिलती है

किन्तु सिद्धान्त गणित और फलित ये दो विभाग ही मुख्य अंग माने गए हैं, अस्तु ।

अब हम ज्योतिष शास्त्र के उपादेय अंश की विवेचना करेंगे । ज्योतिषी समाज का एक उपयोगी प्राणी है, जो सामान्य जन को उसकी भाग्यदश के प्रति स्पष्ट निर्देश करता है । ग्रहदशा के दुष्टफल को भोगने वाले निराश व्यक्ति को आशान्वित भविष्य की घोषणा से अनेक प्रकार के उपद्रवों को सहने के लिए संजीवनी शक्ति प्रदान करता है । यही नहीं उसकी मन: शान्ति और ग्रह शान्ति के लिए अनेकानेक अनुष्ठान-जप, तप, दान के लिए सुझाव देता है । जिससे उसकी मनस्तृप्ति के साथ भावी सुखमय भविष्य की आशा किरण उद्भासित होती है । सुखी व्यक्ति के भावी जीवन के उत्थान पतन की घोषणा से वह उसके भविष्य के प्रति निश्चित मार्ग दर्शन कराता है । यहीं नहीं आए दिन आने वाली समस्याओं का समाधान ही नहीं फलित ज्योतिष की चमत्कार पूर्ण पद्धतियों के द्वारा अपूर्व सिद्धि होती है ।

ज्योतिषी समाज का वह अंग होता है जो समाज की वर्त्तमान और भविष्य की दशा का ग्रहाचार के विचार से उसे संकेत करता है । वह दुर्भिक्ष, सुभिक्ष, प्रलय, भूकम्प, चन्द्र-सूर्य ग्रहण, वस्तुओं के भावों में तेजी मंदी का विचार, कृषि सम्पत्ति की वृद्धि, ह्रास, के विषय में अपना निश्चित मत समाज के सम्मुख रखता है जो अधिकतर शत-प्रतिशत सत्य प्रमाणित हो सकता है । इस प्रकार वह समाज की भावी दशाओं का स्पष्ट निर्देश कर उसकी आकस्मिक क्षति से उसे बहुधा बचाने में महत्वपूर्ण कार्य करता है वह समाज के अनेक वर्गों के अनुरूप शुभाशुभ का फलादेश करता है ।

प्राचीन काल से ही इस ज्योतिष विद्या को राजकीय संरक्षण प्राप्त था । राजा की दैनन्दिनी क्रियाओं से लेकर युद्ध प्रस्थान अनुष्ठान आदि के कर्म ज्योतिषी की अनुमति से होते थे । राजवर्ग के द्वारा इस विद्या के उत्थान में पर्याप्त योगदान प्राप्त हुआ । राजतंत्र की शासन पद्धति में ज्योतिषियों का अत्यधिक समादर का स्थान प्राप्त था, किन्तु राजतन्त्र के ह्रास के साथ ही इस विद्या की पूर्व प्रतिष्ठा धीरे-धीरे लुप्त प्राय होती गई । आज भी यही कारण

है कि ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन यामलादि ग्रन्थ राजकीय पुस्तकालयों में ही आज भी सम्भवतः सुरक्षित हैं।

इस प्रजातन्त्रीय युग में भी ज्योतिर्विदों का कार्य कम उत्तरदायित्व का नहीं है। वह ग्रहाचार विचार से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अनेक समस्याओं के भविष्य की घोषणाएँ किया करते हैं। जिसके द्वारा वे देश के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों के विषय में स्पष्टरूपेण भविष्यवाणी करते हैं। वे यह बताते हैं कि किस देश से अपने देश के ऊपर आक्रमण होने की आशंका है। कौन-कौन देश उससे मैत्री का भाव रक्खेंगे और कौन-कौन से देश शत्रुता रक्खेंगे। देश के किस भाग में कौन-सा उपद्रव समुपस्थित होने की भविष्य की सम्भावना है। कौन-सा भाग अतिवर्षण, अनावर्षण, महामारी, भूकम्प से प्रभावित होगा। साथ ही वर्तमान वर्ष में कैसी फसल होगी। देश में केसे कैसे उपद्रव खड़े होने की सम्भावना है। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्री, शासन व्यवस्था को भावी संकटापन्न स्थितियो के प्रति स्पष्ट निर्देशकर उससे राष्ट्र रक्षा के प्रति सजग करता है हमारे देश में ही नहीं विदेशों में भी "कीट" जैसे ज्योतिषी प्रसिद्ध हो गए हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्योतिष विद्या अत्यधिक उपादेय विद्या है। जिसके द्वारा न केवल मानव मात्र के जीवन के पूर्व से उसके मरण पर्यन्त शुभाशुभ का विचार किया जाता है अपि तु इस सृष्टि के आरम्भ से उसके प्रलय पर्यन्त तक ग्रहों की गति और शुभाशुभ का विचार करते हैं। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र का क्षेत्र बहुत ही व्यापक हो जाता है। किन्तु सूत्र रूप में उसकी कुछ समस्याओं को लेते हैं जिन पर ज्योतिष शास्त्र हमें स्पष्ट फलादेश करता है वे समस्याएँ संक्षेप में इस प्रकार हैं—

युद्ध में प्रस्थान करने वाले राजाओं में किसकी विजय होगी; कैसे और कब (समय) प्रस्थान किया जाय कि कार्य सिद्धि हो, शत्रु से पराजित राजा भी अपने शत्रु पर किस प्रकार विजय प्राप्त करे, आपस में लड़ने वाले किस मल्ल (पहलवान) की विजय होगी, बंधन योग से बंधन (जेल) प्राप्त व्यक्ति की मुक्ति कैसे होगी, विवाद प्रतियोगिता में हम कैसे विजयी हों, कब, कहाँ, और कैसे व्यापार करें कि सफलता प्राप्त हो? कैसे सेवक

नियुक्त करें कि हमें लाभ हो ! नौकरी आदि के साक्षात्कार (इन्टर व्यू) के अवसर पर कैसे हम विजयी हों ? किस समय मनुष्य के मन में क्या विचार आ रहे हैं ? किस स्वर का संचालन किया जाय कि हमें अभीष्ट सिद्धि हो ; हमें जन्म और मृत्यु की चिन्ता से कब मुक्ति होगी, कौन सा वर्ष, मास, तिथि, नक्षत्र, वार, घड़ी, अपनी उन्नति के लिए अनुकूल होगी, कब भाग्योदय होगा, हमें पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी कि नहीं, हमारा दाम्पत्य जीवन कब और कैसे सुखी होगा ? हमें संतान की प्राप्ति होगी कि नहीं ? माता, पिता, भाई, कुटुम्बियों से हमारा कैसा सम्बंध रहेगा। यात्रा कब कहाँ, और कैसे होगी उसका क्या परिणाम होगा ? पद प्राप्ति, पद हानि पदोन्नति, सामाजिक सेवा राजनीति के क्षेत्र में कैसी स्थिति रहेगी, शिक्षा दीक्षा, कृषि, गो, और वाणिज्य में कैसी उन्नति या अवन्नति होगी मित्रों से कब हमें सुख या दुःख मिलेगा, धर्मादि कार्यों का अनुष्ठान कब और कैसे होगा मानव जीवन के उत्तम लक्ष्य की प्राप्ति कब होगी ? इत्यादि

इस प्रकार हम देखते हैं कि कदाचित् ही कोई सामाजिक राजनैति और व्यक्तिगत जीवन की समस्या होगी कि जिस पर ज्योतिष शास्त्र में स्प रीति से विचार न किया गया हो। अतः ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता विषय में किसी को ननु नच करने का स्थान नहीं रह जाता है। यह ज्योति शास्त्र ग्रहाचार के कारण दुर्गति प्राप्त मानव के लिए आशा की किरण है स्वस्थ सुखी मानव के लिए भविष्य के शुभाशुभ ज्ञान से भावी जीवन मार्ग दर्शक, समाज की उत्थान पतन दशा के प्रति भविष्यवाणी से उसक रक्षक, राजवर्ग के अनेकानेक भावी समस्याओं, संकटापन्न स्थितियों के विष में संकेत करने से उसके कार्यों का महत्वपूर्ण संचालक है। अव्यक्त काल नक्षत्र आदिकों के संचार ज्ञान से वह भूत वर्तमान और भविष्य का ज्ञाता है यही नहीं वह वेद भगवान का भी नेत्र है, जिससे वर्तमान पाद प्रक्षेप विचार और भावी दुर्दशा या सुदशा का ज्ञान देने वाला है। यह वर्तमा समस्याओं का समाधान तथा भावी संकट के उद्धार का मार्ग दर्शन कराने समर्थ है। वह हमारा, समाज का और प्रशाशक वर्ग का नेत्र है, इसमें को

अत्युक्ति नहीं इसीलिए हम इस उक्ति के साथ अपना स्वर मिलाकर कह उठते हैं कि—"ज्योतिषांमयनं चक्षुः" ।

स्वर शास्त्र क्या है,

जैसा कि हम पहले भी एक स्थान पर संकेत कर आए हैं कि फलित ज्योतिष में स्वरों के अनुसार फलादेश की क्या प्रक्रिया है इसके पूर्व ज्योतिष शास्त्र के इस अंग के विकास क्रम की रूपरेखा का ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है । यों तो वेदों में चिरन्तन काल से उदात्त अनुदात और स्वरित जैसे उच्चारण भेदों से स्वरों के भेद की विवेचना मिलती है । लौकिक संस्कृत के परिनिष्ठित स्वरूप आने के पूर्व पाणिनि के व्याकरण में वर्णित १४ माहेश्वर सूत्रों में अच् तक मूल ९ स्वरों को स्वीकार किया है । पतञ्जलि के महाभाष्य में "ऋकारेऽपि इकारो गृहीतः" मान्यता के अनुसार इन मूल स्वरों की संख्या पाँच (अ[१], इ[२] उ[३], ए[४] ओ[५],) स्थिर होती है । ज्योतिष, योग शास्त्र और तंत्र शास्त्र के अत्यधिक विकास के साथ ही इन स्वरों की अधिकाधिक मीमांसा मिलती है । स्वर शास्त्रीय फलादेश की परम्परा का उद्भव और उनका व्यवस्थित रूप हमें संभवतः ब्रह्म यामल, रुद्र यामल जैसे सात यामल ग्रन्थों में मिलता है । नरपतिजयचर्या नामक ग्रन्थ में इन यामल ग्रन्थों की अतिशयोक्ति पूरित स्तुति पद्धति से मंगलाचरण किया गया है । जयार्णव ग्रन्थ से कलियुग में (स्वरोदय) स्वर शास्त्रीय फलित परम्परा का विकास लक्षित किया गया है । इन स्वर शास्त्रीय पद्धति से फलादेश में मूल पाँच स्वरों को ही आठ स्वर चक्रों और आठकालों से सम्बन्धित कर किसी विशेष व्यक्ति के शुभाशुभ फल का आदेश करते हैं ।

स्वर शास्त्रीय फलादेश पद्धति में मूलतः पाँच स्वरों को फलादेश का मूलधार मानते हैं व्यक्ति विशेष के नाम स्वर या जन्म राशि नाम स्वर के अनुरूप पूरे जीवन को स्वरानुरूप १—बाल, २—कुमार, ३—युवा, ४—वृद्ध, ५—मृत्यु की ये पाँच अवस्थाएँ (जो जीवन की पाँच अवस्थाएँ भी)

कल्पित करते हैं। जिनका आठ कालों में मान्य अवधि तक भोगकाल का निर्धारण किया गया है। इस प्रकार की विवेचना में एक बात यह ध्यान देने की है कि इन पाँच स्वरों में व्यक्ति विशेष के नाम या जन्म राशि, के अनुसार जो स्वर प्रथम होगा उसकी दशा के बिचार में उस स्वर को प्रथम मान लेंगे। जैसे मात्रा स्वर की दृष्टि से अनिल नाम वाले व्यक्ति के के लिए १—अ (वाल) २—इ (कुमार) ३—उ (युवा) ४—ए (वृद्ध) ५—ओ मृत्यु स्वर होगा किन्तु मुरारी नाम वाले व्यक्ति के लिए १--उ (वाल) २—ए (कुमार) ओ ३--(युवा) ४—अ (वृद्ध) और ५--इ (मृत्यु) स्वर होगा। इसी प्रकार मोहन के लिए १—ओ (वाल) २--अ (कुमार) ३--इ (युवा) ४--उ (वृद्ध ५—ए (मृत्यु) स्वर होगा।

इस पद्धति में फलादेश में सहायक अनेक स्वर चक्रों का वर्णन मिलता है। नरपतिजयचर्या में २० स्वर चक्रों का वर्णन मिलता है किन्तु इन स्वर चक्रों की संख्या मूलतः आठ ही स्वीकार की गई है जो निम्नलिखित रूप में है—

१. मात्रा स्वर चक्र
२. वर्ण स्वर चक्र
३. ग्रह स्वर चक्र
४. जीव स्वर चक्र
५. राशि स्वर चक्र
६. नक्षत्र स्वर चक्र
६. पिण्ड स्वर चक्र
८. योग स्वर चक्र

ये आठ स्वर चक्र हैं। प्रत्येक नर नाम से स्वर शास्त्रीय पद्धति से, इन आठ स्वरों का ज्ञान करते हुए, घण्टा, दिन, पक्ष, मास ऋतु अयन, वर्ष, और १२ वर्ष, किससे क्या और कैसे भविष्य विचार किया जाता है इसका विस्तार आगे पढ़िए और उपयोग में लाइए।

इनके अनुरूप ही किसी व्यक्ति विशेष के जीव, वर्ण, मात्रा राशि, ग्रह योग, पिण्ड की मीमांसा से फलादेश करते हैं। इन स्वर चक्रों के अतिरिक्त मनुष्यों के शुभाशुभ भविष्य विचार के लिए अनेकानेक चक्रों का वर्णन मिलता है जिनकी संख्या यामल ग्रंथों में ८१ या ८४ तक मिलती है; जैसे—

छत्र, सिंहासन, पञ्चविध कूर्म चक्र, पद्मपरिण, राहुकालानल, सूर्यकालानल,

चन्द्रकालनल, घोरकालानल, गूढ़कालानल, चन्द्रसूर्यसमायोगकालानलचक्र, संघट्ट चक्र मुख्य सात हैं।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक की गिनती १ से—२७ नक्षत्र तक होती हैं। नवीन घर में प्रवेश करने के लिए कलशवास्तुचक्र की रचना निम्न भाँति की गई है, तदनुसार फलादेश भी विचारा गया है। जैसे कलशचक्र। कलश के ८ विभाग किए गए हैं। मुहूर्त्त ग्रन्थों में चक्रों का तात्पर्य—

(१) मुख, (२) कण्ठ, (३) गर्भ, (४) गुद, (५) कलश का पूर्व, (६) दक्षिण, (७) पश्चिम, (८) और उत्तर पार्श्व।

गृह प्रवेश के समय कलशाकृतिक वास्तु में, सूर्य नक्षत्र को कलश के मुख में रखना चाहिए। इस दिन गृह प्रवेश करने से—गृह दाह होगा।

सूर्य नक्षत्र के दूसरे नक्षत्र से ४ नक्षत्र (२ से ५ तक) कलश के पूर्व पार्श्व में रखने से उन चार नक्षत्रों के किसी एक नक्षत्र में गृह प्रवेश जिस घर में होता है वह घर जनवास शून्य होता है।

६ ठें नक्षत्र से ४ नक्षत्रों में (दक्षिण पार्श्व में) कलश के गृह प्रवेश से गृहपति को द्रव्य प्राप्ति होती है।

१० वें से १३ तक का (कलश के पश्चिम में) गृह प्रवेश से गृहपति को श्री प्राप्ति होती है।

१४ वें से १७ तक में (कलश के उत्तर में) गृह प्रवेश से गृहपति को मकान सम्बन्धी निरर्थक कलह होता है।

१८ वें से २१ तक में (कलश के गर्भ में) गृह प्रवेश से, गृहपति के भविष्य के समग्र गर्भों का नाश। (वंश नाश) होता है।

२२ वें से २४ तक में (कलश के गुद में) गृह प्रवेश से गृहपति को चिरकाल तक गृह में सुख निवास होता है।

२५ वें से २७ तक में (कलश के कण्ठ में) सदा घर में स्थिरता रहती है।

सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक, उक्त गणना के लिए कलश आकार के उक्त जैसे एक प्रतीक से समझाया गया है, इसी प्रकार यहाँ भी चक्रों का ऐसा ही तात्पर्य सर्वत्र समझा जाता है।

इनके अतिरिक्त तिथिवार नक्षत्र से कुलाकुल चक्र, दो प्रकार के कुम्भ चक्र, तीन प्रकार के तुम्बरू चक्र, भूचर खेचर पंथा नाड़ी चक्र, कालचक्र फणिद्वय, द्विधा कविचक्र, गज, अश्व, रथ, कुन्तव्यूह, कुन्त खड्ग, छुरि, सौरि सेवा, नर, डिम्भ अवर्षण पञ्चसप्तरेखोद्भव, त्रिविध मातृकाचक्र, सांवत्सर स्थानचक्र, शृंगोन्नति इत्यादि चक्रों के वलाबल का विचार करके युद्ध या किसी कार्य का शुभारम्भ करने पर निश्चित सफलता मिलती है।

कार्य सिद्धि के लिए अनेकानेक और भी भूमिबल तथा तांत्रिक क्रियाओं की सहायता से मानव जीवन की कठिन से कठिन समस्याओं का समुचित समाधान और आशातीत सफलता प्राप्त होती है। इन क्रियाओं में कुछ मुख्य क्रियाएँ निम्नलिखित रूप में हैं—उड्डी जालंधरी, पूर्णांकामका, कौल्लैकवीरिका महामारी, क्षेत्रपाली, वंशजा, भद्रकाली, नली, काली, कालरेखा, निरामया जयलक्ष्मी, महालक्ष्मी, जया विजया, भैरवी आदि बलों का प्रयोग स्वर शास्त्रज्ञ कार्यसिद्धि के लिए करते रहते हैं।

इसके अतिरिक्त भूमिस्वर के अनुरूप चन्द्रार्क विम्ब भूमि, ग्रहराशि विलग्नाभूमि, राहुकालानलीभूमि, स्वरभूमि इत्यादिकों के विचार से स्वरशास्त्रज्ञ ज्योतिषी अनेकों कार्यों के शुभाशुभ फलाफल का विचार करता रहता है। इसी के अनुसार वह कब, कहाँ और किस स्थान पर कार्य सिद्धि होगी इसका स्पष्ट फलादेश करता है। उदित स्वर के पूर्णबली मुहूर्त्त ज्ञान से ही शुभ तिथि ग्रह, नक्षत्र का निश्चय किया जाता है।

कार्य-सिद्धि के लिए शकुन तंत्र-मंत्र का भी प्रयोग स्वर शास्त्री द्वारा किये जाते हैं। जिसके द्वारा अभीष्ट सिद्धि हो सके। वह कब कहाँ कैसे बल दे कि कार्य सिद्धि हो। इसका विचार करता है। इस प्रकार स्वर-शास्त्र के अंग भूत-स्वर चक्र, अन्य कुछ आवश्यकीय चक्रों के ज्ञान के साथ भूमि-बल, मंत्र-तत्र बल ज्योतिष सिद्धान्त, शकुन औषधि बल, जड़ी बूटी आदि का ज्ञान नितान्त अपेक्षित हैं। इसके अतिरिक्त स्वर शास्त्री को रणाभिषेक, दीक्षा, रणचर्या, रणकंकण, वीरपट्ट, रणपट्ट, जयपट्ट बंधन, मेरवला, मुद्रा, रक्षा औषध, तिलक, घुटिका, कर्पादिका, शस्त्ररक्षा शस्त्रलेप, मोहन, स्तम्भन,

उच्चाटन जैसी तांत्रिक क्रियाओं का भी ज्ञान पताका, पिच्छक आदि का ज्ञान आवश्यक है। जिसकी सहायता से ही उसे अनेकानेक विषम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है। ऐसे सर्वप्रकार की उपयोगी विद्याओं से युक्त स्वर शास्त्री के द्वारा कोई भी राजा अपने अजेय शत्रु को सरलता से जीत सकता है।

"बलान्येतानि यो ज्ञात्वा संग्रामं कुरुते नृपः।
असाध्यस्तस्य वै नास्ति शत्रु. कोऽपि महीतले ॥ (नरपतिजयचर्या)

नामस्वर और फलादेश

नामकरण परम्परा

मानव अपनी सभ्यता के आदिकाल से ही अपने आसपास की वस्तुओं को देखता तथा उनके साथ उसके सुखात्मक या दुःखात्मक अनुभव प्राप्त करता था। कभी कभी कुछ ध्वनियों को सुनता था। फलतः वह किसी वस्तु, व्यक्ति, और जीव का उसी गुण के आधार पर उसका नामकरण करता था। जैसे—पत-पत् के शब्द से पत्ता आदि गुणों के आधार पर ही हमारे प्राचीन ऋषियों महर्षियों ने देवी देवताओं और परमेश्वर के अनेक नामों की शृङ्खला जोड़ दी। यही नहीं अर्जुन, भीम, रावण जैसे पुराणैतिहास प्रसिद्ध नामों के कई पर्याय मिल जाते हैं, जो हमारी भाषा की समृद्धि का ही द्योतन नहीं करते, अपि तु बुद्धि वैभव और चिन्तन की महत्ता प्रकट करते हैं। इस प्रकार पुराणों में तो नामों की संख्या की जैसे कोई सीमा ही नहीं है। आदि पुरुष भगवान विष्णु के हजारों नामों का संकलन तो हो चुका है जो विष्णु सहस्रनाम के रूप में प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार शिव सहस्रनाम, लक्ष्मी सहस्र नाम, गायत्री सहस्रनाम आदि ग्रन्थ संस्कृत भाषा की शाब्दिक समृद्धि का द्योतन करते हैं। यदि इन नामों का संकलन किया जाय तो एक स्वतन्त्र ग्रन्थ ही निर्मित हो सकता है। ऐसा अनुमान लगता है कि तभी से किसी महान् व्यक्ति के आगे श्री श्री १०८

या अनन्त श्री विभूषित श्री १००८ श्री महात्मा अमुक इत्यादि लिखने की परम्परा चल पड़ी।

ज्योतिश्शास्त्र में भी प्रत्येक नक्षत्र के चार चरणों के लिए ४ अक्षरों से वनने वाले नामों का निर्देश मिलता है, जिसके अनुसार २७ × ४=१०८ विभिन्न नामों की व्यवस्था मिलती है।

इन्ही ज्योतिष शास्त्रीय नामकरण पद्धति ही के १०८ अक्षरों से असंख्य नामों की परिकल्पना हो सकती है।

जन सामान्य में नामकरण के पीछे मुख्यतः दो प्रकार की मूल वृत्तियाँ काम करती हैं। प्रथमतः पिता माता या कुलश्रेष्ठ व्यक्ति, नवजात शिशु को अपने लाड प्यार दुलार से अनेक नामों से अभिहित करता है। जैसे पप्पू, गप्पू, रज्जू, मुन्नी, मुन्नू, चुन्नू, भोंदू, राजू, लल्लू, मल्हू, दीपो, पुल्लो, कुल्लू, जग्गू, रम्भो, सोना, मुन्नों इत्यादि। प्रायः दुलार करते समय कोई भी नवजात शिशु को इस प्रकार के नामों से ही पुकारता है। व्यवहार में प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि अनेक व्यक्तियों के घर का नाम कुछ और, और समाज में कुछ और ही नाम होता है। एक ऐसी भी भावना कुछ लोगों में काम करती है कि जितना भद्दा नाम रक्खेंगे बालक या बालिका उतना ही अधिक दीर्घजीवी होगा या होगी।

जन सामान्य में नामकरण की एक दूसरी भावना भी काम करती है वह यह है कि मनुष्य अपनी संतति का अच्छा से अच्छा और ललित नाम रखना चाहता है। बंगदेश में नामकरण की जो वैविध्य और चारुता मिलती है, वह कदाचित् ही दूसरे प्रान्त के लोगों में मिले, कुछ उदाहरण दर्शनीय हैं, जैसे मीनाक्षी, शरद्कुमार, नलिनी, हेममालिनी, मृणालिनी, आशुतोष श्यामाप्रसाद, शरच्चन्द्र, त्रिगुण इत्यादि। अधिकांश लोग अपने संतानों का नाम पूर्व के श्रेष्ठ पूरुषों देवी देवताओं के अनुरूप रखते हैं। देव नाम के बाद दास या कुमार, दीन, लगा देते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति वाले लोग देववाची नामों को ही अधिक प्रसन्द करते हैं। हाँ आधुनिक चकाचौंध में चलचित्र प्रेमियों ने अपनी संतानों के नाम अभिनेताओं के नामों से भी रखना शुरू किया है। यही कारण है कि आज यत्र तत्र सर्वत्र अनेक राजकुमार या अशोक कुमार, नाम के

बालक तथा अनेक मीनाकुमारी, मधुबालाएँ, नामकी कुमारियाँ मिल जायँगी। यही नहीं अब तो लोग स्वयं माताएँ को मम्मी और पिता को पापा सुनना पसन्द कर रहे हैं।

स्वरशास्त्रीय ज्योतिष (फलित) पद्धति में लोक प्रचलित नाम से ही शुभाशुभ का फलादेश करते हैं। यहाँ नाम की यह परिभाषा मान्य है कि नाम वह अभिधेय संज्ञा है जिसके उच्चारण से सोया हुआ कोई निश्चित व्यक्ति जग जाय अथवा बुलाने पर चला आवे।—

"प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः।"

स्वरशास्त्रीय ज्योतिष पद्धति में लोक प्रसिद्ध नाम ही शुभा-शुभ फलादेश के लिए गृहीत होता है। यह ध्यान देने की बात है कि मूल नाम से ही फलाफल का विचार किया जाता है। वंश जाति या उपाधि को नाम से अलग कर ही फलादेश किया जाना चाहिए।

यहाँ यह एक शंका अवश्य उपस्थित होती है कि समाज में प्रचलित नाम या माता-पिता के प्यार का नाम जो घर में या स्वजनों के बीच प्रसिद्ध है। किससे स्वर विचारा जाय ? स्वर शास्त्री दोनों (प्यार का नाम और समाज व्यवहार नाम) नामों से विचार करता है। जन्म लग्न की नक्षत्र के अनुसार राशिनाम से भी जन्म से मृत्युपर्यंन्त शुभाशुभ का फलादेश किया जाता है। यहाँ एक विशेषता होती है कि आपके भावी फलाफल के फलादेश के लिए पदे-पदे जन्मपत्री (कुण्डली) की बहुत अधिक अपेक्षा नहीं होती है। स्वरशास्त्री केवल आपके नामस्वर से ही पूरे जीवन के शुभाशुभ फलों के विषय में अपना स्पष्ट मत स्थापित करता है। फलित ज्योतिष की इस स्वर पद्धति का यही एक चमत्कार है जो सर्वसाधारण के लिये स्वयं के भविष्य ज्ञान में सुलभ है।

वैदिक परम्परा के ग्रन्थों में वर्णित नाम :—

नामकरण की सामान्य विवेचना के पश्चात् हम सनातन धर्म के आर्य

ग्रन्थों में वर्णित नामों के विषय में थोड़ी बहुत विवेचना प्रस्तुत करते हैं। जैसा कि पहिले वर्णन कर चुके हैं कि प्रथमतः वस्तुओं पदार्थों का नाम ध्वनि साम्य के आधार पर किं वा उसके गुणों से उसे सम्बन्धित कर उसका नाम निर्धारित किया गया होगा। मूलभूत यह विचार प्रायः आजतक किसी न किसी रूप में पाया जाता है। जैसे काले व्यक्ति को कल्लू मोटे को मोट्, भोदूं नामों से लोग उसे चिढ़ाते हैं। वैदिक ग्रन्थों में भी एक ही व्यक्ति वस्तु और पदार्थ के लिए स्थान-स्थान पर अनेक नाम पर्याय के रूप में मिलते हैं जो हमारी देववाणी की शब्द ससृद्धि का द्योतन करते हैं। देववाणी ऐसे अभिनव शब्द भण्डार से भरी पड़ी है, किन्तु ये पर्यायवाची शब्द भी वस्तु व्यक्ति या पदार्थ के तत्तत् गुणों को अवगत करने के लिए ही होते हैं। इस विशद विवेचना में हम नहीं पड़ना चाहते हैं।

वेद पुराणैतिहासिकधार्मिकग्रन्थों में वेद पुरुष परमात्मा विष्णु के हजारों नाम, शिर, पैर कहे गए हैं। 'विष्णु सहस्त्र नाम' में एक हजार नामों का संकलन मिलता है किन्तु इससे यह कदापि नहीं समझना चाहिए कि उसके इतर और नाम हो ही नहीं सकते हैं। यह समझना बहुत बड़ी भूल होगी। यही नहीं अनेक देवता और देवियों के अनेक नामों से संकलन ग्रन्थ हमारी उपासना पद्धति में विशेष स्थान रखते हैं, जिनमें शिव सहस्र नाम, लक्ष्मी सहस्र नाम, गायत्री सहस्र नाम आदि देवी देवताओं के हजारों नाम का संकलन हम पाते हैं। इसी प्रकार इन्द्र, गणपति, (गणेश) पार्वती, काली, राम, कृष्ण, हनुमान, दुर्गा, सरस्वती आदि देवी-देवताओं के नामों की गणना भी हजारों के लगभग हो सकती है और प्रयास से एक बृहद् ग्रन्थ का रूप ग्रहण कर सकता है। संक्षेप में हम देखते हैं कि देवता देवी या देवकल्पित मनुष्यों आदर्श पुरुषों के अनेक नाम इन आये ग्रन्थों में पाते हैं। इस प्रकार के नामों के अध्ययन से हम एक ही मूलभूत मान्य सिद्धान्त पर पहुँचते हैं कि स्तुति परक इन धार्मिक ग्रन्थों में अनेक नाम केवल विशिष्ट शक्ति या देव के गुणों या लोकोत्तर चरित्रों के आधार पर कल्पित किए गए हैं।

अकारादि १६ स्वरों से प्रारम्भ होने वाले नामों तथा स्वर वर्ण योग से प्रारम्भ होने वाले नाम के साथ मात्रा वर्णों से प्रारम्भ होने वाले नामों पर यदि विचार किया जाय तो उनकी संख्या स्वरानुसार १६ स्वर और व्यंजन योग से १६ × ३३ मात्र, व्यंजन से ३३ उनके संयुक्त व्यंजन होने से तथा नर-नारी इन वर्ग भेद से नामों की संख्या अगणित हो जायगी। इससे यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण नामों का उल्लेख इस लघुकाय ग्रन्थ में न तो सम्भव है और न आवश्यक ही। नाम से ही मनुष्य कीर्ति यश धन और अनेक समृद्धियों को प्राप्त करता है। हिन्दू शास्त्रों में इसीलिये नवजात शिशु का नामकरण संस्कार, "मनु" के अनुसार उसके जन्म से ११ वें या १२ वें दिन में किया जाता है।

"नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः शुभावहं कर्म सुभाग्य हेतुः
नाम्नैव कीर्ति लभते मनुष्यः ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म।"
(मूहूर्त्त चि० "पीयूषधारा")

फिर भी अकारादि क्रम से कतिपय नामों की परिगणना यहाँ प्रस्तुत की जा रही है –

अ पुरुष के, अनन्त, अच्युत, अखिलेश, अनिल, अनल, अनेक नाम हो सकते हैं।
स्त्री० अँजना, अदिति, अजया, अभया, अम्बा, अर्धमात्रा, ,, ,,

आ पु० आदिदेव, आखुवाहन, आरामरमण।
स्त्री० आदिलक्ष्मी, आकृति, आराध्या।

इ —इन्द्र, इरेश, इन्दीवर, इन्दुशेखर।
इन्दिरा, इष्टा, इरावती, इन्द्राणी, इन्दुरूपा।

उ उमेश, उमाकान्त, डर्वीधर
उषा, उमा, उडुप्रभा, उडुपा, उडुपी।

ऊ—ऊर्ध्व बाहु, ऊर्ध्वकेश, ऊर्ध्वदृष्टिक।
ऊर्ध्वकेशी, ऊर्ध्वबाहुप्रिया।

ऋ—ऋषिदेव, ऋग्वेदी, ऋणहर्त्ता।
ऋषिदेवनमस्कृता, ऋग्वेदा, ऋणहर्त्री।

लृ—लुप्तधर्मप्रवर्तक

लुप्तधर्मप्रवर्तका ।

ए—एकाक्षर ऐन्द्रनन्दन

एकाक्षरा एरावती

ओ—ओषधीश –औषधज्ञ

औषधि ।

अं—अण्डमध्यस्थ

अण्डमध्यस्था ।

सामान्य स्त्री पुरुषों के नाम

कस्तूरी, कमलाप्रसाद, कान्ता, खण्डनप्रिय, गन्धर्वराज, गान्धारी गायत्री, गजानन, घनश्याम, घनानन्द, घना, चतुर्भुज, चित्रमाला, चन्द्रचू छत्रधर छत्रपति छाया प्रिया, जन्हुतनया जया, जानकीशरण, झन्झ झिञ्झिका, टंकभेदिनी टङ्कद्विट्, ठठशब्दनिनादिनी, डामर, डामरी, डाकिनी, ढुण्ढि, ढक्का, ढिलीव्रजा, नित्यानन्द, निर्गुण, निरुपमा, नदी, त्रिगुणा, तार केश्वरी, तारकेश, थान्ता, थान्त, दयाकृष्ण, दयामयी, दीनबन्धु, दीना, धवला धरणीधर, पार्वती, परमेश्वर, धेनुरूपा, धनुर्द्धर, धर्मशील, ध्रुव, फलिनी फलदा, फलप्रिय, फलका, फणीन्द्र, बहुमता, बुद्धिदा, बुद्धिवल्लभ, भद्रेश भद्रकाली, भद्रा, भामिनी भागीरथी, भगीरथ मधु, मधुमती, मधुप्रिया, माध्वी माधवी, मधुकान्त, मार्तण्ड, मुनीश्वर, योगीश, योगासन, योगमाया, योगेश्वर योगेश्वरी, रुक्मिणी, रोहिणी, रोहिणीरमण, राधारमण, राममोहन, रामचन्द्र, रामनाथ, रुद्रधर, लज्जा, लज्जावती, लोला, लोकनाथ, लोकमणि, ललिता, लक्ष्मी वरदा, वागीश, विद्या, विद्यापति, विमला, विमलेश, शान्ता, शाकम्भरी, शिवा, शारदा, शारदा प्रसाद, शरणागत, शङ्कर, शङ्कराचार्य, शरीरिणी, शुकवाहना, श्रीमती, श्रीमान्, श्रीधर, श्रवणकुमार, षडभाषा, षडर्तुप्रिय, सरस्वती सामगानप्रिय, सामगानप्रिया, सप्तर्षिमण्डलगता, सूक्ष्मेश्वर, सूक्ष्मा, सागरानन्द, सागरा, हिरण्यवर्णा, हिरण्यप्रिय, हंसवाहना, हंसादत्त, क्षेमेश, क्षेमेन्द्र, क्षीराधित

नया, क्षीरप्रिया, क्षीरशायी, हरिप्रिया, इत्यादि ये लोक व्यवहार में प्रसिद्ध अनन्त नामों की अनन्त श्रेणियों में संक्षिप्त नर और नारियों के नाम शास्त्रों में उपलब्ध होते हैं। "सहस्र पादः पुरुषः" के आधार से हजारीप्रसाद, यह नाम भी हिन्दी में प्रसिद्ध और सर्वप्रिय भी है।

अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले स्त्री-पुरुष नामों की तालिका हम परिशिष्ट में सुविधानुसार देंगे। यहाँ संक्षेप से उक्त तालिका दी जा सकी है।

इस विवेचना से हमें यह स्पष्ट होता है कि हमारी सतानतन वैदिक संस्कृति के आधार भूत ग्रंथो में, देव गुणों से विभूषित कैसे-कैसे उदात्त नामों की परिकल्पना मिलती है। जिससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि हमारे ऋषियों ने सृष्टि की जन-संख्या के क्रम विकास की अवस्था में ही कितने अगणित नामों की परिकल्पना कर ली थी। जो सृष्टि के अन्त तक की जन-संख्या (की नामिक परिगणना में) का नामकरण कर सकते हैं। नामों की इस अपार सम्पत्ति के ज्ञान से रहित होकर सामान्य जन यदि अपनी संकुचित भावना से घुरहू, कतवारू, चहेटू, पहेटू पेटू जैसे नामों से अपनी संतति को सम्बोधित करें तो "लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति" वाली उक्ति चरिताथ होगी। अपनी बुद्धि का परिचय अपने संतानों के नाम करण से भी होता है। क्या ही अच्छा हो लोग इस प्रकार वैदिक नामों से परिचित होते हुए अपनी संतानों को उक्त नामों से पुकार सकेंगे! जिससे उक्त नाम पुनरुज्जीवित हो सकेंगे।

लोक व्यवहार के कुछ नाम :—

जैसा कि पहले वर्णन किया जा चुका है कि जन सामान्य में नामकरण परम्परा के पीछे कौन-कौन सी कामनाएँ काम करती हैं। उन भावनाओं को पुनः वर्णित न कर संक्षेप में सामान्य जनता मुख्यतः अनुकरण के आधार पर अपने नवजात शिशु का नाम करण करते हैं। फलतः एक नाम के एक ही गाँव में कम-से-कम दो चार दश व्यक्ति तक मिल जाते हैं। कभी

वयोवृद्ध के नामों से ही किसी बच्चे को पुकारने लग जाते हैं। जो उनकी वंश पारम्परिक वृत्ति का द्योतन कराता है।

यहाँ लोक प्रचलित नामों से यही प्रयोजन है कि स्वर शास्त्रीय ज्योतिष की पद्धति में नाम स्वरों के अनुसार ही जन्म से मृत्यु पर्यन्त उन नामों से शुभाशुभ उन्नति अवनति का फलादेश किया जाता है। इस पुस्तक में हम लोक-व्यवहार में प्रसिद्ध तथा समाज में लब्ध प्रतिष्ठ कुछ नामों को फलादेश के लिए ग्रहण करेंगे। जिनका 'नाम स्वरों के फलादेश' अनुरूप अध्याय में विवेचन होगा। लोक प्रसिद्ध कुछ नामों के साथ ही साथ हम जन सामान्य के कुछ नामों को अपनी फलादेश विवेचना का विषय बनायेंगे, जिसकी आगे के अध्याय में विशद चर्चा की जा सकेगी।

स्वर शास्त्रीय ज्योतिष में फलादेश के लिए नर और नारी दो प्रकार के वर्गों में फलादेश की विवेचना करते हैं। नर और नारी के नामों के अनुसार भी स्वरों के आठ स्वर चक्रों के अनुरूप भाग्यफल का आदेश किया जाता है, जो पूर्व वर्णित मात्रा, वर्ण, ग्रह, जीव, राशि, नक्षत्र, पिण्ड और योग हैं। इन स्वर चक्रों के मान्य सिद्धान्तों के अनुरूप १२ वर्ष, १ वर्ष, ६ मास (अयन), ७२ दिन (ऋतु), एक मास, (चान्द्र) १५ दिन पक्ष, १ दिन (तिथि), घटी के समयतक शुभाशुभ, काल, का निर्देश नक्षत्र राशियों के सम्बन्ध से करते हैं। जीवन की सम्पूर्ण परिस्थितियों में इन्हीं स्वर चक्रों और काल चक्रों की सहायता लेते हैं। यहाँ एक बात और भी विचारणीय है कि नाम स्वरों के अनुरूप भाग्य फल की स्वर शास्त्रीय ज्योतिष पद्धति के अनुसार जो फल एक विशेष व्यक्ति के नाम स्वर के अनुसार होगा, वही बहुत कुछ मात्रा में उस नाम के भूमण्डल पर रहने वाले सभी जीवों, द्वीप महाद्वीप, देश-प्रदेश, समुद्र, पर्वत, ग्राम-नगर आदि नामों पर भी वही शुभाशुभ घटित होगा। इससे इस पद्धति में जहाँ विशिष्ट जन विशेष का फलादेश मिलता है, वहाँ वह फल सामान्य जनता के विषय में भी ग्राह्य होता है।

इन नामों के अनुसार आठ प्रकार के स्वर चक्रों के सुविधानुसार प्रयोग

के लिए हम अवकहड़ा चक्र का वह अंश प्रस्तुत करते हैं जो स्वर शास्त्रीय आठ चक्रों के निर्माण और उपयोग में अपेक्षित है।

अश्विनी नक्षत्र के चारों चरणों में क्रमशः—चू चे चो ला	मेष राशि
भरणी ,, ,, ,, ,, ,, ,, ली लू ले लो	अधिपति गृह-
कृतिका के एक चरण तक ,, ,, अ	मंगल
कृतिका के तीन चरणों में क्रमशः—ई उ ए	वृष राशि
रोहिणी के चार ,, ,, ,, ओ वा वी बु	अधिपति गृह-
मृगशीर्ष के दो चरणों ,, ,, वे वो	शुक्र
मृगशीर्ष के दो चरण—का की	मिथुन राशि
आर्द्रा के चार चरण—कु घ ङ छ	
पुनर्वसु के तीन ३ चरण—के को ह	अधिपति बुध गृह
पुनर्वसु के एक चरण—ही	कर्क राशि
पुष्य—हु हे हो डा	अधिपति गृह-
अश्लेषा के चार चरण—डी डू डे डो	चन्द्रमा
मघा के चार चरण—म मी मू मे	सिंह राशि
पूर्वाफाल्गुनी के चार चरण—मो टा टी टू	अधिपति गृह-
उत्तराफाल्गुनी १ च टे	सूर्य
उत्तराफाल्गुनी के तीन चरण—टो पा पी	कन्या राशि
हस्त के चार चरण—पू ष ण ठ	राशीश गृह-
चित्रा के दो चरण—पे पो	बुध
चित्रा के दो चरण—रा री	
स्वाति के चार चरण—रू रे रो ता	तुला राशि
विषाखा के तीन चरण—ती तू ते	राशीश गृह शुक्र।

विषाखा के एक चरण—तो	वृश्चिक राशि
अनुराधा के चार चरण—न नी नू ने	राशीश गृह-
ज्येष्ठा के चार चरण—नो या यी यू	मङ्गल

मूल के चार चरण—ये यो भ भी	धनु राशि
पूर्वाषाढ़ा के चार चरण—भू ध फ ढ़	राशीश गृह-
उत्तराषाढ़ा एक चरण—भे	वृहस्पति

उत्तराषाढ़ा के तीन चरण—भो ज जी	मकरराशि
श्रवण के चार चरण—खी खू खे खो	राशीश गृह-
धनिष्ठा के दो चरण - गा गी	शनि

धनिष्ठा के दो चरण—गू गे	कुम्भ राशि
शतभिषा के चार चरण—गो सा सी सू	राशीश गृह-
पूर्वाभाद्र के तीन चरण—से सो दा	शनि

पूर्वाभाद्र का एक चरण—दी	मीन राशि
उत्तराभाद्र चार चरण—दू थ झ ञ	राशीश गृह-
रेवती के चार चरण—दे दो चा ची	बृहस्पति

इस प्रकार चन्द्रमा की एक ही राशि कर्क और सूर्य की सिंह राशि होती है। तथा-मेष और वृश्चिक ये दो राशियाँ मंगल की

वृष	,,	तुला	,,	,,	,,	शुक्र	,,
मिथुन	,,	कन्या	,,	,,	,,	बुध	,,
धनु	,,	मीन	,,	,,	,,	बृहस्पति की	
मकर	,,	कुम्भ	,,	,,	,,	शनि की राशियाँ होती हैं।	

आठ स्वर चक्र और फलादेश में उपयोगिता :—

स्वरशास्त्रीयज्योतिष में फलित निकालने के मुख्यतः ८ स्वर चक्रों का वर्णन मिलता है, जिनपर स्वरज्ञ पण्डित क्रमशः विचार करते हैं—

१. मात्रा स्वर चक्र—"तत्काले मात्रिको ग्राह्यः"

नाम के १६ स्वरों में मान्य पाँच स्वरों (अ, इ, उ, ए, ओ) से प्रथम वर्ण में जो स्वर प्रयुक्त होता है उसके अनुसार मान्य स्वर चक्र के अनुरूप उसका मात्रा स्वर निकालते हैं। किसी भी नाम से उसका शुभाशुभ फलादेश के लिए प्रथमतः मात्रास्वर चक्र से उसके अनुसार ही उसके फलादेश के वाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत्यु स्वर निर्धारित किए जाते हैं। सुविधा के लिए मात्रा स्वर चक्र यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है—

अ	इ	उ	ए	ओ
क	कि	कु	के	को
च	चि	चु	चे	चो
ट	टि	टु	टे	टो
त	ति	तु	ते	तो
प	पि	पु	पे	पो
य	यि	यु	ये	यो
बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत्यु

इत्यादि

तत्काल फलादेश करने में इस मात्रा स्वर चक्र की उपयोगिता होती है। यदि कोई किसी भी समस्या पर तत्काल फलादेश जानना चाहता

है तो मात्रा स्पर से उसके नाम के अनुसार उसका प्रधान स्वर निश्चित करते हैं, और बाद के स्वरों को उसी क्रममें (वाल कुमार युवा वृद्ध मृत्यु में) रखते हैं। तत्काल घटी से समय का ज्ञान कर दिनमान के अनुसार चलने वाली घटी में उसकी स्वर दशा निकाल कर ज्योतिषी इस प्रकार फलादेश करता है।

१—जिस दिन या तिथि में जिस समय (प्रश्न कर्त्ता के प्रश्न के समय) यदि वाल स्वर की दशा चल रही है तो सफलता

२—यदि उस समय उसका (प्रश्नकर्त्ता) कुमार स्वर चल रहा है तो अधिक सफलता

३— ,, ,, ,, युवा ,, ,, पूर्ण सफलता

४— ,, ,, ,, वृद्ध ,, ,, प्राय: असफलता

५— ,, ,, ,, मृत्यु ,, ,, विफलता या अनिष्ट की सम्भावना होती है।

जैसे—मोरार जी नाम से मात्रा स्वर जानना हो तो मात्रा स्वर चक्र में म पर ओ की मात्रा होने से मात्रा स्वर ओ होता है। यही ओ स्वर मोरार जी का मात्रस्वर की दृष्टि से, बाल स्वर हुआ। बादका अ कुमार, इ युवा, उ वृद्ध, और ए मृत्यु स्वर हुआ। अब काल के समन्वय से यदि मोरारजी के प्रश्न काल में इ स्वर का उदय हो रहा है तो ओ मात्रास्वर से इ का उदय मोरार जी के सर्वसिद्धि का योग प्रकट करेगा। उन्हें तत्काल की समस्या पर निश्चित सफलता होगी, ऐसा स्वर शास्त्री फलादेश करेगा।

२. वर्ण स्वर चक्र :—"दिने वर्ण स्वरस्तथा'!

मात्रा स्वर के पश्चात् वर्ण स्वर चक्र का विचार किया जाता है। यहाँ पर फलित के आदेश के लिए किसी के नाम में आनेवाले आदि के वर्ण को

ग्रहण करते हैं। उस वर्ण के अनुसार उसकी स्वर दशा मान्य वर्ण स्वर चक्र के अनुसार होगी। वर्ण स्वर चक्र इस प्रकार है :—

अ १	इ २	उ ३	ए ४	ओ ५
वाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत्यु
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह

नाम के आदि में ङ ञ ण वर्ण नहीं देखे गए हैं। अतः आचार्य ने इस वर्ण स्वर चक्र में ङ ञ ण का उपयोग नहीं किया है। यदि किसी के नाम में ङ ञ ण वर्ण हों भी तो उनकी जगह ग ज ड वर्णों का प्रयोग नाम में करना चाहिए।

"न प्रोक्ता ङ ञ णा वर्णा नामादौ, सन्ति ते नहि
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथा क्रमम्"

एक दिन का किसी नाम के अनुसार फलादेश करने के लिए वर्ण स्वर चक्र अधिक उपादेय है। वर्ण स्वर चक्र, मान्य अन्य सभी स्वर चक्रों में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। किसी भी कार्य में शुभाशुभ का फलित निकालने के

लिए वर्णस्वर के अनुसार किसी नाम की निश्चित स्वरदशा का ज्ञान करते हैं। मूल पाँच स्वरों में जिस एक स्वर की दशा में नाम का पहला वर्ण आयेगा फिर उसके बाद वाले स्वरों को उसी पूर्वोक्त परम्परा के अनुसार उसकी अन्य स्वर संज्ञाएँ स्थिर की जायेगी। उसके अनुसार ही विशिष्ट व्यक्ति को उसी प्रकार का फलादेश करेंगे। जैसे मोरार जी नाम का वर्ण स्वर इ, इन्दिरा नाम का भी इ, त्रिगुण नाम का उ, है चक्र में स्पष्ट है। अतः मोरार जी का वर्ण स्वर इ से, इ वाल, उ कुमार, ए युवा, ओ वृद्ध और अ मृत्यु स्वर होता है। यही क्रम इन्दिरा नाम का भी है।

३. ग्रह स्वर "पक्षे ग्रह स्वरो ज्ञेयः"

इस स्वर चक्र के अनुसार किसी नाम के प्रथम अक्षर स्वर के अनुसार अवकहड़ा चक्र में यह देखते हैं कि निश्चित स्वर युक्त वर्ण किस नक्षत्र के किस चरण में पड़ता है। फिर उसकी राशि निर्धारित कर उसके अधिपतिग्रह का भी वही स्वर होने से उसे ग्रह स्वर कहा गया है। उसके अनुसार वालकुमारादि स्वर समझना चाहिए।

अ	इ	उ	ए	ओ
वाल	कुमा	युवा	वृद्ध	मृत्यु
मेष	मिथुन	धनु	तुला	मकर
सिंह	कन्या	मीन	वृष	कुम्भ
वृश्चिक	कर्क	वृहस्पति	शुक्र	शनि
मंगल	बुध			
सूर्य	चन्द्रमा			

जैसे अमरचन्द्र इस नाम से अबकहड़ा चक्र से यह नाम कृत्तिका नक्षत्र प्रथम चरण में पड़ता है, जिसकी मेष राशि हुई, और मंगल ग्रह अधिपति हुआ। ग्रह स्वर के अनुसार मेष राशि के अधिपति मंगल ग्रह का भी प्रथम स्वर अ, हुआ जो इस नाम का बालस्वर हुआ। इसलिए अमरचन्द्र नाम के बालस्यर अ से इ उ ए ओ स्वर, क्रमशः कुमार युवा वृद्ध और मृत्यु सिद्ध होते हैं।

४. जीवस्वर चक्र—

"मासे जीव स्वरस्तथा"

अ	इ	उ	ए	ओ
अ[१]	आ[२]	इ[३]	ई[४]	उ[५]
ऊ[६]	ऋ[७]	ॠ[८]	लृ[९]	लॄ[१०]
ए[११]	ऐ[१२]	ओ[१३]	औ[१४]	अं[१५] अः[१६]
क[१]	ख[२]	ग[३]	घ[४]	ङ[५]
च[१]	छ[२]	ज[३]	झ[४]	ञ[५]
ट[१]	ठ[२]	ड[३]	ढ[४]	ण[५]
त[१]	थ[२]	द[३]	ध[४]	न[५]
प[१]	फ[२]	ब[३]	भ[४]	म[५]
य[१]	र[२]	ल[३]	व[४]	४
श[१]	ष[३]	स[३]	ह[४]	४
बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत्यु

नामों के आदि स्वर एवं व्यंजनों के लिए ऊपर के जीव स्वर चक्र में निर्धारित अंक संख्या (स्वर+व्यंजन) में ५ से भाग देने पर शेष १ से अ स्वर, २ से इ, ३ से उ ४ से ए और ५ या शून्य से सर्वत्र ओ स्वर जानना चाहिए। किसी नाम के अनुसार एक मास पर्यन्त शुभाशुभ का विचार करने में इस जीव स्वर चक्र का उपयोग करते हैं। उदाहरणार्थ, इन्दिरा में इ की संख्या ३ न् की सं० ५, द् की संख्या ३ पुनः द में इ की संख्या ३ र में आ की संख्या २ इस प्रकार, ३+५+३+३+२+२=१८÷५ =शेष ३ मिलने से जीव स्वर=उ सिद्ध होता है।

इसी प्रकार दौलतराम नाम में द्=३ औ=१५ ल्=३ अ=१ त्=१ अ=१ र=२ आ=२ म् = ५, अ=१

इस प्रकार अभीष्ट नाम का जीव स्वर=३ + १४ + ३ + १ + १ + १ + + २ + ५ + १=३३÷५=३=जीव स्वर = उ

सिद्ध होता है। अर्थात् मास में इन्दिरा और दौलतराम के जीव स्वर उ से (उ को) बाल (ए को) कुमार (ओ को) युवा (अ को) वृद्ध तथा इ को मृत्यु स्वर कहना चाहिए। जिस मास का भविष्य विचार करना हो इस नाम के जीव स्वर उ से बाल, कुमार, युवा आदि समझने चाहिए।

५. राशि स्वर चक्र—

"ऋतौ राश्यंशको ग्राह्यः"

अ	इ	उ	ए	ओ
मं० ९	मि० ३	कन्या ९	वृश्चिक ६	म० ३
वृषभ ९	क० ९	तु० ९	ध० ९	कुं०९
मि० ६	सिं० ९	वृश्चिक ३	म० ६	मी० ९
अंश	अंश	अंश	अंश	अंश

निश्चित नाम के आदि वर्णानुसार अबकहड़ा चक्र में वह नाम जिस राशि के जितने अंश में हो उसी के अनुसार उस नाम का राशि स्वर स्थिर किया जाता है। ऋतुपर्यन्त काल में किसी नाम के अनुसार फलाफल का विचार करने में इस राशि स्वर चक्र का उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ—राजेश्वर नाम का आदि वर्ण चित्रा का तीसरा चरण होने से तुला राशि होती है। चित्रा नक्षत्र के २ चरण स्वाती के चार चरण और विषाखा के ३ चरण तुला राशि में होते हैं। इस प्रकार ९ चरण = ९ अंश की तुला राशि होती हैं जिसका राशिस्वर मान्य स्वर चक्रानुमार उ स्वर होता है। इसी प्रकार राधाकृष्णानन् का भी राशि स्वर उ सिद्ध होता है।

विशेष :—

सत्ताईस नक्षत्रों में १२ राशियाँ होती हैं, इसलिए एक राशि = $\frac{२७}{१२}$ नक्षत्र= $\frac{९}{४}$=२$\frac{१}{४}$ नक्षत्र=९ चरण स्वतः सिद्ध होते हैं। अथवा २७ × ४ = १०८ चरण= $\frac{१०८}{१२}$ = ९ चरणों की एक राशि सिद्ध होती है।

९. नक्षत्र स्वर चक्र—

"षण्मासे नक्षत्र सम्भवः"

अ	इ	उ	ए	ओ
रे	पु.	उ. फा.	अनु.	श्रवण
अश्विनी	पु.	हस्त.	ज्येष्ठा	धनिष्ठा
भ.	श्ले.	चित्रा	मूल	शतभिषा
कृ. रो.	म.	स्वाती	पू. षा.	पू. भा.
मृ. आ.	पू. फा.	विशाखा	उ. षा.	उ. भा.
बाल	कुमार	युवा	बृद्ध	मृत्यु

जिस नाम का आदि वर्ण अवकहड़ा चक्र में जिस नक्षत्र में पड़े, औ
वह नक्षत्र मान्य नक्षत्र स्वर चक्र में जिस स्वर में पड़े वही उसका नक्षत्र स्व
होता है। ६ महीने का शुभाशुभ फल विचार में इस नक्षत्र स्वर चक्र क
सहायता ली जाती है। उदाहरणार्थं—विभूतिनारायण नाम का आ
वर्ण वि अवकहड़ा चक्र में ओ, वा, वि, वू, रोहिणी नक्षत्र में पड़ने
नक्षत्र स्वरचक्र के अनुसार अभीष्ट नाम का राशिस्वर अ सिद्ध होता है।

७. पिण्ड स्वर चक्र

"अब्दे पिण्डस्वरो ज्ञेयः"

अ	इ	उ	ए	ओ
१	२	३	४	५=०

किसी नाम के सम्पूर्ण वर्णों तथा स्वरों के वर्णस्वर संख्या, तथा म
स्वर संख्या (वर्णस्वर चक्र और मात्रास्वर चक्र) के अनुसार निकाल
सम्पूर्ण वर्णस्वरों के योग और मात्रा स्वरों के योग को एक साथ जोड़
उसमें संख्या ५ से भाग देने पर शेष फल के अनुसार पिण्डस्वर का निर्धा
करते हैं। शेष १ होने पर अ स्वर, २ होने पर इ स्वर, ३ से उ स्वर, ४
ए स्वर और ५ या शून्य शेष होने पर ओ स्वर को पिण्ड स्वर के रू
ग्रहण करते हैं। संक्षेप में यह सूत्र भी ध्यान में रखना चा

पिण्ड स्वर = $\dfrac{\text{नाम के वर्ण स्वरों की संख्या + नाम के मात्रा स्वरों की सं}}{५}$

= शेष १ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए, ५ या शून्य = ओ स्वर होता है।

किसी नाम के अनुसार तत्कालीन वर्ष भर के शुभाशुभ बिचार के लिए पिण्ड स्वर चक्र की उपादेयता होती है।

जैसे— गौरीनाथ नाम के—ग् + औ + र् + ई + न् + आ + थ + अ, औ ई आ अ के मात्रा स्वर क्रमश. औ ५ + ई २ + आ १ + अ = १ अभीष्ट नाम में स्वर संख्या ९ हुई।

वर्ण स्वर = ग् = ३ र् = ४ न् = २ थ् = ४ = १३ हुई यह अभीष्ट नाम के वर्णों के वर्ण स्वर की संख्या हुई। इसलिए मात्रा स्वर = ९ + वर्ण स्वर = १३ = २२ = योग ÷ ५ = शेष २ पिण्ड स्वर = इ की सिद्धि हुई।

इसी प्रकार जाकिरहुसैन नाम में ज् + आ + क् + इ + र् + अ + ह् + उ् + स् + ऐ् + न् + अ

वर्णस्वर = ज् = २ + क् = १ + र् = ४ + ह =५ + स् =४ + न=२=१८

यह नाम के हल् वर्णों की वर्ण स्वरों की संख्याओं का योग हुआ। एवं नाम के अच् वर्णों के मात्रा स्वरों की संख्या का योग = आ = १ + इ = २ + अ = १ + उ = ३ + ऐ = ४ + अ = १ = १२ हुई। इस प्रकार पिण्ड

$$\text{स्वर} = \frac{\text{नाम के वर्ण स्वरों की संख्या} + \text{नाम के मात्रा स्वरों की संख्या}}{५}$$

$= \frac{१२ + १८}{५} = \frac{३०}{५} =$ शेष ० या ५ = ओ यह जाकिरहुसैन नाम का पिण्ड स्वर सिद्ध हुआ।

८. योगस्वर चक्र

'योगो द्वादश वार्षिके''

किसी भी नाम के पृथक्-पृथक् मात्रा स्वरचक्र, वर्णस्वरचक्र, ग्रह स्वरचक्र, जीवस्वरचक्र राशि स्वरचक्र, नक्षत्र स्वरचक्र, पिण्ड स्वर चक्र के अनुसार ज्ञात स्वरों की संख्या के योग में ५ से भाग देने पर शेषफल

के अनुसार योग स्वर चक्र के स्वर का निर्धारण करते हैं। शेष १ से अ स्वर, २ से इ स्वर, ३ से उ स्वर, ४ से ए स्वर और शून्य या ५ से ओ स्वर को योग स्वर के रूप में ग्रहण करते हैं।

किसी मनुष्य के नाम के अनुसार उस नाम के सम्पूर्ण प्राणियों, पदार्थों, वस्तुओं एवं चराचर प्रकृति की वस्तुओं के १२ वर्ष की अवधि तक का शुभाशुभ फलादेश करने के लिए योग स्वरचक्र का प्रयोग करते हैं। जिन नामों को पहले स्वर चक्रों को समझाने के लिए उदाहरण के रूप में ग्रहण किया गया है उन्हीं का यदि योग स्वर निकाले तो वह इस प्रकार से होगा। योगाभ्यास में योगस्वर अपेक्षित होता है।

नाम	१ मात्रा	२ वर्ण	३ ग्रह	४ जीव	५ राशि	६ नक्षत्र	७ पिण्ड	८ योग
मोरारजी देसाई	ओ ५	इ २	अ १	इ २	इ २	इ २	ए ४	$=\frac{१८}{८}=$३ उ यह योग स्वर हुआ
इन्दिरा	इ २	इ २	ए ४	उ ३	अ १	अ १	ए ४	$=\frac{१७}{८}=$२ इ ,, ,,
अमर चन्द्र जोशी	अ १	अ १	अ १	इ २	अ १	अ १	ओ ५	$=\frac{१२}{८}=$२ इ ,,

उदाहरण के लिए अन्य बहुत से नामों का विवेचन इन स्वर चक्रों के अनुसार स्वतंत्र रूप में आगे के अध्याय में किया जा रहा है।

इस प्रकार से इन आठ स्वरचक्रों का विवेचन हुआ है। फलादेश की ज्योतिष की स्वरशास्त्रीय पद्धति में इनकी क्या उपादेयता है। यह भी यत्र-तत्र स्वर चक्रों के साथ दिया गया है, फिर भी उनको संक्षिप्त रूप में इस प्रकार लिख सकते हैं। प्रथमतः इन स्वरचक्रों से फलादेश की पद्धति में स्वरचक्र तत्तत् आठ प्रकार के कालों (१२ वर्षों की अवधि, १ वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन घटी) से सम्बन्धित है। निश्चित काल की निश्चित अवधि में विशिष्ट स्वर चक्र को फलादेश के लिए, साधन के रूप में ग्रहण

करते हैं। जैसे तत्काल किसी प्रश्न का फलादेश करने में मात्रा स्वरचक्र को घटी स्वर चक्र से सम्बंधित करते हैं, जिससे किसी समय में २४ घण्टे के (अहोरात्र) शुभाशुभ का फलादेश करते हैं। किसी के नाम के अनुसार १ दिन में फलाफल का आदेश करने के लिए वर्ण स्वर चक्र को दिन स्वर चक्र से सम्बंधित कर फलादेश करते हैं। पक्ष पर्यन्त तक के शुभाशुभ का फलित निकालने के लिए ग्रह स्वरचक्र का पक्ष स्वर चक्र से सम्बन्ध स्थापित कर फलादेश किया जाता है। इसी प्रकार जीव स्वरचक्र से मास पर्यन्त, राशि स्वर चक्र से ऋतु पर्यन्त, नक्षत्र स्वर चक्र से अयन पर्यन्त समय का, पिण्ड स्वर चक्र से वर्ष भर का और योग स्वर चक्र से १२ वर्षों तक का फलाफल विचार किया जाता है।

इन स्वर चक्रों की उपादेयता न केवल आठ कालों में फलादेश में होती है अपितु जीवन की अनेकानेक समस्याओं के सुलझानें में ये स्वरचक्र अत्यधिक उपादेय सिद्ध होते हैं। अनेकानेक समस्याओं के उपस्थित होने पर ही सामान्य जन ज्योतिषी के पास आता है और इस कार्य में हमें सिद्धि होगी या असिद्धि होगी तत्काल पूछ बैठता है। आए दिन अनेकानेक परिस्थितियों के फलादेश में अनेक शुभकर्मों के शुभारम्भ में भी इन स्वर चक्रों के द्वारा शुभाशुभ का फलादेश बड़ी सुगमता से किया जाता है।

किसी कार्य के प्रारम्भ के पहले सिद्धि असिद्धि का विचार इन स्वरचक्रों द्वारा किया जाता है। निश्चित कार्यों शुभ अनुष्ठानों के लिए भी इन स्वर चक्रों से उनकी सफलता का विचार और बाधक तत्वों की शान्ति के लिये तंत्र मंत्रों का आदेश किया जाता है। संक्षेप में कुछ कार्यों और उसके लिए उपयोगी स्वरचक्रों का निर्देश स्वरशास्त्रीय मान्य ज्योतिष ग्रन्थों में इस प्रकार किया गया है। जैसे—

१. मन्त्र यन्त्र साधन में	मात्रा स्वर चक्र से विचार
२. किसी भी कार्य में	वर्ण स्वर चक्र ,, ,,
३. मारण, मोहन, स्तम्भन, उच्चाटन, विनोद विद्या विग्रह, घात आदि में	ग्रह स्वर चक्र ,, ,,

४. भोजन, पान, वस्त्र, अलंकार, भूषण विद्यारम्भ
विवाह में — जीव स्वर चक्र ,, ,,

५. उद्यापन, उपवन, बाग, देवस्थापन, राज्याभिषेक आदिक
शुभकार्यों के प्रारम्भ में — राशि स्वर चक्र ,, ,,

६. शान्तिक, पौष्टिक, यात्रा, प्रवेश, बीज वपन
स्त्री, विवाह, और सेवा, में — नक्षत्र स्वर चक्र ,, ,,

७. शत्रुच्छेद, सेनाध्यक्षता, मंत्री नियुक्ति, में — पिण्ड स्वर चक्र से

८, देह की अवस्थाओं का ज्ञान सम्भव और योग साधन में योग स्वरचक्र के अनुसार शुभाशुभ विचार किया जाता है।

इससे यह पूर्णतः सत्य एवं स्पष्ट प्रमाणित हो गया कि पूर्वोक्त वर्णित ये स्वरचक्र न केवल अनेक समय की अवधि के रूप में फलादेश करने में सहायक हैं, अपि तु इनके द्वारा समान्य जीवन की समस्याओं से लेकर सामाजिक. राजनैतिक तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का निराकरण एवं शुभाशुभ का फलादेश अत्यधिक सरलता सुगमता से किया जा सकता है। जिनके द्वारा फलित ज्योतिष अपने प्रत्यक्ष चमत्कार से जन सामान्य को परिचित एवं चकित ही नहीं अपितु लाभान्वित कर सकता है। इन स्वर चक्रों की यही व्यापक उपादेयता है।

काल विवेचन

जैसा कि पहले अनेक स्थलों पर निर्देश किया जा चुका है कि स्वर-शास्त्रीय ज्योतिष में फलादेश के लिए अवधि के अनुसार समय को आठ अंगागी भेदों में बाँटा गया है। जो इस प्रकार है—

१. द्वादश सम्वत्सर स्वर	१२ वर्ष की अवधि पर्यन्त
२. सम्वत्सर स्वर	१ वर्ष की अवधि पर्यन्त
३. अयन स्वर	६ मास की अवधि तक
४. ऋतु स्वर	२ मास १२ दिन की अवधि पर्यन्त इस शास्त्र में मुख्यतः ५ ऋतुएँ ग्राह्य हैं।

५. मास स्वर — (३० दिन) १ चान्द्र मास की अवधि तक
६. पक्ष स्वर — १५ दिन (तिथि) की अवधि तक
७. दिन स्वर — २४ घण्टा (अहोरात्र) की अवधि तक
८. घटी स्वर — ६० पला या १ घटी (२४ मिनिट) की अवधि तक

अब इन्हीं कालांशों के प्रत्येक भेद की सामान्य विवेचना प्रस्तुत की जाती है। जिससे ज्यौतिष की स्वरशास्त्रीय पद्धति से किसी काल में मान्य मूल स्वरों में से प्रत्येक का भोग काल कितना होगा ? इसकी भी उसी प्रसंग में विवेचना करेंगे, साथ ही वर्तमान अधिसम्बत्सर में कौन सा स्वर चलेगा तथा १२ सम्बत्सर का कौन सा स्वर होगा इन सभी बातों की विवेचना एक एक करके आगे के पृष्ठों में की जा रही है।

द्वादश वार्षिक सम्वत्सर

ज्योतिष-शास्त्र के सिद्धान्त ग्रन्थों में जैसी विवेचना मिलती है उनके अनुसार बृहस्पति ग्रह की कक्षा मंगल ग्रह की कक्षा से ऊपर तथा शनि ग्रह की कक्षा से नीचे है। ग्रहसिद्धान्त का मत है कि जितने समय में पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा =(३६०^0) कर लेती है, उसकी कक्षा से १२ गुनी गुरु की कक्षा होने से बृहस्पति ग्रह मध्यम मान से सूर्य की परिक्रमा का उतने समय में $\frac{१}{१२}$ परिधि ही को पूरा कर पाता है। इसलिए $\frac{१}{१२}$ परिक्रमा में १ वष तो १ परिक्रमा=१२ राशि में बृहस्पति के १२ वर्ष लगेंगे। १२ वर्ष में = ३६०^0, १ वर्ष में ३०^0। इसलिए एक दिन में $\frac{३०\times६०}{३६०}$ = ५' कला गति मध्यमान से होती है। बृहस्पति की एक वर्ष की मध्यमान की गति में १ अधिसम्वत्सर, १२ वर्ष = १ युग, तो ६० वर्ष में ५ युग होते हैं। ऐसा सिद्धान्त संहिता ग्रंथों में प्रतिपादित किया गया है। इन ६० सम्वत्सरों में प्रत्येक का नाम ज्योतिष ग्रंथों में मिलता है।

शक वर्ष के आदि में प्रभव सम्वत्सर था, अतः इस क्रम से ६० सम्वत्सरों के नाम इस प्रकार हैं।

[१]प्रभव, [२]विभव, [३]शुक्ल, [४]प्रमोद, [५]प्रजापति, [६]अङ्गिरा, [७]श्रीमुख, [८]भाव, [९]युवो, [१०]धातो, [११]ईश्वर, [१२]बहुधान्य, [१३]प्रमाथी, [१४]विक्रम [१५]वृषः, [१६]चित्रभानु, [१७]सुमानु, [१८]तारण, [१९]पार्थिव, [२०]व्यय, [२१]सर्वं-जित, [२२]सर्वंधारी, [२३]विरोधि, [२४]विकृत, [२५]खर, [२६]नन्दन, [२७]विजय, [२८]जय, [२९]मन्मथ, [३०]दुर्मुख, [३१]हेमलम्ब, [३२]विलम्ब, [३३]विकारी, [३४]शार्वरी, [३५]प्लव, [३६]शुभकृत्, [३७]शोभकृत, [३८]क्रोधी, [३९]विश्वावसु, [४०]पराभव, [४१]प्लवङ्ग, [४२]कीलक, [४३]सौम्य, [४४]साधारण, [४५]विरोधकृत, [४६]परिधावी, [४७]प्रमादी, [४८]आनन्द, [४९]राक्षस, [५०]नल, [५१]पिङ्गल, [५२]कालयुक्त, [५३]सिद्धार्थी, [५४]रौद्र, [५५]दुर्मति, [५६]दुन्दुभि, [५७]रुधिरोद्गारी, [५८]रक्ताक्ष, [५९]क्रोधन, [६०]क्षय।

ऐसी मान्यता है कि प्रथम सम्वत्सर ही सृष्टि का प्रथम सम्वत्सर रहा होगा और ये ही साठ सम्वत्सर क्रमशः आते रहेंगे। किन्तु १२ वर्षों की अवधि-तक मूल पाँच स्वरों में क्रमशः एक एक स्वर का भोग काल होगा। ६० सम्वत्सरों में इन स्वरों की भोग काल के अनुसार एक आवृत्ति हो जायगी। प्रथम सम्वत्सर से वर्तमान सम्वत्सर तक किस स्वर की दशा होगी। यह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है—

१. प्रभव सम्वत्सर से लेकर बहुधान्य १२ सम्वत्सर तक अ स्वर की दशा
२. प्रमाथी १३ से—विकृत २४ तक इ स्वर की दशा
३. खर २५ से शुभकृत् ३६ तक उ स्वर की दशा
४. शोभकृत् ३७ से आनन्द ४८ तक ए स्वर की दशा
५. राक्षस ४९ से क्षय ६० तक (प्रायः सन् ५९-६० से) सन् ७१-७२ तक) ओ स्वर की द्वादश वार्षिक दशा चलती है।

स्वरों की अन्तर्दशा की विवेचना करने से यह स्पष्ट है कि अभीष्ट नाम मोरार जी का सन् १९५९—६०, ६०—६१ अभ्युदय के रूप में। युवा में युवा स्वर।

सन् १९६१—६२ और ६२—६३	यह सम्मान प्रतिष्ठा आदि की स्थिति में डवाँडोल। या दोलायमान वृत्ति।
सन् १९६४—६५ से ६६—६७	स्थिति में सुधार।
सन् ६६—६७ के वाद ७१—'७२ तक	पूर्ण सम्मान, प्रतिष्ठा की स्थिति के रूप में। युवा स्वर के उदय से होगी।

इस तालिका के अनुसार वर्तमान दुर्मति सम्वत्सर (जो कि कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी बुधवार वि० सं० २०२४ (शक १८८९) तदनुसार तारीख १६ नवम्बर ६७ से वि० सं० २०२५ (शक १८९०) मार्गशीर्ष कृष्ण ५ पंचमी रविवार तारीख १२ नवम्बर ६८ तक चलेगा) में ओ स्वर की दशा चल रही है जो राक्षस सम्वत्सर से प्रारम्भ होकर क्षय सम्वत्सर तक चलेगी।

१२ वर्षों की अवधि में प्रत्येक स्वर की अन्तर दशा उस काल का ११ वाँ भाग होता है, जिसे क्रमशः प्रत्येक स्वर का भोगकाल मानते है। इस प्रकार पाँच मूल स्वरों में से प्रत्येक का भोगकाल $= \frac{१२}{११}$ = १ वर्ष १ महीना २ दिन ४३ घटी ३८$\frac{२}{११}$ पला या (१७$\frac{५}{११}$ घण्टे) होगा। इस भोगकाल के अनुसार इन स्वरों में प्रत्येक की एक दो आवृत्ति और किसी किसी स्वर की तीन आवृत्ति तक हो जाती है। स्वरों की इस अन्तर्दशा से ही यर्थाथ फलादेश में पूर्णतः सहायता मिलती है। स्वरों की अन्तर दशा निकालने के लिए इस नियम को सदैव ग्रहण करना चाहिए प्रत्येक स्वर का भोग काल

$= \frac{\text{अवधि या कालाश}}{११}$ के तुल्य होता है।

ग्रहगणित में यह एक महत्त्व का विषय है, अतः इस सम्बन्ध में यहाँ पर ग्रहगणित सिद्धान्तों से बृहस्पति की १२ वर्ष एवं प्रत्येक वर्ष की गुरु की मध्यम संक्रान्तियों का गणित उदाहरण के लिए आवश्यक है जो निम्न भाँति है।

७१४४०४१४७५५ यह दिनगण संख्या सृष्टि के आदिम दिन (ग्रहगणना का) से १३ अप्रैल १९६७, चैत्र शुक्ल तृतीया गुरुवार को आती है।

अनेक मतों के भारतीय पञ्चाङ्गों ने दुर्मति नामक २६ वें संवत्सर के प्रारम्भ का समय—

(१) किसी पञ्चाङ्ग ने ता० १५–११–६७ की रात्रि (मध्य रात्रि के समीप) से १०–११–६८ तक दुर्मति का वर्ष मानकर ११–११–६८ से दुन्दुभि का प्रारम्भ वर्ष लिखा है। (२) तथा दूसरे ने ता० १५ दिसम्बर १९६७ से ११ दिसम्बर १९६८ तक दुर्मति नाम का वर्ष मानकर ता० ११ दिसम्बर १९६८ के दिन के प्रायः ९ वजे सुबह से दुन्दुभि का वर्ष माना है।

(३) किसी ने प्रायः १७ दिसम्बर १९६७ से ही दुर्मति नामक संम्वत्सर का प्रारम्भ माना है।

(४) किसी में प्रायः नवम्बर १९६७ से दुर्मति नामक संम्वत्सर का प्रारम्भ लिखा है।

(५) किसी पञ्चाङ्ग ने सम्वत्सर का शुभाशुभ फल मात्र लिखकर उसके प्रारम्भ और अन्तिम समय की कोई सूचना नहीं सी दी है।

(६) कुछों में (दृश्य पञ्चाङ्गों में) १६ नवम्बर १९६७ के भारतीय स्टै. टा. ३।४ वजे दुर्मति सम्वत्सर के वर्ष का प्रारम्भ माना है। यह समस्या एक ही नगर के अनेकों पञ्चाङ्गों की है।

अवश्य पञ्चाङ्गों में एकता चाहिए

पञ्चाङ्गों में तिथि, नक्षत्र योग करण, पर्व व्रत, उपवास, एकादशी, श्राद्ध, जन्माष्टमी, विजयादशमी, होलिकादहन जैसे मुख्य से मुख्य पर्वों के गणितों के मानों में पर्याप्त अन्तर रहता है। फिर छोटी बातों की तो पूछ ही क्या है। एक नगर के सूर्योदय, व सूर्यास्त में अन्तर के साथ-साथ लग्नों के प्रारम्भ व अन्त के समय में भी अन्तर रहता है। उदाहरण के लिए आगे के १३ अप्रेल १९६८ के कम से कम अन्तर के—

किसी पंञ्चाङ्ग में मेष राशि का प्रवेश प्रायः ५।४४ से ७।२२ तक
तो किसी पंञ्चाङ्ग में मेष राशि का प्रवेश प्रायः ५।४४ से ७।२१ तक
,, पञ्चाङ्ग में पूर्णिमा शुक्रवार दिन के १० बज के ५० मि० तक है।

,, पञ्चाङ्ग में पूर्णिमा शुक्रवार दिन के १० बज के २५ मि० तक है।
,, पञ्चाङ्ग में चित्रा शुक्रवार रात्रि १० बज के १३ मि० तक है।
,, पञ्चाङ्ग में चित्रा शुक्रवार रात्रि ९ बज के ४५ मि० तक है।
,, पञ्चाङ्ग में संक्रान्ति शुक्रवार दिन के ११।३७ में लग रही है।
,, पञ्चाङ्ग में संक्राति शुक्रवार दिन के १०।४७ में लग रही है।
,, पञ्चाङ्ग में चन्द्रमा का तुला राशि पर दिन १०।५४ बजे से प्रवेश है।
,, पञ्चाङ्ग में चन्द्रमा का तुला राशि पर दिन १०।२७ बज से प्रवेश है।

विवाह जनेऊ चौल आदि मुहूर्त्तों में भी सर्वत्र बड़ा वैषम्य है।

ग्रहों के स्पष्ट राशि अंशादिकों नक्षत्र प्रवेश आदिकों अनेक बिषयों के अन्तरों का चित्रण अनावश्यक है ?

अस्तु ऐसा क्यों ? हाजिर जबाब यह है कि किसी का केतकी से, किसी का सूर्य-सिद्धान्त से, किसी का ग्रहलाघव से पञ्चाङ्ग बन रहा है। सिद्धान्तों व करणों में मतभेद है इसलिए अन्तर पड़ रहे हैं इत्यादि।

ग्रहणों के स्पर्श, मध्य, मोक्ष तथा ग्रहों के युतिभेद युद्ध के लिए भारतीय पञ्चाङ्ग खुले आम राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग (भारत सरकार) की, तथा पश्चिम के पञ्चाङ्ग की नकल कर रहे हैं।

[1]पञ्चाङ्ग निर्माण फलित की एकता का होना चाहिए ज्योतिष के ग्रह गणित सिद्धान्त का सदुपयोग नहीं हो रहा है। सारिणियाँ तो तत्काल किसी ग्रह गणित की शीघ्र आवश्यकता के समय के उपयोग की होती हैं। कुछ ही वर्षों में उनके सूक्ष्म अवयव त्याग से उनमें बड़ा अन्तर पड़ेगा। अतः सदा त्रिकाल में, सर्वशुद्ध, सर्वतथ्य, सर्वमान्य, स्वतः प्रामाण्य के भारतीय ग्रहगोल, खगोल के सिद्धान्त धर्म, समाज, व भविष्यफल आदि के सन्तुलन में सदा से प्रमाणित रहे हैं, आज भी हैं तथा सदा रहेगे।

भारत में सहस्रों नहीं तो सैकड़ों तो ज्योतिर्विद्या में प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति आज

---

१. ["पञ्चाङ्ग गणित वैषम्य" शीर्षक नाम का एक बृहत् लेख आग्रहायण में देखिए, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, से मिलेंगी।]

भी हैं। आये दिन फलित बोलने से ज्यौतिष समाज में इनका बड़ा नाम सम्मान भी है। उन्हें अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, त्रिकोणगणित, चापीयत्रिकोण गणित, ग्रहगोल खगोल, ग्रह सिद्धान्त ग्रन्थ तथा ग्रह वेध के अनेक सिद्धान्तों का निर्माण, गणित, आदि का भी ज्ञान आवश्यक है ? ग्रह गणित ज्ञान ही पञ्चाङ्ग निर्माण का आधार है। भारतीय ग्रहगणित सिद्धान्त का क्या कौशल कहें, वह आज भी अपने स्तर पर नियत सही है। खेद है इस दिशा की प्रगति में सहयोग नहीं मिलता।

आचार्य वराह के पश्चात् पाँचवीं शती से फलित ज्यौतिष आगे नहीं गया है, उसके दुरुपयोग से वह भले ही पिछड़ा है।

जहाँ "चतुर्लक्षन्तु ज्यौतिषम्" कहा गया है, वहाँ आज बहुत ही कम ग्रन्थ उपलब्ध भी हो रहे हैं।

फलित-गणित ज्यौतिष के परस्पर के समन्वय के लिए, उदाहरण स्वरूप में सर्वमान्य आर्ष ग्रहगणित सिद्धान्त से फलादेश की ग्रह गणित की यह एक पद्धति पाठकों के उपयोग के लिए यहाँ दी जा रही है।

प्रकृत में द्वादश सम्वत्सर और सम्वत्सर से प्रत्येक नर-नारी के नामों का फलादेश करना है, अतः संवत्सर का प्रारम्भ और अन्त समय का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके सटीक ज्ञान के लिए भारतीय ग्रहगणित सिद्धान्तों की शरण ली जा रही है।

ता० १६ नवम्बर १९६७ का ग्रहगणित पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। जो १२ नवम्बर ६८ तक चलेगा।

बृहस्पति ग्रह जिस समय एक राशि से दूसरी राशि में जा रहा है, उसी समय ६० संवत्सरों में किसी एक संवत्सर का प्रवेश होता है। (ग्रह सिद्धान्त गणित देखिए।)

सृष्टि के आदि से विजय सम्वत्सर का प्रारम्भ कर—(१) विजय (३) मन्मथ (४)··········६० में समाप्ति होती है पुनः दूसरा आवर्त होगा। एक तीसरा इसी प्रकार··· एवं···अनन्त आवृत्तियाँ होंगी।

वृहस्पति ग्रह की कक्षा, सूर्य कक्षा से ऊपर शनि कक्षा के नीचे है।

अपनी कक्षा के भ्रमण से १२ वें वर्ष में वृहस्पति एक वृत्त के ३६०° पूरा करता है। अतः एक वर्ष में वह $\frac{३६०}{१२}$=३० अंश या १ एक राशि जावेगा जैसा कहा जा चुका है कि—इस प्रकार ५ कला वृहस्पति की दैनन्दिनी मध्यमा गति होती है। प्रत्येक गतिमान ग्रहपिण्ड की कक्षा के उच्च-नीच आदि धरातलों में भ्रमण करने से प्रति दिन नहीं अपिच प्रतिक्षण ग्रह कक्षा में ग्रहका विलक्षण वेग रहता है। इस विलक्षण वेग के गणित के विचार हमारे ग्रह सिद्धन्तों में समृद्ध हैं। यह विद्या वेदकाल से आज तक हमें मिल रही है। आकर्षण शक्ति प्रभृति जैसे—"महत्त्वान्मण्डस्यार्कः" चन्द्र लघुपिण्ड बहुत आकृष्ट होता है, "आकृष्ट शक्तिश्च मही तया यत्।" पृथ्वी में आकर्षणशक्ति है, वह गुरुपदार्थ को अपनी ओर खींचती है, चल चापगतिः चापकोटिजीवया गुणिता हृतास्यात्त्रिजीवया जीवा स्यात्तात्कालिकी गतिः"

$\frac{\text{चापगति} \times \text{चापकोटिज्या}}{\text{त्रिज्या}}$==चाप की तात्कालिक गति इत्यादि की यहाँ बहुत उपलब्धि हो चुकी है।

सिद्धान्त ग्रन्थों में सुप्रसिद्ध सूर्य सिद्धान्त का गणित आर्ष गणित है, इसके ही गणित की धर्मशास्त्र में मान्यता भी है। धर्मशास्त्र ने जिस ग्रह गणित को मान्यता दी है उसी ग्रहगणित की मान्यता फलित में भी है। ज्यौतिष तथा धर्मशास्त्र दोनों में परस्पर गहन एकता है। इन दोनों की मूलभित्ति तो ग्रहगणित ज्यौतिष ही है।

समग्र फलित ज्यौतिष के अनेक प्रकार की फलादेश की शैलियों में 'लग्न एवं ग्रहों के वास्तविक स्थान (खगोल में) को ज्ञात करते हुए सौरमण्डल जिसके प्रति प्रकाश किरणों की स्थानभेद के प्रत्यक्षीकरण की जो विलक्षण गति है, उस गति का इस चराचर जगत पर प्रतिक्षण क्या प्रभाव पड़ रहा है" यह सब ज्ञान खगोल ग्रहगोल के गणित सिद्धान्तों से प्राप्त होता है। यह ग्रहखगोलादि गणित ज्ञान (अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, त्रिकोण गणित, तात्कालिक वेगों के ज्ञान के गणित) आदि से ही जाना जा सकता है। अतः फलादेश करने वाले दैवज्ञवर्य्यं में

ग्रहगणित, ग्रहगोल खगोल ज्ञान का होना नितान्त आवश्यक है। इस ज्ञा के पश्चात् इसी आधार से ही फलितशास्त्र का जन्म होता है। सौर मण्ड की प्रतिक्षण की गमन शीलता से प्रतिक्षण फलित ज्योतिष का भी रूपान्त होते आ रहा है।

अतः इस पर गम्भीर अनुसन्धान एवं शोध का कार्य जो शताब्दियों अवरुद्ध है, उसे आगे ले जाने के उपायों की गवेषणा करना यह राष्ट्र मुख्य कर्तव्य हो गया है। राष्ट्र के महान से महान सूत्रधारों से भी इ समय बड़ा प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है। इसी से सुन्दरतम ज्योतिष विज्ञान फलित शाखा पर प्रकाश लाने की चेष्टाएँ आये दिन हो रही हैं। अस्तु

युगारम्भ से १६ नवम्बर १९६७ तक की दिन संख्या का विशा गणित (जो यहाँ पर देना आवश्यक है) जिसे अहर्गण या दिन वृ या दिनसमूह इत्यादि संज्ञाऐं सिद्धान्त ग्रन्थकारों ने दी हैं। वह उस आँकड़े ७१४४०४१४७९७२ के तुल्य होते हैं। इन आंकड़ों में वैज्ञानिक गह रहस्य है।

ग्रहगणित का एक प्रधान सिद्धान्त है, कि ग्रहों की सृष्टि के आ से सृष्टि के अन्त या युग के आदि दिन से युग के अन्त तक की दि संख्याओं एवं ग्रहों के भगणों का ज्ञान करना, जिसे ब्र दिनारम्भ से इष्ट समय तक के दिन भी कह सकते हैं। अतः सृष्टि युग के आदि दिन से आज तक के अहर्गण दिन संख्याओं को ज्ञात त्रैराशिक (अनुपात) से युग के समस्त दिनो में युग के अभीष्ट ग्रह परिक्रमाएँ मिलती है; तो अभीष्ट अहर्गण में अभीष्ट अहर्गण सम्बन्धी अभी ग्रह की भगण + राशि + अंश + कला + विकला = आदि अवश्य ज्ञात होंगी दृश्य गणित (वेध आदि) यहाँ भी इष्ट है पर खेद है की दृश्य गणित का इ

अहर्गण-गणित सिद्धान्त शिरोमणि की भूमिका पृष्ठ २६ ले० केदारद जोशी देखिए। सृष्टि से १३ अप्रैल १९६७ तक के दिन संख्या निकाली गई है

प्रकार का कोई गणित भण्डार नहीं है। सिद्धान्त और दृश्य के मेल से दृश्य गणित बना है। इसी सिद्धान्त से युग के बृहस्पति के भगण = ३६४२० × अहर्गण = ७१४४०४१४७९६२ युग की दिन संख्या = १५७७९१७८२८

इस गुणन भजन से बृहस्पति के अतीत भगण के साथ मध्यम राश्यादिक बृहस्पति होता है।

युग बृहस्पति के भगण = अ। अहर्गण = क। युगकुदिनसंख्या = ल।

$\therefore \frac{\text{अ} \times \text{क}}{\text{ल}}$ = बृहस्पति। युग से १६ नवम्बर ६७ तक की परिक्रमाएँ

$$= \frac{३६४२० \times ७१४४०४१४७९६२}{१५७७९१७८२८}$$

७१४४०४१४७६६२
३६४२०
———————
१४२८८०८२९५९२४०
१४२८८०८२९५९२४०
२८५७६१६५९१८४८०
४२८६४२४८८७७७२०
२१४३२१२४४३८८६०
———————
२६०२००२७८७७०७१९६४० + १० × ३६४२२० =
३६४२२००
———————
२६०२००२७८७७४३६१८४०

परीक्षण गणित से गुणनफल शुद्ध है। अब युग के कुदिनों से भाग देना है।

= २६०२००२७८७७४३६ १८ ४० ÷ युग के दिन। इस प्रकार १६

नवम्बर सन् १९६७ तक की दिन संख्याओं से मध्यम गुरु का ज्ञान किया जा रहा है।

```
१५७७९१७८२८) २६०२००२७८७७४३६१८४० (१६४९०१०३२,
             १५७७९१७८२८
             ----------------
             १०२४०८४९५९७
              ९४६७५०६९६८
             ----------------
             ००७७३३४२६२९४
               ६३११६७१३१४
             ----------------
               १४२१७५४९८२३
               १४२०१२६०४५२
             ----------------
               ०००१६२८९३७१६१
                 १५७७९१७८२८
             ----------------
                 ००५१०१९३३३८४
                   ४७३३७५३४८४
             ----------------
                 ०००३६८१७९९०००
                    ३१५५८३५६५६
             ----------------
                 ०००५२५९६३३४४
```

इतनी संख्या के बृहस्पति के ये (आवर्त) भगण १६ नवम्बर १९६७ तक होते हैं।

भगण शेष—५२५९६३३३४४ को १२ से गुणा कर १५७७९१७८२८ से भाग देने से लब्ध बृहस्पति की राशियाँ होती हैं।

```
              ५२५९६३३४४
                      १२
              ------------
१५७७९१७८२८)६३११५६०१२८(३ राशियाँ
             ४७३३७५३४८४
             ------------
             १५७७८०६६४४
```

× ३० राशि शेष को ३० से गुणाने से अंश होते हैं।

```
१५७७९१७८२८)४७३३४१९९३२०(२९
            ३१५५८३५६५६
            -----------
            १५७७५८४२७६०
            १४२०१२६०४५२
            -----------
             १५७४५८२३०८
```

× ६०, अंश शेष को ६० से गुणने से कला बनानी चाहिए।

```
१५७७९१७८२८)१९४४७४९३८४८०(५९ कला
            ७८८९५८९१४०
            -----------
            १५५७९०४७०८०
            १४२०१२६०४५२
            -----------
             १३७७७८६६२८
```

× ६० कला शेष को ६० से गुणने से विकला होती हैं।

```
१५७७९१७८२८)८२६६७१९७६८०(५२
            ७८८९५८५१४०
            -----------
            ०३७२१३०६२८०
             ३१५५८३५६५६
            -----------
              ६१५४७०६२४
```

८ विकला कम सिंह संक्रान्ति में है, इसलिये यदि ५ × ६० = ३०० विकला जाने में वृहस्पति को २४ घण्टा लगता है। ८ विफला, अर्थात् सिंह राशि में जाने में ८″ विकला बाकी है। वृहस्पति ग्रह की एक दिन की मध्यमा गति ५ कला के तुल्य है। अतः त्रैराशिक से (~~६०~~ × ८)/~~३००~~ (५) = ८/५ = १ घटी ३६ पल या ३९ मिनेट और आगे जाकर वृहस्पति ग्रह की सिंह की

संक्रान्ति होगी। १६-११-६७ रात्रि १२·३८ बजे के आस पास से (१६ नवम्बर मध्यरात्रि सन् ६७ से) प्रायः १२ नवम्बर सन् ६८ तक विजयादि ५५ वें संवत्सर का समय रहेगा। यह ५५ वाँ कैसे है ?

पूर्व पृष्ठीय गणित में गुरु के भगण १६४६०१०३२ आए हैं। सर्वमान्य सूर्य सिद्धान्त (गुरु भगण × १२ + वर्तमान राशि) ÷ ६० = शेष, वर्तमान संवत्सर

"द्वादशघ्ना गुरो र्याता भगणा: वर्तमानकै:"
राशिभिः सहिता: शुद्धा: षष्ट्या स्युर्विजयादय:"

अनुसार

```
              १६४६०१०३२
                     १२
६०) १९७५५१२३८४(३२९२५०२०६
    १८०       +३
    १७५        ७
    १२०
     ५५५
     ५४०
      ४५१
      ४५०
        १२३
        १२०
          ३८४
          ३६०
           २४
          +३
गत संवत्सर  २७ + १ = २८ वर्तमान।
```

एक वर्ष के आदि में प्रभव नाम का संवत्सर था, इसलिए यह तालिका प्रभव से प्रारम्भ कर दी गई है। वर्तमान १८८९ शक में $\frac{१८८९}{६०}$ = ३१ आवृतियाँ षष्टि (६०) संवत्सरों की बीत जाने के पश्चात् से शेष २९ वें संवत्सर का

प्रारम्भ हो रहा है। जो विजय (तालिका में २८) को १ मानने से २९-वाँ दुर्मति स्वतः सिद्ध है।

फलादेश के लिए संवत्सर के प्रारम्भ से अन्त तक का समय अत्यन्त अपेक्षित है।

अर्थात ५५ वें सम्बतसर में ५ पाँच स्वरों अ इ उ ए ओ, के क्रम से ५५/५ = ११ आवृति पूर्ण होने से ११ वीं आवृत्ति का अन्तिम ओ स्वर का प्रचलन ता० १६-११-६७ से प्रायः १२-११-६८ तक रहेगा। अतः स्वरशास्त्र पद्धति का फलादेश साधु व सभीचीन होगा।

"वृहस्पते र्मध्यम राशि भोगात्संवत्सरं सांहितिका वदन्ति" आचार्य वराह प्रभृति प्रसिद्ध संहिताकार, सम्बत्सर फलादेश के लिए मध्यम राशि के वृहस्पति ग्रह की संक्रान्ति को ही ग्रहण करते हैं, अतः उस समय काशी में ही स्पष्ट मान के वृहस्पति की स्थिति ४।१२, किसी में ४।१३ किसी में ४।१४ किसी में ४।१० इत्यादि अनेक सी लिखी हैं ? यद्यपि यहाँ संहिता के स्वर ज्योतिष के समन्यय में केवल मध्यम गुरु संक्रान्ति ही अपेक्षित है, अतः पंचांगों के उक्त अनेक गणितों से यहाँ प्रयोजन नहीं है। यदि इस मध्यम संक्रमण कालीन मध्यम गुरु का स्पष्ट गणित उक्त भाँति किया जायगा तो वह प्रायः ४।१०....तक आ सकेगा।

ध्यान देने की बात और शङ्का

काल की अवधि नहीं है, पृथिवी विपुल है, तथा समय-समय पर बुद्धि जीवी जन्म लेते हैं। उन्हें उक्त गणित में एक सहज शङ्का हो सकती है कि हर (भाजक) की जगह युगादि से युगान्त तक की दिन संख्या, तथा युगान्त तक ग्रह भगणों की संख्या जैसे ली गई है तद्वत् युगादि से १६ नवम्बर ६७ तक की भी दिन संख्या गुणांक स्थान में लेनी चाहिए थी, यहाँ सृष्टि के आदि दिन से १६ नवम्बर ६७ तक की इतनी ७१४४०४१४७९६२ संख्या गुणक में युगाधि सम्बन्ध से भिन्न क्यों ली गई ?

वास्तव में एक महायुग के ग्रहों के भगण चान्द्र-सावन-सौरदिन-मास

वर्ष आदि संख्याओं को पृथक्-पृथक् १००० से गुणा करने पर वे सभी ग्र
भगण संख्यायें एक कल्प = १ ब्रह्मदिन में हो जाती हैं तो उक्त युगादि भगण
दिनों, आदि को १००० से गुणा कर ३६४२२० × १०००=३६४२२०००० कल्प
ग्रह गुरु भगण, १५७७९१७८२८ × १०००=१५७७९१७८१८००० कल्प साव

इन दोनों का तुल्य सम्बन्ध होता है। जैसे अव्यक्त गणित से $\frac{२अ \times ल}{२क} = \frac{२अल}{२क}$

$= \frac{अ \times ल}{क}$ की तरह या उक्त गणित से जैसे $\frac{१५ \times ७}{२५} = \frac{५ \times ३ \times ७}{५ \times ५} = \frac{३ \times ७}{५}$
की तरह स्पष्ट है। गणित में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।

लाघव से गणित हल के लिए, युग गुरु-भगण युगादि से युगान्त की दि
संख्या तथा युगादि से १६ नवम्बर ६७ तक की दिन संख्या लेकर भी ग्र
गणित कर सकते हैं। वह जैसे युग के आरम्भ से लेकर १६ नवम्बर तक क
दिन संख्या १८५१३४५ आती है।

```
                 १८५१३४५
                  ३६४२२०
                ३७०२६९००
               ३७०२६९००
              ७४०५३८०
            १११०८०७०
            ५५५४०३५
१५७७९१७८२८)६७४२९६८७५९००(४२७
            ६३११६७१३१२
            ४३१२९७४४७०
            ३१५५८३५६५६
            ११५७१३८८१४०
            ११०४५४२४७९६
              ५२५९६२३४४
```

५२५९६२३४४
× १२

६३११५६०१२८ ३
४७३३७५३४८४

१५७७८०६६४४
× ३०

४७३३४१९९३२०(२९
३१५५८३५६५६

१५७७५८४२७६०
१४२०१२६०४५२

१५७४५८२३०८
१५७४५८२३०८
× ६०

१५७७९१७८२८)९४४७४९३८४८०(५९
७८८९५८९१४०

१५५७९०४७०८०
१४२०१२६०४५२

१३७७७८६६२८
× ६०

८२६६७१९७६८०(५२
७८८९५८९१४०

३७७१३०६२८०
३१५५८३५६५६

६१५४७०६२४ सृष्टि और युग दोंनों से तुल्य शेष उपपन्न होता है।

३।२६।५६।५२
+ ८
= ४।०।०।०

$\frac{६० \times ८}{३००} = \frac{८}{५} =$ १घटी ३६ पल

सिंह संक्रम के लिए अभी १ घटी ३६ पल प्रायः ३८'' मिनट बाकी हैं।

इसलिये १६ नवम्बर १९६७ की मध्य रात्रि से ३८ मिनिट या १।३६ घटी जोड़ देने से = रेलवे १७ नवम्बर या १२½ बजे रात्रि के आस-पास से १२ नवम्बर सन् १९६८ तक दुर्मति नामक संवत्सर चलेगा, जिसमें ओ स्वर का प्रचलन होता है।

पाठकों को आश्चर्य होगा कि भारतीय ग्रह-गणित-सिद्धान्त के सृष्टि के आदि दिन रविवार से १६ नवम्बर १९६७ तक की ७१४४०४१४७६७२ दिन संख्या तथा कलियुग कि आदि दिन शुक्रवार से १६ नवम्बर सन् ६७ तक की १८५१३४५ में सात से भाग देने से १६ नवम्बर को बुधवार ठीक आ रहा है।

दोनों में सात का भाग देने से शेष ४ रवि से बुध, शेष ६ शुक्र से बुध कितना सटीक ठीक आ रहा है। भारतीय ग्रह गोल खगोल विज्ञान का यह एक छोटा सा उदाहरण है।

किसी भी पंचाग की प्रामाणिकता में सन्देह होने से सृष्टि आदि से इसके (संवत्सर) गणित के साथ स्वर-शास्त्र की एक नवीन पद्धति जनता के सामने रखी है, अतः ग्रह-गणित-प्रपंच में पड़ने से समय व श्रम का अधिक उपयोग उचित नहीं होगा। स्वरशास्त्र में १२ संवत्सर के स्वर का बड़ा विचार है जो सटीक घटता है, अतः इसका गणित आवश्यक था। इस प्रसंग को समाप्त करके आगे चलना उचित होगा।

एक सौर वर्ष का सायन मान जो ३६५ दिन ६ घण्टा ९ मिनट···आदि होता है। बृहस्पति के अपनी मध्यमागति से एक राशि या ३० अंश जाने में ३६१ दिन १ घण्टा २० मिनट लगते हैं, अतः प्रत्येक सौर वर्षान्त में दोनों के अन्तर ३६५ दिन ६ घण्टा ९ मिनट—३६१ दिन १ घण्टा होता है।

प्रायः बार्हस्पत्य मान ३६० सौर दिन का सा होता है अतः प्रत्येक वर्ष में स्थूल ४ दिन ४ घण्टा कम करने से इसके आगे के नये संवत्सरों का

प्रवेश तथा अंत होगा। राक्षस संवत्सर सन् ४९ से क्षय सन् ६१ तक अ, इ, उ, ए स्वर क्रम से वर्त्तमान में ओ सम्वत्सर की ही दशा चल रही है। १२ वर्ष तक चलने से इसे द्वादश वार्षिक स्वर की दशा कहा गया है।

यह ओ स्वर की द्वादश वार्षिक दशा सन् ६१ के १० दिसम्बर मास से राक्षस सम्वत्सर में ओ स्वर की दशा सन् ७३ के ता० १० अक्टोबर मास तक अर्थात् क्षयनामक संवत्सर तक जावेगी। (स्थूलानुमान से) यहाँ गणित गौरव को छोड़ दिया गया है।

यजुर्वेद अध्याय २४ के

(१) "संवत्सरोऽसि (२) परिवत्सरोऽसि (३) इदावत्सरोऽसि (४) इदवत्सरोऽसि (५) वत्सरोऽसि"-मन्त्र से-संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इदवत्सर और वत्सर ये पांच संज्ञायें संवत्सरों को मिली हैं। साथ में—"उषस्ते कल्पन्ताम्, अहोरात्रास्ते कल्पन्ताम्, अर्धमासास्ते कल्पन्ताम्। मासास्ते कल्पन्ताम्।

ऋतवस्ते कल्पन्ताम्। संवत्सरस्ते कल्पताम्" यह मन्त्र भी उपलब्ध है। जिसका समन्वय—

याजुष ज्योतिष के प्रथम पद्य से भी

"पञ्चसंवत्सरमयं युगाध्यक्षं प्रजापतिम्
दिनर्त्वयनमासाङ्गं प्रणम्य शिरसा शुचिः
ज्योतिषामयनं पुण्यं प्रवक्ष्याम्यनुपूर्वशः
सम्मतं ब्राह्मणेन्द्राणां यज्ञकालार्थसिद्धये"।

घटी, दिन, मास ऋतु और अयन—आदि कालों का विभाजन मिलता है। इस प्रकार मास के उल्लेख से $\frac{\text{मास}}{२}$ = पक्ष ज्ञान भी उपलब्ध हो गया।

"लगध" ने पञ्च "संवत्सरमयं युगाध्यक्षं" से ५ संवत्सर का एक युग माना है। अत' ६० संवत्सरों में $\frac{६०}{५}$ = १२ युग होंगे।

१२ संवतसरों की एक युग कल्पना से-प्रथम युग

(१) प्रभव संवतसर से १२ वें बहुधान्य, तथा—नीचे के अनुसार द्वाद
वार्षिक स्वर या १ युग के स्वर होंगे।

१ पहिले प्रभव से —१२ वें बहुधान्य तक	प्रथम युग—अ स्वर
१२ वें प्रमाथी से—२४ वें विकृत तक	द्वितीय युग—इ स्वर
२५ वें खर से—३६ वें शुभकृत तक	तृतीय युग — उ स्वर
३७ वें शोभकृत से—४८ वें आनन्द तक	चतुर्थं युग—ए स्वर
४६ वें राक्षस सँ—६० वें आनन्द	पंचम युग—ओ स्वर

इस प्रकार वेद सम्मत

(१) द्वादश वार्षिक, (२) वार्षिक, (३) षाण्मासिक, (४) ऋ
सम्बन्धी, (५) मास-सम्बन्धी, (६) पक्ष-सम्बन्धी, (७) तिथि एवं
(८) घटी सम्बन्धी आठ काल विभागों में ८ मात्रादिक स्वरों के सम्बन्
से शुभाशुभ फल विमर्श के लिए सुबुद्धिक-स्कन्धत्रयज्ञ दैवज्ञ से आदे
लेना चाहिए।

नामों की योगस्वर की स्वर दशा से द्वादश सम्बत्सर के स्व
का समन्वय कर, फलाफल विचार किया जाता है। पूर्वं विवेचित नामों
अनुसार इस प्रकार फलादेश कर सकते हैं। किन्तु यहाँ पर उचित फलादे
के लिए किसी व्यक्ति के जन्म काल के इष्ट समय का ज्ञान होना अति आव
श्यक है। उसकी वय के अनुसार ही फलादेश किया जाता है। जिसमें अ
सम्बत्सर के स्वर दशा का फल अवस्थानुसार करते हैं' साथ ही उसके जीव
में कितने वर्ष बीत चुके हैं, इसका भी यथार्थ ज्ञान परमावश्यक है, जो यह
असम्भव तो नहीं किन्तु अत्यधिक श्रम-साध्य है। इसलिए नामों के अनुसा
योग स्वर की दशा से अधिसम्बत्सर की स्वर दशा का समन्वय स्थापित कर
ही फलादेश कर सकते हैं। जन्मकाल के इष्ट समय का ज्ञान न होने से नाम
के योग स्वर के अनुसार एक द्वादश सम्बत्सर में सामान्यतः फलादेश कि
जा सकता है, जो इस प्रकार हो सकता है। जैसे—

मोरार जी का : योग स्वर उ आता है उ योग स्वर से ओ द्वादश वार्षिक स्वर युवा स्वर है जो प्रायः सन् १९६१ नवम्बर से सन् ७२-७३ तक चलेगा। यह समय उनके लिए युवा स्वर के उदय का है। यह अवधि उनके तेज बुद्धि बल सम्मान आदि में अभ्युदय रखती है।

यही स्थिति गौरीनाथ, राजेश्वर, जाकिरहुसेन, त्रिगुण, पद्मा, नाम की है। इन नामों के साथ अन्य नामों के विस्तृत फलादेश का विवेचन उत्तरोत्तर आगे के पृष्ठों में होगा।

श्रीप्रकाश नाम का योग स्वर अ है। जिसका द्वादश बार्षिक स्वर ओ पाँचवाँ स्वर है जो कि सन् १९५९-६० से प्रायः सन् १९७१-७२ तक चलता है। यह अवधि अभीष्ट नाम के लिए उत्तम या शुभ नहीं कही जा सकती जो उनके बुद्धिबल और तेज में कमी की परिचायक है। इसे फलादेश की भाषा में इसी प्रकार कहा जा सकता है। यही स्थिति केदारदत्त-युगलकिशोर और जवाहरलाल, आदि नामों की है।

वार्षिक स्वर

वार्षिक स्वर निकालने के लिए प्रथम प्रभवादि सम्वत्सरों से प्रारम्भ कर प्रत्येक ५ मूल स्वरों का प्रत्येक सम्वत्सर में क्रमशः भोगकाल निर्धारित करते हैं, इस प्रकार वर्तमान सम्वत्सर की प्रारम्भ की क्रम संख्या में ५ का भाग देने से बार्षिक स्वर ज्ञात करते हैं। जैसे वर्त्तमान शक वर्ष १८८९ से १८९० तक दुर्मति सम्वत्सर है। जिसकी प्रभवादि क्रम से संख्या ५५ होती है। ५ मूल स्वरों की आवृत्ति के अनुसार वर्तमान दुर्मति सम्वसर में ओ स्वर वार्षिक स्वर होगा फलादेश के लिए किसी नाम के पिण्ड स्वर का वार्षिक स्वर ओ, से समन्वय कर फलादेश करेंगे। यथार्थ फलादेश के लिए वार्षिक स्वर में प्रत्येक स्वर का अन्तर दशा काल के अनुसार भोगकाल निर्धारित करते हैं जो १ माह २ दिन कुछ··· होता है।

उदाहरण के लिए इन्दिरा नाम का पिण्ड स्वर ए, वार्षिक स्वर ओ से

कुमार स्वर की दशा चल रही है, जिसके अनुसार वर्तमान सम्वत्सर बल बुद्धि सम्मान की दृष्टि से अभ्युदय का प्रतीक है। इसके आगे का सम्वत्सर (१९६९-७०) अति उत्तम रहेगा। यही स्थिति मोरार जी, पृथ्वीराज हीरा-देवी, लल्लू नामक व्यक्तियों की भी होगी।

अयन स्वर :—

एक वर्ष में छ मास के दो अयन होते हैं, जिन्हें क्रमशः उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। जिसके निर्धारण के लिए दो प्रकार के मान्य सिद्धान्त हैं जिसे निरयण स्थिर सम्पात और सायन चल सम्पात कहते हैं जिसके अनुसार उत्तरायण और दक्षिणायन इस प्रकार हैं—

उत्तरायण { १५ जनवरी से १५ जुलाई तक निरयण-स्थिर सम्पात से
२१ दिसम्बर से २२ जून तक सायन चल सम्पात से

दक्षिणायन { १६ जुलाई से १४ जनवरी तक निरयण-स्थिर सम्पात से
२३ जून से २२ दिसम्बर तक सायन चल सम्पात से

उत्तरायण मे अ स्वर और दक्षिणायन में इ स्वर का उदय होता है। किसी भी नाम के नक्षत्र स्वर का अयन स्वर से सम्बन्ध स्थापित कर उसकी बाल कुमारादि दशाएँ स्थिर की जाती हैं। पूरे अयन में स्वरोंकी अन्तर्दशा के अनुसार एक स्वर का भोग काल १६ दिन २१ घटी ४९ पल होता है। जिसके अनुसार फलादेश में सूक्ष्माति-सूक्ष्म विचार करते हैं।

उदाहरण के लिए—गौरीनाथ नाम का नक्षत्र स्वर ओ है उत्तरायण में अ स्वर के उदय होने से यह अवधि कुमार स्वर के दशा की है, जो कि उनके बल, विद्या और सम्मान के लिए अर्द्धलाभ की स्थिति का है। यही दशा गोपीनाथ, सुधाकर नामों की है। जो उनकी समन्नति का द्योतक है। ऐसे नामों के व्यक्ति इस अवधि में अपनी स्थिति, सामाजिक अवस्था जाति के अनुरूप उन्नत होंगे, ऐसी सम्भावना है। दक्षिणायन तो इन नामों के व्यक्तियों के लिए पूर्ण अभ्युदय का है।

ऋतुस्वर :—

यद्यपि ज्योतिष-शास्त्र के मान्य ग्रंथों में, एवं लोक व्यवहार में भी छ ऋतुएँ मानी जाती हैं, किन्तु स्वरशास्त्रीय ज्योतिष की फलादेश पद्धति में ५ मूल स्वर ग्रहीत करने से मुख्यतः ऋतुओं का पाँच स्वरों के अनुरूप पाँच विभागों में समाहार करते हैं। और प्रत्येक कालांश की दिन संख्या ७२ मानते हैं। इस प्रकार पूरे वर्ष में इन पाँचों स्वरों का क्रमशः निम्नलिखित निरयण गणाना के अनुसार उदय होता है। जो निम्न तालिका से :—

१. अ स्वरका उदय —मेष वृष और मिथुन के १२° तक, सम्भावित तारीख १३ अप्रैल से २६ जून तक
२. इ स्वर का उदय—१८° मिथुन कर्क, सिं २४° तक ,, २७ जून से ९ सि०
३. उ स्वर का उदय—सिं ६° कन्या, तुला, वृ० ६° तक ,, १० सि० से २१ नव०
४. ए स्वर का उदय-वृ० २४ धन, मकर १८° तक ,, २२ नव० से ३१ जन०
५. ओ स्वर का उदय—मकर १२ कुम्भ, मीन तक ,, १ फरवरी से १२ अप्रै०

अन्तर्दशा के अनुसार एक ऋतु में प्रत्येक स्वर का भोग काल ६ दिन-३२ घटी ४३ पल होता है। किसी नाम के शुभाशुभ विचार के लिए उसके राशि स्वर का ऋतु स्वर से सम्बन्ध स्थापित कर उसकी बाल कुमार आदि स्वर दशाएँ निर्धारित करनी चाहिए।

जैसे—राधाकृष्णन् नाम का राशि स्वर उ है। इसलिए १३ अप्रैल से २६ जून तक ऋतु स्वर अ स्वर होने से यह अभीष्ट नाम के लिए वृद्ध स्वर की दशा है जो बल बुद्धि सम्मान उत्साह की दृष्टि से साधारण है। बाद का ऋतु कालांश (२७ जून से ९ सि० तक) शुभ कर नहीं है किन्तु १ फरवरी से १२ अप्रैल तक का समय सब दृष्टि से उत्तम है।

यही स्थिति पृथ्वीराज, श्री प्रकाश, राजेश्वर, त्रिगुण, रवीन्द्रनाथ, पद्मा आदि नामों की है।

मास स्वर :—

स्वरशास्त्रीय फलादेश की पद्धति में मास-स्वर का विचार करने से पूर्व एक

बात अवश्य ध्यान देने की है, वह यह है कि यहाँ पर प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा पर्यन्त एक मास की ३० दिनों की गणना करते हैं। सामान्य प्रचलित अमावास्या से अमावास्या तक के मास गणना से यह गणना भिन्न है। जैसा कि यामल ग्रन्थों में और नरपति जयचर्या ग्रन्थ के टीकाकार ने स्पष्ट किया है।

इस प्रकार चैत्र कृष्ण प्रतिपद से शुक्ल प्रतिपद तक १६ दिन और चैत्र शुक्ल द्वितीया से चैत्र पूर्णिमा तक १४ दिन तक एक मास की व्याप्ति मानने में ३० दिन पूरे होते हैं। पूरे वर्ष में इन पाँच मूल स्वरों का उदय क्रमशः इस प्रकार होता है

१. अ स्वर का उदय—भाद्रपद, मार्गशीर्ष, वैशाख
२. इ स्वर का उदय—आषाढ़-श्रावण-आश्विन
३; उ स्वर का उदय—चैत्र-पौष
४. ए स्वर का उदय—जेष्ठ-कार्तिक
५. ओ स्वर का उदय—माघ-फाल्गुन

अन्तर्दशा के अनुसार प्रत्येक स्वर का भोगकाल एक मास में $(\frac{३०}{११})$ = २ दिन। ४३ घटी। ३८$\frac{२}{११}$ प०। किसी नाम के शुभाशुभ फलादेश के लिए उसके जीव स्वर का मास स्वर से सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

जैसे अमरचन्द्र नाम का जीव स्वर इ होने से युवा स्वर ए वाले जेष्ठ कार्तिक मास वर्ष में सर्वोत्तम रहेंगे। इसी प्रकार माघ फाल्गुन कुछ अच्छे रहेंगे। भाद्रपद मार्गशीर्ष वैशाख शुभकर नहीं है। आषाढ़ श्रावण आश्विन मास में अत्यधिक कार्यक्षेत्र में त्रुटियों की सम्भावना है। यही स्थिति पृथ्वीराज, राजेश्वर, जाकिरहुसैन, राधाकृष्णन पद्मा और केदारदत्त नामों की है।

पक्ष स्वर

किसी नाम के द्वारा स्वरशास्त्रीय फलादेश की पद्धति में एक पक्ष तक उसके शुभाशुभ भविष्य का फलादेश पक्षस्वर के अनुरूप होगा। यहाँ मास के कृष्ण एवं शुक्ल दो पक्षों में क्रमशः अ और इ स्वर की दशा चलती है। अन्तर्दशा के अनुसार पुनः उसमें प्रत्येक स्वर का भोग काल $\frac{१५}{५}$ = १ दिन

२१ घटी ४९ प० २७ ३/११ विपल होता है। स्वरों की यह अन्तर्दशा, तिथि का मान ६० घटी और पक्ष के पूरे १५ दिनों में किया गया है। किन्तु सूक्ष्म विवेक पूर्ण फलादेश के लिए पञ्चांगों में निर्दिष्ट तिथि मानों को ध्यान में रखकर प्रत्येक स्वर की अन्तर्दशा निर्धारित करनी चाहिए। पक्ष की अवधि में फलादेश के लिए किसी नाम के ग्रह स्वर के साथ पक्ष स्वर का सम्बन्ध स्थापित कर फलादेश करते हैं।

जैसे :—चरणसिंह नाम का ग्रह स्वर उ होने से कृष्ण पक्ष में बृद्ध स्वर की दशा चलेगी जो मन्त्रणा अनुदान आदि के लिए अच्छी, शुक्ल पक्ष उतना अनुकूल न होने की सम्भावना है।

इसी प्रकार भक्तदर्शन, दौलतराम, आदि नामों का फलादेश होगा।

किन्तु, इन्दिरा, राजेश्वर, विभूतिनारायण, विश्वनाथ, त्रिगुण, राधाकृष्णन् रवीन्द्रनाथ, आदि नामों के लिए सम्पूर्ण कार्यों में कृष्ण पक्ष सर्वोत्तम रहेगा।

इसी प्रकार गौरीनाथ, गोपीनाथ, जाकिरहुसैन, सुधाकर आदि नामों के लिए कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष सर्वोत्तम रहेगा।

दिन स्वर :—

किसी नाम के अनुसार दैनिक शुभाशुभ का फलादेश करने के लिए १५ तिथियों में नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा के अनुसार तीन तीन तिथियों में पाँच मूल स्वरों का उदय होता है जो निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है—

अ	इ	उ	ए	ओ
१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५ पूर्णिमा या अमा
नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा

अन्तर्दशा में प्रत्येक स्वर का भोगकाल = (१×६०)/११ = ५ घटी २७ ३/११

पल। नाम के अनुसार दैनिक फलादेश के लिए उस नाम के वर्ण स्वर से दिन स्वर का सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

उदाहरण के लिए—

मोराजी का वर्ण स्वर इ है, इससे १।६।११ तिथियाँ जो अ स्वर की है वह अभीष्ट नाम के लिए अच्छी नहीं हैं, इन तिथियों में सावधानी पूर्वक कार्य करना चाहिए। किन्तु इस नाम के लिए ४।६।१४ तिथियाँ सर्वोत्तम हैं। इन्दिरा, श्रीप्रकार जाकिर हुसैन, मधुसूदन, मदनमोहन, मोहनदास, जवाहरलाल नामों की भी यही स्थिति होगी किन्तु राजेश्वर राधाकृष्णन् सुधाकर, रवीद्र नामों के लिए १।६।११ तिथियाँ अत्यन्त अनुकूल रहेंगी तथा ४।६।१४ तिथियाँ हानिकर होंगी।

घटी स्वर :—

दिन रात किसी भी समय किसी भी नाम के लिए फलाफल (शुभा-शुभ-फलादेश) करने के लिए घटी स्वर से विचार करते हैं। दिन-रात की ६० घटियों में ५ घटी २७ पला के क्रम से पाँच मूल स्वरों का क्रमशः उदय होता है। अन्तर्दशा के अनुसार एक स्वर का भोग काल ३२७ ÷ ११ = २६ पल, ४३ विपल होता है। किसी भी नाम के अनुसार तत्काल में फलादेश के लिए उसके मात्रा स्वर से सम्बन्ध स्थापित कर शुभाशुभ का फलादेश करते हैं। यह ध्यान देना चाहिए कि सूर्योदय से प्रश्न काल तक की कितनी घटी बीत चुकी है और पूर्व तिथि की समाप्ति से वर्तमान तिथि कितनी बीती और उसमें किस स्वर का उदय हो रहा है। मात्रा स्वर के अनुसार तत्काल घटी में यदि युवा स्वर का उदय हो तो प्रश्न के विषय में सिद्धि का फलादेश करते हैं। यहाँ पर मात्रा स्वर, दिनस्वर और घटी स्वर और उसकी अन्तर्दशा में उदित होने वाले स्वर का सूक्ष्म विवेक ही यथार्थ एवं पूर्णतः सिद्धफलादेश के लिए परमावश्यक है।

इस प्रकार अनेक कालों में अनेक प्रकार के स्वर-चक्रों की सहायता से निश्चित कालांश में शुभाशुभ का फला देश करते है किन्तु फलादेश के लिए कुछ आवश्यकीय तत्वों पर विचार करना परम आवश्यक है।

निश्चित एवं पूर्णतः सिद्ध (सत्य) फलादेश के लिए किसी नाम के व्यक्ति के जन्म काल के इष्ट समय का ज्ञान आवश्यक है। जिससे उस का द्वादश सम्वत्सर का स्वर ज्ञात हो सके और उस कालांश में तत्तत् भुक्त भोग्य वर्षादिक का सभीचीन ज्ञान हो सके, तथा आठ कालों के तत्तत् स्वरों का निर्धारण हो सके। इसके साथ ही उसकी वय का निश्चित ज्ञान हो सके।

फलादेश के लिए अनेक स्वरों की बाल कुमार युवा वृद्ध आदि दशाओं में इस प्रकार का फलादेश करते हैं—

१. बाल स्वर की दशा में बाल स्वर के अन्तरों में कोई मनुष्य बड़ी भूल अनजाने में धोखा या वहकाव में आकर कर सकता है। या बालस्वर दशा में मृत्यु स्वर का उदय होने पर दुर्घटना या मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है।

२. बाल स्वर की दशा में कुमार स्वर का उदय होने से अच्छी दिनचर्या का योग समुपस्थित होता है।

३. बाल स्वर दशा में युवा स्वर का अन्तर किसी अच्छे या साहसिक कार्य में पूरी सफलता ला सकती है।

४. बाल स्वर दशा में वृद्ध स्वर दशा के अन्तर की दशा की तिथि में बड़ी दुर्बलता, निरुत्साह वृत्ति तथा वैराग्य से अनुराग हो सकता है।

५. बाल स्वर की दशा में मृत्यु स्वर की अन्तर दशा किसी बड़ी पराजय की सूचिका हो सकती है, यथा मनोनाश या मनोव्यथा का योग समुपस्थित कर सकती है।

इसी प्रकार—कुमार, युवा, वृद्ध, मृत्यु के समयों में बाल, कुमार, युवा, वृद्ध मृत्यु सम्बन्ध के सूक्ष्म समयों में शुभा-शुभ का प्रत्युत्पन्न मतिक विद्वान स्वरशास्त्री ज्योतिषी कर सकता है।

यदि द्वादश वार्षिक अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, घटी स्वरों में किसी नाम

के एक ही स्वर का उदय हो रहा हो और सभी अन्तर समयों में भी उसी एक स्वर का उदय हो रहा हो तो १२ वर्ष के अमुक वर्ष के अमुक अयन के अमुक ऋतु मास पक्ष की अमुक तिथि के अमुक घटी (समय) में उस-नाम के पुरुष या महिला जो बाल, (वयस्क) युवा, वृद्ध स्वस्थ, या आतुर हो उसे परम पदप्राप्त हो सकता है (यदि शुभ स्वर का उदय हो तो) अथवा उस पुरुष को उस समय महान कष्ट हो सकता है। (यदि अशुभ स्वरों का उदय हो तो)

शंका—

यदि एक स्वर दशा का आरम्भ तीन तिथियों में एक सा हो रहा है और यदि अन्तरों में भी साम्य आ रहा है और जीवन यात्रा में शरीर, धन, कुटुम्ब, गृह, पुत्र, विद्या, रोग, शोक, शत्रु, स्त्री, काम, मृत्यु, (छिद्रान्वेषण) तीर्थ, यात्रा, पद पदार्थ सम्मानादि लाभ, अनेक प्रकार की सम्पत्ति संञ्चय, अनेक प्रकार के अच्छे या बुरे व्यय आदिकों का संघर्ष पदे पदे चालू है, तो उक्तशुभा-शुभ किसी एक ही समय में होंगे। जैसे विवाहादि की एक ही तिथि होगी, जन्म का एक समय, मृत्यु का भी एकही समय निश्चित होगा तो उक्त तिथियों में किस तिथि को शुभाशुभ के लिए निश्चित रूप से कहा जा सकता है ?

१. प्रथमत: तिथि के सिद्ध घटित होने पर उसमें ही विशेष खतरे या उत्तमता का फलादेश करना चाहिए।

२. यदि प्रथम तिथि टल जाय तो द्वितीय तिथि में इष्टानिष्ट का फलादेश करना चाहिए।

३. यदि दूसरी तिथि भी टल जाय तो अन्तिम तिथि में विना किसी ननु न च के इष्टानिष्ट के फलादेश की तिथि, स्वरशास्त्री ज्योतिषी को कहनी ही चाहिए।

स्वरों की बारह अवस्थाएँ

जैसा कि पूर्व विवेचना से स्पष्ट है कि इन आठ कालांशों में ५ मूल स्वरों

का, अवधि विशेष में, अनेक रूपों में क्रमशः उदय होता है। यहाँ एक बात और भी ध्यान देने की है कि इन स्वरों में प्रत्येक के भोग काल में उसकी अवान्तर १२ अवस्थाएँ क्रमशः आती हैं। जिनके अनुसार ही उचित रूप से फलादेश करने में सुगमता होती है। प्रत्येक स्वर की इन बारह अवस्थाओं का ज्ञान, स्वर शास्त्री (ज्योतिषी) भी को होना अपेक्षित है। ये अवस्थाएँ यामल ग्रन्थों तथा नरपतिजयचर्या-नामक ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णित हैं—

(१) बाल-स्वर की बारह अवस्थाएँ—

१. मूल, २. बाल, ३. शिशु, ४. हासिका, ५. कुमारिका, ६. यौवन, ७. राज्यदा, ८. क्लेश, ९. निद्र्या, १०. ज्वरिता, ११. प्रवासा, १२. मृता

(२) कुमार-स्वर की बारह अवस्थाएँ :—

१. स्वस्था २. शुभा ३. मोघा ४. अतिहर्षा ५. बृद्धि ६. महोदया ७. शान्तिकरी ८. सुदर्पा ९. मंदा १०. शमा ११. शान्तगुणोदया १२. मांगल्यदा।

(३) युवा-स्वर की बारह अवस्थाएँ

१. उत्साह २. धैर्य ३. उग्रा ४. जया ५. बला ६. संकल्पयोगा ७. सकामा ८. तुष्टि ९. सुखा १०. सिद्धा ११. धनेश्वरी १२. शान्ताभिधा।

(४) बृद्ध स्वर की बारह अवस्थाएँ—

१. वैकल्या २. शोषा ३. मोघा ४. च्युतेन्द्रिया ५. दुखिता ६. रात्रि ७. निद्रा ८. बुद्धि प्रभंगा ९. तपा १०. क्लिष्टा ११. ज्वरा १२. मृता

(५) मृत्यु स्वर की बारह अवस्थाएँ—

१. छिन्ना २. बन्धा ३. रिपुघातकरी ४. शोषा ५. मही ६. ज्वलना ७. कष्टदा ८. व्रणाङ्किता ९. भेदकरी १०. दाहा ११. मृत्यु १२. क्षया।

इन स्वरों की दशाओं में से किस नाम की कौन स्वर दशा बाल कुमार आदि क्रम से वर्णित होगी इसका यह विवेक है कि—मान्य स्वर चक्रों के

अनुसार किसी कालांश के स्वर चक्र की स्वरदशा से विचार किया जाता है। स्वरचक्र के अनुसार किसी नाम का जो नियत स्वर होगा, कालांश स्वरों (८ काल स्वर) में से नियत काल का स्वर पूर्वक स्वर चक्र से गिना जायगा। स्वरचक्र से प्राप्त मूलस्वर और कालांशस्वर जिस क्रम संख्या में आयगा उसके अनुसार पहला बाल दूसरा कुमार तीसरा युवा चौथा वृद्ध और पाचवाँ मृत्यु स्वर होता है। जैसे किसी स्वर चक्र के अनुसार जिस नाम का इ स्वर होगा कालांश स्वर [१]इ बाल, [२]उ कुमार [३]ए युवा [४]ओ वृद्ध और [५]अ मृत्यु स्वर होगा, जिसका स्वर चक्र के अनुसार ए स्वर होगा उसके लिए कालांश स्वर [१]ए बाल [२]ओ कुमार [३] अ युवा [४]इ वृद्ध और [५]उ मृत्यु स्वर होगा।

इन स्वरों के क्रमशः बार-बार आगमन में उनकी बारह अवस्थाओं के अनुसार तत्तत् रूप में फलित घटेगा। इन दशाओं की बारह अवस्थाओं का नामकरण उनके तत्तात् परिवर्तनों को लक्ष्य कर ही किया गया है। इस प्रकार ५ मूल स्वरों की स्थिति विशेष के आधार पर १२ अवस्थाओं का अवान्तर भेद करने पर ५ स्वरों की दशाओं के अवान्तर ५ × १२ = ६० प्रभेद निष्पन्न होते हैं। जिनके पूर्णतः विवेक से ही स्वरशास्त्री (ज्योतिषी) फलादेश करता है।

सत्य और यथार्थ सिद्ध फलादेश के लिए इन स्वरों की प्रत्येक के १२ (प्रभेदों) अवस्थाओं का ध्यान देना परमावश्यक हो जाता है। इसके पूर्ण विवेक से ही स्वरशास्त्रीय ज्योतिष का फलितसमाज में पूर्णतः सम्मान एवं उसपर लोगों की अटूट श्रद्धा हो सकती है।

उदाहरण से जैसे—

दिन स्वर यदि नन्दा तिथि (१।६।११) है तो अ स्वर का उदय होत है। जिसकी १२ अवस्थायें भी होंगी।

कल्पना कीजिए प्रतिपत् तिथि का मान यदि ६० घटी = २४ घण्टा और वह किसी सूर्योदय के समय ६ बजे ही प्रारम्भ हो रही है, तो दूसरे दि

के सूर्योदय ६ बजे तक रहेगी। इसमें तिथि में अ स्वर, चलेगा। अ स्वर की १२ अवस्थाओं में प्रत्येक अवस्था का काल ५ घटी या २ घण्टा होगा। यदि इस दिन ८ बजे किसी ने किसी अभीष्ट कार्य के लिए प्रश्न पूछा तो अ स्वर में प्रथम अवस्था मूला आती है, तथा १० बजे तक वाला, १२ बजे दिन तक शिशु, २ बजे तक हासिका, ४ बजे दिन तक कुमारिका, दिन के सायं ६ बजे तक यौवन, रात्रि ८ बजे तक राज्यदा, रात्रि १० बजे तक क्लेशा, १२ बजे रात्रि तक निन्द्या, २ बजे रात्रि तक ज्वरिता, ४ बजे रात्रि तक प्रवाशा, तथा ४ बजे रात्रि से ६ बजे द्वितीय सूर्योदय तक मृता अवस्था, अ स्वर में होगी। जिन नामों का वर्ण स्वर अ है, उनके लिए प्रतिपद् तिथि के उक्त अमुक-अमुक समयों में वाल स्वर में अमुक दशा देखकर दशाओं के नामानुसार फलाफल विचार कर आदेश करना चाहिए। जिन-जिन नामों का वर्ण स्वर इ आता है उन नामों के लिए प्रतिपत् षष्ठी एकादशी तिथि का स्वर पाचवाँ मृत्यु संज्ञक होता है, यदि रोगी, आतुर संकट आदि के भविष्य के लिए कोई पूछे या विचार करे तो इ वर्ण स्वर के नर नारियों में जो रोगी हैं आतुर हैं वे कष्ट में हैं। ऐसा भविष्य कहना चाहिए।

उक्त अवस्था के सम्बन्ध का एक उदाहरण—

अग्रिम संवत् २०२५ शकाब्द १८९० चैत्र शुक्ल प्रतिपदि तिथि (अंग्रेजी गणना से ता० २९ मार्च १९६८ को) दिन १२ बजे इष्टकाल काशी में सूर्योदय से (सूर्य घड़ी से ५।५४ बजे हैं।) १२ बजे तक ६ घण्टे ६ मिनट घण्टामान को $\frac{5}{2}$ से गुणने से १५ घड़ी १५ पल यह घटयात्मक इष्ट-काल होता है। तिथि में एक अवस्था का मान ५ घटी होने से १५ घटी १५ पल ÷ ५ = लब्धि ३, शेष = ०। १५, अतः ३ + १ = यह चौथी अवस्था आती है।

इस दिन मोरार जी देसाई के वर्ण स्वर इ

इन्दिरा.................................इ

,, श्रीप्रकाश.......................... ... इ

इस प्रकार अनेक नामों के वर्ण स्वर से तिथि स्वर की साधनिका से प्रतिपद् तिथि में अकार स्वर का उदय होता है जो पहले बता चुके हैं, तो (ता० ३० रेलवे की) भारतीय ता० २९ शुक्रवार को रात्रि शेष ४।४२ (काशी में सूर्य घड़ी) तक इ से पञ्चम स्वर अ में चौथी अवस्था दिन के ११ बजे के ५५ मिनट से २ घण्टा या ५ घटी, १ बजके ५५ मिनट तक या घटी से २ घटी ४५ मिनिट तक "कुमार" नाम की अवस्था में उक्त तीनों नाम के महानुभावों को कुमार अवस्था की फल प्राप्ति होगी तथा २०।१५ घटी से २५।१५ या ३।५४ बजे तक मृत्यु स्वर में यौवन स्वर में यौवन अवस्था पुनः २ घण्टे के आगे क्रम से राज्यदा अवस्था, लेशा-निन्द्या-ज्वरिता-प्रकाशा मृतादि अवस्था होंगी।

उ वर्ण स्वर के गोपीनाथ, पृथ्वीराज आदि नाम के व्यक्तियों के लिए यह समय अत्यन्त अनुकूल होता है।

यदि विशेषतः आयु प्राप्त रोगी है, तो उसकी इ वर्णस्वर से प्रतिपत् षष्ठी एकादशी तिथि की १२ वीं अवस्था में चिन्ता की बात होगी इस भविष्य को निःसंशयः आदेश करना चाहिए।

अथवा ए वर्ण स्वर के नर नारियों के लिए प्रतिपत् षष्ठी एकादशी जो अ स्वर की तिथियाँ हैं उनके लिए युवा स्वर की होने से उन्हें उक्त तिथियों की ६ ठी अवस्था जो यौवनदा है अवश्य उस समय उन्हें सुख ऐश्वर्य प्रसन्नता पद, पदार्थ लाभ होगा। अपने-अपने क्षेत्र के नर नारियों के तारतम्य से विचार कर फलादेश करना चाहिए।

इसी क्रम से पक्ष स्वर की १२ अवस्थाओं का १५ दिन में $\frac{१५}{१२}$ = १ दिन १५ घटी या ६ घण्टा मान एक-एक अवस्था का होता है। ३० दिन में मास स्वर की १२ अवस्थाओं का काल $\frac{३०}{१२}$=२ दिन ३० घटी या १२ घण्टा होता है।

७२ दिन में ऋतु स्वर की १२ अवस्थाओं का काल $\frac{७२}{१२}$=६ दिन होता है।

६ महीने के अयन स्वर की प्रत्येक अवस्था का मान $\frac{१८०}{१२}$=१५ दिन होता है।

१ वर्ष के सम्वत्सर की ,, ,, ,, $\frac{३६०}{१२}$=३० दिन होता है।

१२ वर्ष ,, द्वादशाब्दिक सम्वत्सर ,, ,, $\frac{१२ \times ३६०}{१२}$ = ३६० दिन या एक बार्हस्पत्य वर्ष होता है।

ध्यान देने की बात यह है कि नर या नारी किसी व्यक्ति विशेष के नाम से आद्योपान्त फलादेश के लिए उक्त पद्धतियों से फलादेश के लिए पर्याप्त काल अपेक्षित है, यह पद्धति इतनी सूक्ष्म है कि वैदुष्य प्राप्त बुद्धिमान् त्रिस्कन्धज्ञ दैवज्ञ का एक अनवरत जीवन भी उक्त कार्य के लिए पर्याप्त नहीं है। प्राक्काल में राज्याश्रय या सम्पन्न सम्भ्रान्त व्यक्तियों के आश्रय में उक्त कार्य सम्पादनाय स्वरज्ञ-दैवज्ञ सर्वतन्त्र स्वतन्त्र होकर राष्ट्र, राजा या सेनापति आदिकों के ही प्रतिक्षण के स्वरों के विचार से राजा, राष्ट्र और राष्ट्र सेना को विशेष संकट से बचाते थे, तथा राजा राष्ट्र और राजा की विशेष राष्ट्रीय सम्पत्ति वर्धन का सुसमय भी बताया जाता था।

दिशा स्वर :—

प्रस्थान आदि के फलित में, दिशा स्वरका बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, जिसका महत्वपूर्ण उपयोग प्राचीनकाल में युद्ध के अवसर पर किया जाता था। जिसके अनुरूप ही स्वर शास्त्रीय ज्योतिषी युद्ध क्षेत्र में सेना के प्रस्थान की दिशा नियत करता था। दिशा स्वर स्थिर करने के लिए अपनी स्थिति के अनुसार पूरब पश्चिम आदि दिशाओं के पाँच क्षेत्र विभाग करते हैं और प्रत्येक दिशा के लिए एक स्वर नियत करते हैं। पूर्व दिशा में अ स्वर, दक्षिण में इ स्वर, पश्चिम में उ स्वर, उत्तर में ए स्वर, मध्य में ओ स्वर मानते हैं।
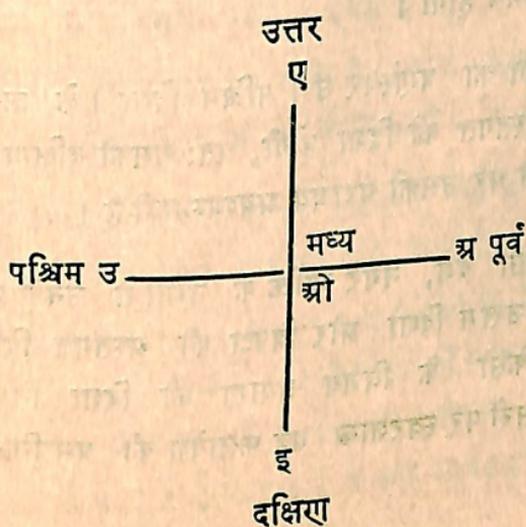
दिशास्वर के अनुसार ऐसा फलादेश का विधान है कि किसी नाम के वर्णस्वर के अनुसार जो पाचवें स्वर की दिशा है वह मृत्यु की दिशा होती है। उस दिशा में विशेषकर यात्रा कदापि कथमपि नहीं करनी चाहिए ऐसा स्वर शास्त्र-ग्रन्थों में लिखा है—

"यस्यां दिश्युदयं याति स्वरस्तत्पंचमी दिशम् ॥
वर्जयेत्सर्वकार्येषु यात्राकाले विशेषतः" ॥

इसी प्रकार विशिष्ट नामों देशों के साथ संघर्ष या युद्ध में गमन के अवसर पर स्वरशास्त्री को निर्भान्त रूप में फलादेश करना चाहिए।

जैसे :—मोरारजी नाम के वर्ण स्वर इ होने से दक्षिण दिशा अपने स्वर की दिशा होने से इ से पाँचवी स्वर अ की दिशा पूरब है जो उनके हित की विरुद्ध की दिशा है, अतः इस नाम वालों को भूलकर भी पूर्व दिशा में चलकर या पूर्व दिशा में संघर्ष नहीं करना चाहिए। इसीप्रकार भारत का वर्णस्वर अ पूर्व दिशा में होने से, युद्ध स्थल के मध्य में (युद्ध स्थलमें) युद्ध नहीं करना चाहिए। पश्चिम दिशा अत्युत्तम होगी। इसी प्रकार चीन का वर्ण स्वर ओ है ओ से (मध्य से) ए स्वर उत्तर दिशा चीन की अस्त दिशा होगी। अतः यदि भारतीय सैनिक पश्चिम से युद्ध में प्रवृत्त होकर उत्तर की तरफ बढ़ेंगे तो चीन की अवश्य पराजय होगी।

और पाकिस्तान का वर्णस्वर उ (पश्चिम दिशा) के क्रम से इ स्वर (दक्षिण दिशा) अस्तंगत की दिशा होगी, अतः उसकी दक्षिण अस्त दिशा से उससे युद्धारम्भ करने पर उसकी पराजय अवश्यम्भावी है।

इसी प्रकार किसी देश, नगर व्यक्ति के नामों से उनके प्रतिद्वन्दियों के नामों से पक्ष की उत्तम दिशा और विपक्ष की अस्तंगत दिशा का निर्देश कर स्वरशास्त्री किसी के विजय प्रयाण की दिशा नियत करता है। युद्धारम्भ आदि अवसरों पर स्वरशास्त्र यह फलादेश की प्रमाणित पद्धति सफल सिद्ध होती है।

भारत वर्ष

मात्रा :—(१) भारतवर्षं नाम में भ वर्णं में आ की मात्रा है। अ, आ मात्रा की केवल अ मात्रा होने से भारतवर्षं का मात्रा स्वर अ सिद्ध होता है। जिसकी संख्या १ है।

वर्णं :—(२) वर्णं स्वर चक्र में भारतवर्षं का आदि वर्णं भ अ स्वर के नीचे लिखा है। इसलिए भारतवर्षं का वर्णं स्वर भी अ सिद्ध होता है। जिसकी भी संख्या १ ही है।

ग्रह :—(३) शतपदचक्र में भारतवर्षं का आदि भा "ये यो भा भी" मूल नक्षत्र में होने से ग्रह स्वर धनू राशि का उ स्वर, भारतवर्षं का ग्रह स्वर उ सिद्ध होता है। इसकी संख्या अ से ३ है।

जीव :—(४) भारतवर्षं के, भ्+आ+र्+अ··त्+अ+व्+अ+र्+ष्+अ इन वर्णं और स्वरों के जीव स्वर चक्र के अनुसार भ्=४+आ = २+र्=२+अ= १+त् = १+अ =१+व्=४+र्=२+ष्=२+अ=१=२०÷५= शेष ० या ५=ओ, भारतवर्षं का जीव स्वर ओ सिद्ध होता है। जिसकी संख्या ५ होती है।

राशि : (५) भारतवर्षं की धनू राशि से ए स्वर, अतः भारतवर्षं का राशि स्वर ए है। जिसकी संख्या ४ है।

नक्षत्र :—(६) भारतवर्षं नाम से मूल नक्षत्रका, चक्र से ए स्वर, अतः भारतवर्षं का नक्षत्र स्वर भी ए है, जिसकी संख्या ४ है।

पिण्ड :—(७) भ्+र्+त्+व्+र्+ष् ये वर्णं हैं जिनके क्रमशः १+४+३+१+४+३ ये अंक वर्णं स्वर से होते हैं। आ+अ+अ+अ+अ ये स्वर हैं। जिनके मात्रा स्वर चक्र से १+१+१+१+१ ये अंक मात्रा स्वर से मिलते हैं।

$$\frac{\text{वर्ण स्वर के अंकों के योग} + \text{मात्रा स्वर के अङ्कों का योग}}{५}$$

$= \frac{१६+५}{५} = \frac{२१}{५} =$ १ शेष होने से भारतवर्ष का पिण्ड स्वर अ होता है जिसकी संख्या १ है।

		१	२	३	४	५	६	७	
योग :—(८)		मात्रा +	वर्ण +	ग्रह +	जीव +	राशि +	नक्षत्र +	पिण्ड,	सभी
		१ +	१ +	३ +	५ +	४ +	४ +	१	

$$\text{स्वरों के } \frac{\text{अंक योग}}{५}$$

$= \frac{१९}{५} =$ शेष ४ = ए, अतः भारतवर्ष का योग स्वर ए होता है, गणनया जिसकी संख्या ४ होती है।

प्राक्चीन, प्राचीन, अर्वाचीन, इत्यादि। तथा श्री देवीभागवत-पुराण में भी चीन शब्द का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

चीन

उक्त भाँति	मात्रा	वर्ण	ग्रह	जीव	राशि	नक्षत्र	पिण्ड	योग
भारतवर्ष	अ१	अ१	उ३	ओ५	ए४	ए४	अ१	ए४
चीन	इ२	ओ.५	उ.३	अ१	ओ५	अ१	ओ५	इ२
पाकिस्तान	अ१	उ३	इ२	ए४	उ३	उ३	ए४	ओ५
नयपाल	अ१	इ२	अ१	ओ५	ए४	ए४	इ२	ए४

देवी भागवत सप्तम स्कन्ध अध्याय ३८ श्लोक १३ ··· १४ में—

"श्री महालसा परं स्थानं योगेश्वर्यास्तथैव च

तथा नील सरस्वत्याः स्थानं चीनेषु विश्रुतम्" ॥

"वैद्यनाथे तु वगलास्थानं सर्वोत्तमं मतम्" ।
"भद्राश्ववर्षोपरिगो रवि र्भारतवर्षे स्वोदयं कुर्यात्"

(सूर्य सिद्धान्त भूगोलाध्याय श्लोक ७०)

१० दिसम्बर सन् ६१ से १० अक्टूबर सन् ७३ तक ओ स्वर, जो भारतवर्ष के योग स्वर ए से दूसरा कुमार स्वर होता है। राष्ट्र की प्रत्येक समस्याओं में कष्ट के साथ आधी मात्रा में सफलता मिलेगी।

सन् ६१, ६२ में स्वस्थ, ६२, ६३ में शुभ, ६३, ६४ में मोघ, ६४, ६५ में अतिहर्ष ६५, ६६ में बृद्धि, ६६,६७ में महोदया, ६७,६८ में शान्तिकरी ६८, ६९ में सुदर्पा ६९, ७० में मन्दा, ७०, ७१ में शमा ७१, ७२ में शान्तगुणोदया ७२, ७३ में माङ्गल्यदा अवस्थाओं के नामों के अनुसार शुभाशुभ भी होगा।

पाकिस्तान के योग स्वर ओ से ओ स्वर वाल स्वर चल रहा है, अतः सन् ६०-६१-६२····७२-७३ तक सफलता चाहते हुए भयंकर धोखे या वाल बुद्धि से हानि हो सकती है। ६१-६२, मूला (यथावत्) ६२, ६३ वाला, ६३, ६४ शिशु, ६४, ६५ उपहास, ६५, ६६ कुमारिका, ६६, ६७ यौवन, ६७, ६८ राज्यदा, ६८·६९ क्लेशा, ६९,७० निन्द्या ७०, ७१ ज्वरिता, ७१,७२ प्रवासा, ७२, ७३ मृता, पाकिस्तान के लिए उक्त भाँति का शुभाशुभ काल रहेगा। चीन के योग स्वर इ से ओ बृद्ध स्वर साधारण है।

६१,३२—वैकल्य, ६२,६३ शोषा, ६३ ६४ मोधा, ६४,६५ च्युतेन्द्रिया ६५,६६ दुखिता, ६६,६७ रात्रि, ६७,६८ निद्रा, ६८,६९ बुद्धिप्रभङ्ग, ६९,७० तपा ७०,७१ लिकष्टा, ७१,७२ ज्वरा, ७२,७३ मृता चीन के लिए भी उपरोक्त उक्त सन वर्ष अनुपयुक्त हैं। नयपाल के ए स्वर से ६१,७३ सन का समय भारत वर्ष की तरह ही शुभोन्मुख सा रहेगा।

अतीत की ओर जाने से - सन ६०—१२ = सन ४८ से सन ६० तक भारत का बाल स्वर था जो बालक की तरह प्रगतिशील रहना चाहिए था तथैव सन ३५····सन् १९४७ तक का समय भारतवर्ष के लिए, भारत के योग स्वर ए से पञ्चम उ स्वर अत्यन्त दुखप्रद एवं हानिप्रद भी रहा होगा। इसमें भी १२ अवस्थाओं में स्थूलतया ५ वीं अवस्था जो मही संज्ञक है वह

४१, ४१,४२ में, तीसरी रिपुघातकारी—३८, ३६, ४० की अच्छी रह सकती थी। अतीत का सुविशद फलादेश इससे अधिक आवश्यक नहीं है इतना दिग्दर्शन पाठकों के लिए पर्याप्त होगा कि यह पद्धति देश के शुभाशुभ फल में कहाँ तक घटित हो रही है। यद्यपि उक्त फलाफल सूक्ष्म गणना से यहाँ पर इस समय सम्भव नहीं है। स्थूलतया ही यत्किश्चित् कहा जा रहा है। अस्तु। वार्षिक स्वर विचार से—

१६ नवम्बर ६७ से १२ नवम्बर ६८ तंक भारतवर्ष का समय साधारण सा ही है।

१६-६७ से १२ नव, ६८ तक—पाकिस्तान के लिए कुछ अच्छा है। चीन के लिए परिणाम में +५—५=० जैसा है। नयपाल के लिए, उनकी कर्त्तव्य निष्ठा में कुछ दौर्वल्य से स्थिर कार्य की कोई स्पष्टता उद्घाटित नहीं हो रही है।

अयन

वास्तव में गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त, विज्ञान जगत में प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका है। तदनुसार वर्त्तमान खगोल से ता० २३ दिसम्वर से ता० २३ जून तक उत्तरायण, एवं २३ जून से २२ दिसम्बर तक दक्षिणायन होना चाहिए।

किन्तु कुछ ऐसे भी रूढ़िवादि भी सूर्योदय, सूर्यास्त, क्रान्ति, दिनबृद्धि आदि जो खगोल की प्राकृतिक देन ता० २३ दिसम्बर को है उसे मानते हुए पञ्चाङ्गों में सभीलोग इसी दिन से दिन मान की वृद्धि लिखते हुए भी ता० १४ जनवरी को ही मकर संक्रान्ति, तथा १४ जुलाई को ही कर्क संक्रान्ति प्रतिवर्ष स्थिर रूप में मानते आ रहे हैं। सृष्टि के आदिम वर्ष में पृथिवी की वर्ष पूर्त्ति का जो बिन्दु था तदनुसार ही फलित ज्योतिष का निर्माण हुआ, इसलिए फलित ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र के लिए सदा स्थिर सम्पात से १४ जनवरी, तथा १६ जुलाई को ही क्रमशः उत्तर और दक्षिण अयन बिन्दु माना जा रहा है। यह एक जटिल विवाद है जिस का समाधान यहाँ तो नहीं हो सके, लेकिन १०, २० वर्ष आगे कभी जो पञ्चाङ्ग दृश्य का अनुकरण करते हुए अपने को अदृश्य कह रहे हैं

सभी से एक ही मत स्वतः स्थापित हो जायगा। इस विवाद पर कुछ तर्क सि० शि० ग्रहगणिताध्याय की भूमिका में पाठक अवश्य देखेंगे।

अतः २३ जून से २२ दिसम्बर तक, प्रत्येक वर्ष में भारत के नक्षत्र स्वर ए से अ, युवा होने से भारतवर्ष की प्रत्येक स्थितियों में सर्वतोमुखी विजय रहेगी तथा २३ दिसम्बर से २२ जून तक कोई उल्लेखनीय प्रगति कम होगी।

चीन के लिए दक्षिणायन की अपेक्षा उत्तरायण कुछ अनुकूल रहेगा।

पाकिस्तान के लिए दक्षिणायन कुछ अच्छा किन्तु उत्तरायण नेष्ट।

नयपाल का भारत के सदृश रहेगा।

शुभ और अशुभ ऋतु काल

भारतवर्ष का ऋतु स्वर ए से प्रत्येक वर्ष में १३ अप्रैल से २६ जून तक का सर्वोत्तम समय

२७ जून	से	९ सेप्टे	से	कुछ अच्छा	तक
१० सेप्टे	,,	२१ नव०	,,	अत्यन्त ,,	,,
२२ नवम्बर	,,	३१ जनवरी	,,	साधारण	,,
१ फरवरी	,,	१२ अप्रैल	,,	अभ्युदय में प्रगति	,,

पाठक संशय करेंगे या समझेंगे कि लेखक ने नयपाल का स्वर,भारत की तरह निकाला है? ऐसी बात नहीं है, चारों राष्ट्रों के नामों से स्वरों का ज्ञान करते हुए यह दृढ़ तत्थ्य है कि पाँच स्वरों के भेदों में विश्व के अनेक राष्ट्रों के स्वरों की यत्र तत्र कदाचित् समता हो सकने से फल में भी साम्य होगा। यहाँ नयपाल और भारत का ऋतु-फल समान है। चीन के लिए प्रत्येक वर्ष का २२ नवम्बर से ३१ जनवरी तक का पाकिस्तान के लिए ,, ,, २७ जून से ९ सेप्टेम्बर तक का समय अनिष्टकारक रहेगा।

शुभ या अशुभ मास (महीने)

भारतवर्ष नाम से जीव स्वर ओ से आषाढ़ श्रावण आश्विन ये युवक मास, वर्ष भर में उत्तम रहेंगे। जेष्ठमास और कार्तिक मास सदा अनिष्ट से

रहेंगे। इन मासों में भूलकर भी राष्ट्र ने नयी योजनाओं का संकल्प या उन्हें कार्यान्वित नहीं करना चाहिए। नयपाल के लिये भी मास फल यही घटित हो रहा है।

चीन के लिए माघ-फाल्गुन, पाकिस्तान के लिए चैत्र-पौष ये मास निन्द्य से निन्द्य रहेंगे।

शुभ या अशुभ मास (महीने)

भारतवर्ष के लिए उ से कृष्ण पक्ष (सदा वर्ष भरके) उत्तम, शुक्लपक्ष नेष्ट रहेगा।

यही स्थिति चीन की भी रहेगी।

पाकिस्तान के लिए कृष्ण पक्ष नेष्ट रहेगा।

नयपाल के लिए शुक्ल पक्ष इष्ट रहेगा।

शुभ और अशुभ तिथियाँ

भारत वर्ष नाम के वर्ण स्वर अ से

अ (१) प्रतिपदा, षष्ठी एकादशी—साधारण
इ (२) द्वितीया सप्तमी द्वादशी—कुछ अच्छी
उ (३) तृतीया अष्टमी त्रयोदशी सर्वोत्तम
ए (४) चतुर्थी नवमी चतुर्दशी—केवल मन्त्रणा के लिए अच्छी
ओ (५) पञ्चमी दशमी पूर्णिमा या अमावास्या—अत्यन्त नेष्ट रहेंगी।

नयपाल के लिए ४।९।१४ उत्तम १।६।११ अत्यन्त नेष्ट हैं।

चीन के लिए २।७।१२ उत्तम ४।९।१४ अत्यन्त नेष्ट एवं पाकिस्तान के लिए ५।१०।१५ उत्तभ २।७।१२ ,, नेष्ट ,, है।

शुभाशुभ के लिए तिथियों का १२ वाँ विभाग

इस स्थल पर तिथियों तक की शुभाशुभता के अनन्तर उनके अवान्तर सूक्ष्म काल जो तिथिमान के पांच विभागों में प्राय:प्रत्येक ४ घण्टा ४८ मिनट का होता है वह समय समय पर विवेकी दैवज्ञ से तिथि का प्रारम्भ और अन्त का

समय समझ कर किसी राष्ट्र या व्यक्ति के नाम के मात्रा स्वर से जिस समय प्रातः, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, मध्य रात्रि आदि इष्ट समय में शुभाशुभ पूछा जा रहा है, तदनुसार तारतम्य से $\frac{\text{तिथि के सही मान}}{५}$ से १, २, ३, ४, ५ गुणित कालों में शुभाशुभ का आदेश करना चाहिए।

इसी प्रकार किसी राष्ट्र एवं व्यक्ति (नर नारी) आदि के १२ वर्ष, १ वर्ष, ६ महीने ७२ दिन, ३० दिन, १५ दिन, १ दिन और $\frac{\text{१ दिन के}}{५}$, में जहाँ जहाँ वर्ष अयन ऋतु मास पक्ष तिथि और तिथि के समय में शुभता आ रही है, वह समय उस नर नारी या राष्ट्र के लिए स्वर्ण समय या हीरक काल कहना चाहिए। सर्वत्र के निन्द्य व नेष्ट समयों में उस मानव का महान पतन, मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट कहना चाहिए। इति।

एक पद्धति से राष्ट्रों का शुभाशुभ फल विचार अध्याय समाप्त।

ज्योतिष के मुहूर्त्त ग्रन्थों में भी एक प्रक्रिया है। वह है—प्रत्येक स्वर और वर्णों के कुछ समूहों की, जिसे वर्ग संज्ञा दी गई है।

			स्वामी	दिशा
(१)	जैसे अ वर्ग से	अ इ उ ऋ लृ ए ओ	गरुड़	पूर्व में
(२)	क वर्ग से	क ख ग घ ङ	मार्जार	अग्नि में
(३)	च वर्ग से	च छ ज झ ञ	सिंह	दक्षिण में
(४)	ट वर्ग से	ट ठ ड ढ ण	श्वान्	नैऋत्य में
(५)	त वर्ग से	त थ द ध न	सर्प	पश्चिम में
(६)	प वर्ग से	प फ ब भ म	मूषक	वायव्य में
(७)	य वर्ग से	य र ल व	मृग	उत्तर में
(८)	श वर्ग से	श ष स ह	मेष (बकरा)	ईशान में

ये आठ वर्ग और उनकी दिशा हैं।

जो क्रमशः पूर्वादिक दिशाओं में रहते हैं और गरुड आदि जिन वर्णों के अधिपति होते हैं। प्रत्येक वर्ग से उसका पाचवाँ वर्ग व दिशा उसकी वैरी का वर्ग एवं वैरी की दिशा होती है। जैसे अ आ इ नाम के व्यक्तियों की पूर्व दिशा एवं गरुड वाहन होता है, अ से पञ्चम त वर्ग की दिशा पश्चिम है जो पूर्व की विपरीत एवं वर्ग सर्प है, जो स्वभावत: गरुड का वैरी है। इसीप्रकार क वर्ग अग्नि का मार्जार, जिसकी विपरीत दिशा वायु और वाहन मूषक (चूहा) है।
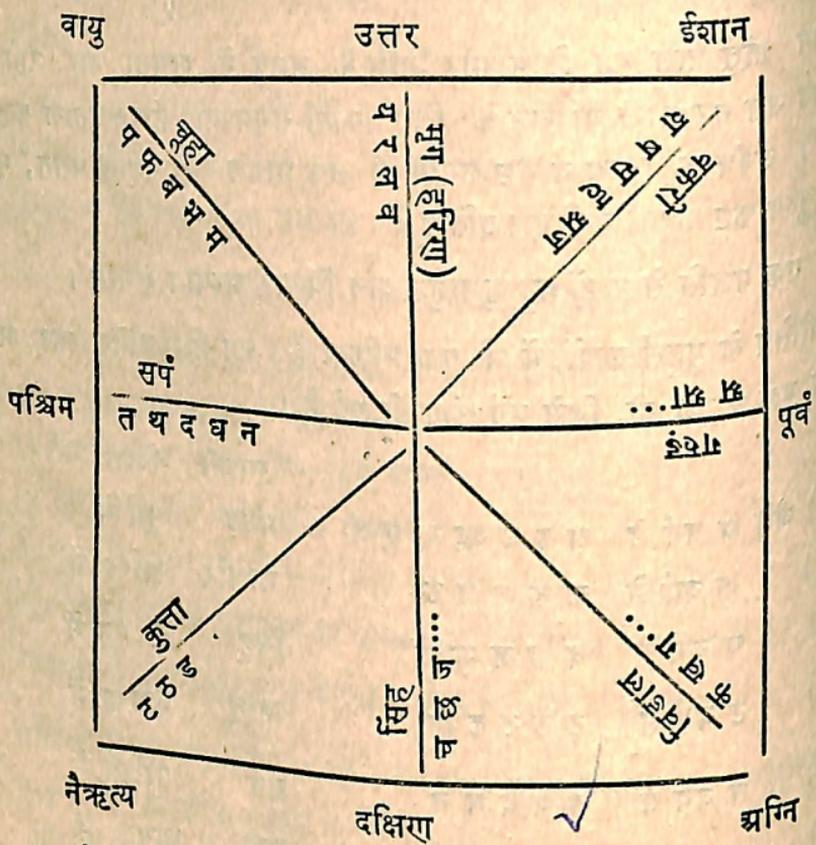
उपयोग :—जिन दो व्यक्तियों राष्ट्रों आदि का परस्पर का सम्बन्ध देखना हो तो निम्न उदाहरण से स्पष्ट होता है। इस प्रकार अ वर्ग संख्या १, क २, च=३, ट=४, त=५, प=६, य=७, श वर्ग=८ होती है।

जिन दो नामों का ऋण-धन ज्ञात करना है, उनमें अपनी द्विगुणित

संख्या में प्रतिद्वन्दी की वर्ग संख्या जोड़जर आठ से भाग देकर शेष ग्रहण किया जाता है। अधिक शेष जिसका बचे वह दूसरे से (का) ऋणी है।

भारतवर्ष का प वर्ग है विपरीत दिशा वायु के क वर्ग से आरम्भ होने वाले देशों के साथ सदा स्वाभाविक वैर रहेगा।

पाकिस्तान एवं भारत दोनों का एक ही वर्ग है, अतः दोनों एक ही राष्ट्र थे आगे भी एक होंगे।

भारतवर्ष का प वर्ग, ६ × २=१२ + चीन का च वर्ग = ३ = १५ ÷ ८=७

एवं चीन का च वर्ग = ३ × २ = ६ + भारतका प वर्ग ६ = १२ ÷ ८ =४, जिसका अधिक अंक होता है वह ऋणी रहता है, इससे भारतवर्ष पर चीन का दबाव मालूम पड़ता है। व्यापारियों के लिए किस नाम से किस नगर देश में लाभ होगा ? इत्यादि अवसरों पर उक्त पद्धति अधिक सत्य की ओर देखी गई है। विपरीत नगर देश में व्यापार करने से लाभ की जगह घर से देने की स्थितियाँ देखी गई हैं, लेने के देने पड़े हैं। अतः, उक्त पद्धति जो सर्व साधारण के समझने की है उसे उपयोग में लाना चाहिए। यात्रा युद्ध आदि में भी उक्त पद्धति अपनाई जाती है।

विश्व प्रसिद्ध चार राष्ट्र (१) भारतवर्ष (२) पाकिस्तान (३) चीन और (४) नयपाल के मात्रादिक प्रसिद्ध आठ स्वरों की साधनिका के साथ साथ—

भारत—देश के विभिन्न क्षेत्रों में विख्यात

(१) राजनैतिक क्षेत्र
(२) शिक्षा (कला कौशल विज्ञान) क्षेत्र
(३) सामाजिक क्षेत्र
(४) व्यवसाय के क्षेत्र
(५) साधारण (अप्रसिद्ध) कृषक, मजदूर और भृत्यों के क्षेत्र
(६) वीतराग सन्तों आदि के क्षेत्रों से

कुछ नामों की स्वर साधनिका को, उदाहरण स्वरूप से यहाँ दिया जा

रहा है। इन नामों के मात्रादिक आठ स्वरों की परिगणना के सा
उनका अष्टविध कालों से समन्वय कर-अतीत वर्तमान और भविष्य क
शुभाशुभ फल निवेचना स्वर शास्त्रीय पद्धति से यहाँ पर की जा रही है।

स्वरशास्त्रीय ज्योतिष की लुप्तप्राय इस पद्धतिको प्रश्रय देने में, उच
नामों के व्यक्तिविशेष से शायद उत्साह प्राप्त होगा, जिससे यह शोध-का
अग्रेसरित करने के लिए उनका सहयोग भी प्राप्त होगा। ऐसी शुभाशा है।

ध्यान देने की बात

विभिन्न क्षेत्रों में संलग्न एक नाम के अनेक व्यक्तियों के शुभाशुभफल
में उनके स्तर के अनुसार फलादेश की एकता होती हुई भी वर्णजाति
सम्प्रदाय औरकार्य-आदि की विभिन्नता से फल में विभिन्नता होगी। एक मज
दूर के नाम के समान नाम के एक शिक्षा शास्त्री दोनों की कोई दिन चर्या, य
उत्तम फल की आती है, तो मजदूर अनायासेन उस दिन अच्छा सञ्चय करेगा
बुद्धिजीवी की बौद्धिक प्रतिभा प्रस्फुरित होने में विलम्ब नहीं लगेगा
ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए।

प्रत्येक विध स्वर गणना के काल क्रम में, पञ्चम स्वर की मृत्यु संज्ञा दी
गई है। अतः प्रत्येक तिथि-पक्ष-मास-ऋतु-अयन-वर्ष-१२ वर्ष में प्रत्येक ना
का पाचवाँ मृत्यु स्वर अवश्य आवेगा, तो क्या उस वर्ष मास तिथि......
मृत्यु का आदेश दिया जाय? कदापि नहीं तत्तसमय कुछ क्लेश, मनोव्यथा
अकारण वैर, अकस्मात् अकारण अनावश्यक व्यय-आदि हो सकता है। मृ
के विचार के लिए अवस्था के अनुसार आयुष्य के प्रथम खण्ड ३२....६४ व
तक द्वितीय खण्ड ३६ से ७२ तक तथा ४० वर्ष से=४०×२..३=८०, १२
आदिक वर्ष में मृत्यु होगी।

दिवंगत देश रत्नों के नाम से आठ स्वरों का ज्ञान

	१	२	३	४	५	६	७	८	
	मात्रा	वर्णं	ग्रह	जीव	राशि	नक्षत्र	पिण्ड	योग	मृत्यु
(१) ब्रह्मर्षि महामना पं० मदन-मोहन मालवीय	अ१	इ२	अ१	ओ५	इ२	इ२	उ३	अ१	ओ
(२) महात्मा मोहनदास कर्मं चन्द्र गांधी	ओ५	इ२	अ१	ओ५	इ२	इ२	इ२	ए४	उ
(३) दानवीर सन्त युगलकिशोर विड़ला	उ३	उ३	अ१	ओ५	ए४	ए४	अ१	अ१	ओ
(४) कनेडी	अ१	अ१	इ२	ओ५	अ१	अ१	अ१	इ२	अ
(५) महामहोयाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी	उ१	ए४	ओ५	ए४	ओ५	ओ५	अ१	ओ५	ए
(६) होमी जहाँगीर भाभा	ओ५	ओ५	इ२	अ१	इ२	इ२	उ३	ओ५	ए
(७) श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर	अ१	ए४	ए४	ए४	उ३	उ३	ओ५	ए४	उ
(८) श्री पं० जवाहर लाल नेहरू	अ१	इ२	ओ५	इ२	ए४	ए४	उ३	अ१	ओ

स्थूलतया—ता० १० दिसम्बर ६१ से २० अक्टोबर ७३ तक ओ, द्वादश वार्षिक स्वर में जिन जिनके योग स्वर अ हैं उनसे पाचवाँ द्वादश वार्षिक अ मृत्युस्वर है, अतः—

३ और ८ नामों का श्री जवाहरलाल नेहरू और श्री युगलकिशोर बिड़ला इन दो महापुरुषों का निधन सन् ६१ से ७३ के बीच में (आसन्न आरम्भ ६४ से ६७ में) हुआ है।

(१) महामना पं० मदनमोहन मालवीय जी का निधन १२-११-४६ को उनके योग स्वर अ से युवा स्वर के अन्त वृद्ध स्वर के प्रारम्भ ए[४] काल के वैकल्य और शोषा और शान्तामिधा अवस्थाओं में शरीर शान्त हुआ है।

(२) सन् ३६-३७ से सन् ४७,४८ तक चलने वाले १२ द्वादश वार्षिक उ स्वर की दशा—मोहनदास कर्मचन्द्र गांधी के योग स्वर ए से (ए[१] ओ[२] अ[३] इ[४] उ[५]) पांचवीं मृत्यु स्वर की समाप्ति की क्षया नामक १२ वीं अवस्था में शरीर क्षय हुआ है।

(७) रवीन्द्रनाथ टैगोर का भी ए स्वर द्वादश वार्षिक से ए ओ अ इ उ भी प्रायः सन ३६, ३७ से ४७–४८ सन के बीच में निधन सभय सम्भवतः छिन्ना वन्धा या रिपुघातकरी अवस्थाओं में निधन हुआ होगा।

(४) कनेडी के पूरे नाम से स्वर साधनिका नहीं की जा सकी है तथापि केवल कनेडी नाम से इ योग स्वर से ओ वृद्ध स्वर के प्रारम्भ की च्युतेन्द्रिय अवस्था में निधन हुआ है।

(६) होमी जहाँगीर भाभा के योग स्वर ओ से, उनकी मृत्यु के ६५–६७ में ओ द्वादश वार्षिक स्वर वाल स्वर होता है, वाल स्वर की प्रवास अवस्था की समाप्ति और मृता अवस्था के प्रारम्भ में प्रवास में ही मृत्यु हुई है।

(५) म० म० पं० सुधाकर द्विवेदी का निधन भी सन् १६१० से २२ के बीच हुआ होगा।

विशिष्ट, साधारण तथा प्रकृति के आश्रय के कुछ नामों से साधित स्वरों की तालिका-तथा फलादेश—

(व्यवसाय शिक्षा-क्षेत्र, राजनीति-क्षेत्र साधारण सामाजिक क्षेत्रों के)

	मात्रा घण्टे घण्टे के लिए	वर्ण प्रत्येक तिथि को	ग्रह प्रत्येक पक्ष	जीव प्रत्येक मास	राशि प्रत्येक ऋतु	नक्षत्र प्रत्येक अयन	पिण्ड प्रत्येक सम्बत्सर	योग प्रत्येक १२ वर्ष में
(१) श्री सर्वपल्ली सर राधाकृष्णन्	अ १	ए ४	ए ४	इ २	उ ३	उ ३	ओ ५	२२/५ शे० २ इ
(२) ,, डा० त्रिगुण सेन	इ २	उ ३	ए ४	ओ ५	उ ३	उ ३	उ ३	२३/५=शे० ३ =उ
(३) ,, दौलतराम कोठारी	ओ ५	ओ ५	उ ३	उ ३	ओ ५	अ १	उ ३	२५/५=५ शे० =ओ
(४) ,, जाकिर हुसेन	अ १	इ २	ओ ५	इ २	ए ४	ए ४	ओ ५	२३/५=३ शे० =उ
(५) ,, पण्डितराज राजेश्वर शास्त्री	अ १	ए ४	ए ४	इ २	उ ३	उ ३	अ १	१८/५=शे० ३ =उ
(६) ,, म. म. पं. गोपीनाथ कविराज	ओ ५	उ ३	ओ ५	अ १	ओ ५	ओ ५	अ १	१५/५=शे० ५ =ओ
(७) डा० अमरचन्द्र जोशी	अ १	अ १	अ १	इ २	अ १	अ १	ओ ५	१२/५=शे० २ =इ

(८) श्री पं० गौरीनाथ शास्त्री	ओ ५	उ ३	ओ ५	उ ३	ओ ५	ओ ५	इ २	२८/५ = ३ शे० = उ
(९) ,, मोरार जी देसाई	ओ ५	इ २	अ १	इ २	इ २	इ २	ए ४	८/५ = शे० ३ = उ
(१०) ,, पृथ्वीराज कपूर	इ २	उ ३	इ २	इ २	उ ३	उ ३	ए ४	१९/५ = शे० ४ = ए
(११) ,, चरण सिंह	अ १	ओ ५	उ ३	इ २	ओ ५	अ १	अ १	१८/५ = ३ = उ
(१२) ,, भक्तदर्शन	अ १	अ १	उ ३	अ १	ए ४	ए ४	अ १	१५/५ = शे० ५ = ओ
(१३) ,, रमाप्रसाद गोयन्का	अ १	ए ४	ए ४	उ ३	उ ३	उ ३	इ २	२०/५ = ५ शे० = ओ
(१४) ,, डा० सम्पूर्णानन्द	अ १	ए ४	ओ ५	अ १	ओ ५	ओ ५	अ १	२२/५ = शे० २ = इ
(१५) ,, बाबूलाल ढंढनियाँ	अ १	अ १	ए ४	उ ३	अ १	अ १	अ २	१२/५ = शे० २ = इ २
(१६) श्री इन्दिरा गाँधी	इ २	इ २	ए ४	उ ३	अ १	अ १	ए ४	१७/५ = २ = इ
(१७) श्री श्रीप्रकाश	इ २	इ २	इ २	अ १	उ ३	उ ३	उ ३	१६/५ = १ शे० = अ
(१८) महाराज श्री विभूतिनारायण सिंह	इ २	अ १	ए ४	ओ ५	अ १	अ १	इ २	१६/५ = १ शे०

(१९) श्रीमती हीरा देवी जोशी	इ २	ओ ५	इ २	ए ४	इ २	इ २	ए ४	२१/५ = शे० १ = अ
(२०) श्री कुमारी पद्मा जोशी	अ १	उ ३	इ [illegible]	इ २	उ ३	ए ४	उ ३	१८/५ = ३ शे० = उ
(२१) श्री पं० लल्लू	अ १	ओ ५	अ १	अ १	अ १	अ १	ए ४	१४/५ = शे० ४ = ए
(२२) महामहिम पं. मधुसूदन सरस्वती	अ १	इ २	अ १	ए ४	इ २	इ २	उ ३	१५/५ = शे० ५ = ओ
(१३) विश्वाधार श्री विश्वनाथ सर्वज्ञ	इ २	अ १	ए ४	उ ३	अ १	अ १	ओ ५	१७/५ = शे० २ = इ
(२४) श्री केदारदत्त जोशी	ए ४	अ १	इ १	इ २	इ २	इ २	ओ ५	१८/५ = ३ शे० = उ
(२५) सेवारक्त सेवक श्री पं. आदित्यनाथ पाण्डेय	अ १	अ १	अ १	ए ४	अ १	अ १	ए ४	१३/५ = २ शे० = उ

	१ मात्रा	२ वर्ण	३ ग्रह	४ जीव	५ राशि	६ नक्षत्र	७ पिण्ड	८ योग
(२६) श्री पं० हजारी द्विवेदी	अ १	ओ ५	पुनर्वसु च. १ मिथुन इ२	ए ४	इ १	इ १	ए ४	योग § १८ ÷ ५ शे = उ३§
(२७) श्री पं० जनार्दन पाण्डेय	अ १	इ २	उ. षा. ३ च मकर ओ ५	उ ३	ए ४	ए ४	ए ४	$\frac{२३}{८}$=३ ‡ शे० उ ३ ‡
(२८) श्री सुन्दर लाल जी जैन	उ ३	ए ३	शत. ४ कुम्भ ओ ५	ओ. ५	ओ ५	ओ ५	इ २	$\frac{२८}{८}$=३ γ शे० उ ३ γ
(२९) श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन	अ १	इ २	अनु १ च. वृश्चिक अ १	अ १	ए ४	ए ४	ओ ४	$\frac{१९}{८}$ = ३π शे० उ ३ π
(३०) श्री पं० मधुकर भट्ट	अ १	इ २	मघा. १. सिंह अ १	ओ ५	इ २	इ २	ए ४	$\frac{१७}{८}$ = २॥ शे० इ २ ॥

"ग्रन्थकारों" ने उदाहरण से स्वर-साधनिका में "यज्ञदत्त" या देवदत्त" इन दो ही नामों को अनाया है अत: यहाँ स्वरसाधन प्रक्रिया को सरल और सुगम किया जा रहा है, अनेक नामों के उदारणों को देखकर प्रत्येक जिज्ञासु अपने या अपने मित्रों (नर-नारियों) के नामों से मात्रादि-योग स्वर तक स्वरों की साधनिका से २४ मिनिट के छोटे समय से १२ वर्ष या १२×२... ३, ४...५...१०, १२० वर्ष तक के शुभाशुभ भविष्य का स्वयं अनुभव कर सकेगा।

§जीव = ४ + १ + ३ + २ + २ + ४ + १ + २ + १ + ३ + २ + ३ + १ = २९/५
= ४ शे. = ए

§पिण्ड = ५ + २ + ४ + ३ + ४ + ४ + ५ + १ + १ + २ + १ + १ + १ = ३४/५
= ४ = ए

‡जीव = ३ + १ + ५ + २ + २ + ३ + १ + ५ + १ = २३/५ = ३ शे. = उ

‡पिण्ड = २ + १ + २ + १ + ४ + ५ + १ + २ + १ = १९/५ = ४ शे. = ए

γजीव = ४ + ५ + ५ + ३ + १ + २ + १ + ३ + २ + ३ + १ = ३०/५ = ५ शे = ओ

γपिण्ड = ४ + ३ + २ + ५ + १ + ४ + १ + ५ + १ + ५ + १ = ३२/५ = २ शे.

¶जीव = ५ + १ + २ + ११ + ५ + ३ + २ + १ + १ + ५ + ५ + २ + २ + १
= ४६/५ = अ १

¶पिण्ड = २ + १ + ४ + ४ + २ + ५ + ४ + १ + १ + ३ + २ + १ + ४ + १
= ३५/५ = ० = ओ

||जीव = ५ + १ + ४ + ५ + १ + १ + २ + १ = २०/५ = ० शे. = ५ = ओ

||पिण्ड = २ + १ + १ + ३ + १ + १ + ४ + १ = १४/५ = ४ शे. = ए

इन ३० नामों के मात्रादि आठ स्वरों का १२ वर्षादि २, २ घण्टे तक के कालों से समन्वय किया जा रहा है।

इन नामों में मात्रादि आठ स्वरों की जहाँ एक रूपता है वहाँ उन नामों के भविष्य फल समान होंगे, जो उन नामों के कार्य क्षेत्र में उन्नति या अवनति शुभ या अशुभ, प्रकाश या अन्धकार का सूचक होगा।

फल मीमांसा में प्रत्येक नाम का उल्लेख न कर इन नामों की १—३० तक की क्रमिक संख्या संकेत से विचार किया जा रहा है जैसे—२४ संख्या के केदारदत्त का शुभाशुभ, फल १३ संख्या के रमाप्रसाद गोयनका के शुभाशुभ की आठों कालों की विभिन्नता की तरह, इत्यादि समझिए।

दिसम्बर ई० सन् ६१ से सन् १९७३ ई० तक ओकार स्वर का भोग

काल है, यह उल्लेख पूर्व में जगह-जगह पर किया जा चुका है। जिन-जिन नामों का योग स्वर उ है, उन-उन नामों से ओ यह तीसरा स्वर युवा स्वर होता है। अतः इन नामों का ६१, ७१ वर्ष के भीतर विशेष उत्थान अपने-अपने क्षेत्रों में होगा, विशेषता से ६१, ६२ में उत्साह, ६२, ६३ में धैर्य, ६३, ६४ में उग्रता, ६४, ६५ विजय, ६५, ६६ पराक्रम वृद्धि, ६६, ६७ में संकल्प में तन्मयता, ६७, ६८ में इच्छा वृद्धि, ६८, ६९ में तुष्टि, ६९, ७० में सुख, ७०, ७१ में सिद्धि, ७१, ७२ में धनका विशेष लाभ, ७२, ७३ में मनः शान्ति रहेगी।

यह फल क्रम संख्या २, ४, ५, ८, ९, ११, २०, २४,२५, २६, २७, २८ और २९ नामों के महानुभावों की होगी।

योग स्वर अ नाम की क्रम संख्याओं १६, १७, १८, १९, के लिए ये समय प्राय; ६७, ७१, ७३, तक अच्छे नहीं है। वृद्धावस्था के आसन्न व्यक्तियों को शरीर भय, कम-अवस्था या युवा, कुमार अवस्था के व्यक्तियों को शारीरिक या मानसिक या पारिवारिक या आर्थिक या राजकीय कष्ट हो सकते हैं।

शेष संख्याओं में १०, १९, २५, २१ के लिए साधारण शुभ, १, ७, १४, १५, १६, २३, ३० के लिए ½ सफलता ६१, ७३ तक।

३, ६, १२, १३ और २२ के लिए मानसिक मानवीय उत्तम शुभ विचारों की प्रगति तथा वैराग्य की भावनाओं का, रहेगा।

१६ नवम्बर सन् ६७ से १२ नवम्बर सन् १९६८ तक वृहस्पति के वर्ष का फलादेश=

पिण्ड स्वर से संबत्सर स्वर के विचार में, उक्त समय (१६-११-६७ से १२-११-६८) में सम्वत्तर स्वर ओ की प्रगति है। अतः उ पिण्ड स्वर के नामों के लिए (२, ३, १७, २०, २२ क्रम संख्या जिन महानुभावों की है) उक्त समय, उत्साह धैर्य जय और सन्तोष के लिए उत्तम रहेगा।

क्रम संख्या ५, ६, ११, १२, १४, १५ के लिए वर्ष कुछ नैराश्य-प्रद प्रतीत होता है। १, १३, १८, २९ इन नामों के लिए मन्त्रणा आदि में सफलताके साथ बीतराग की भावनाएँ प्रबुद्ध हो सकती हैं

९, १०, १६, १९, २१, २५, २६, २७ और २९ क्रम संख्या, लाभालाभ सुखदुख आदि में न हर्ष और न शोक ही रहेगा।

१, ४, ७, २३, २४, २९ यदि ये वास्तविक अवस्थाओं में २४, ३६, ४८, ६०, ७२, ८४ किसी भी वर्ष की अवस्था के क्यों न हों, ये कार्य क्षेत्र में बालक की सी त्रुटि कर सकते हैं।

अयन ६ महीने

समय शीघ्र बदल रहा है, दृश्य पञ्चाङ्गों के (वेध) अधिक अंशो को प्रतिलिपियाँ अदृश्य पञ्चाङ्ग करते हुए भी मुख से दृश्य विरोध प्रकट करते हैं, यह विवाद का विषय है। पाठक फलादेश से स्वयं निर्णय करेंगे कि उन्हें २३ दिसम्बर से २३ जून का उत्तरायण, २३ जून से २३ दिसम्बर का दक्षिणायन अपेक्षित होगा अथवा १४ जनवरी से १६ जुलाई का उत्तरायण १६ जुलाई से १४ जनवरी का दक्षिणायन। जिन नामों के क्रमांक ६, ८, १४, २८ उनके लिए उत्तरायण समय उत्तम, १, २, ५, १०, १३, १७ के लिए उत्तरायण उत्तम सा नहीं रहेगा। ४, १२, २० २७, २९, के लिए दक्षिणायन उत्तम, ९, १९, २२, २४, २६ और ३० क्रमांकों के लिए दक्षिणायन नेष्ट रहेगा।

शेषांकों के उत्तरायण दक्षिणायन प्रायः सामान्य से रहेंगे।

ऋतु काल का शुभाशुभ फल (राशि स्वर से)

प्रत्येक ई० सन् के

ए–अ १३ अप्रैल से २६ जून तक ४, १२, २७, २९ नामों के लिए उत्तम समय, ३, ६, ८, ११, १४, २८ के लिए नेष्ट

ओ–इ २७ जून से ९ सेप्टे ,, ३, ६, ८, ११, १४ उत्तम ७, १५, १६, १८, २१, २३, २५ नेष्ट समय

अ–उ १० ,, २१ नवम्बर तक, ७, १५, १६, १८, २१, २३, २५ नामों के लिए उत्तम ९, १९, २२, २४, २६, ३० के लिए नेष्ट

इ-ए २२ नवम्वर से ३१ जनवरी ,, ६, १६, २२, २४, २६, ३० नामो के लिए उत्तम समय, १, २, ५, १०, १३, १७, २० नामों के लिए नेष्ट

उ-ओ १ फरवरी से १२ अप्रैल तक १, २, ५, १०, १३, १७, २० नामों के उत्तम समय, ४, १२ के लिए नेष्ट रहेगा।

उत्तम और नेष्ट ऋतु की तिथियों के अतिरिक्त की तारीखें सवं साधारण के लिए साधारण रहेंगी।

मास का शुभाशुभ (चान्द्र मास) अपने जीव स्वर से।

अ-ए से तीसरा—भाद्रपद मार्गशीर्ष और वैशाख मास

१६, २२, २५, २६ क्रमाङ्कों के लिए उत्तम 'इ' से पाचवाँ (जीव स्वर से) १, ४, ५, ७, ६, १०, ११, २० २४ के लिए अत्यन्त नेष्ट रहेंगे।

इ-ओ से तीसरा—अषाढ़ श्रावण आश्विन

२, १८, २८, ३० क्रमाङ्कों के लिए उत्तम, उ से पाँचवाँ ३, ८, १३, १५, १६, २३, २७ क्रमाङ्कों के लिए नेष्ट

उ-अ से तीसरा— चैत्र पौष

६, १२, १४, १७, २१, २६ के लिए उत्तम, ए से पाँचवाँ १६, २२, २५, २६ नेष्ट ए-इ से तीसरा--ज्येष्ठ कार्त्तिक

१, ४, ५, ७, ६, १०, ११, २०, २४ के लिए उत्तम, ओ से पाचवाँ २, १८, २८, ३० के लिए नेष्ट रहेगा।

ओ-उ से तीसरा—माघ फाल्गुन

३, ८, १३, १५, १६, २३, २७ के लिए उत्तम, अ से पाँचवाँ-६, १०, १४, १७, २१, २६ के लिए अत्यन्त नेष्ट हैं। उत्तम और नेष्ट मासों के अतिक्ति शेष मास सवं साधारण के लिए सवं साधारण हैं।

१५ तिथियों का पक्ष फल

अपने ग्रह स्वर से विचारना चाहिए।

कृष्ण पक्ष में अ स्वर, अपने ग्रह स्वर ए से तीसरा जिन क्रमांकों का १, २, ५, १३, १५, १६, १८, २३ है, उनके लिए कृष्ण पक्ष उत्तम रहेगा।

ग्रह स्वर ओ से दूसरा ४, ६, ८, १४, २७, २८ के लिए कुछ अच्छा रहेगा।

७, ९, २१, २२, २५, २९, ३० नामों के लिए वे सही काम समझते हुए भी धोखे से गलती करेंगे।

१०, १७, १९, २०, २४, २६ (पाचवाँ) के लिए कृष्ण पक्ष अत्यन्त अनिष्ट का रहेगा।

३, ११, १२, के लिए केवल गूढ़ मन्त्रणा के लिए उत्तम रहेगा।

शुक्ल पक्ष में इ स्वर, जिन क्रमांकों का ग्रह स्वर ओ ४, ६, ८, १४, २७, २८ है उनके लिए शुक्ल पक्ष अत्यन्त उत्तम रहेगा।

७, ९, २१, २२, २५, २९, ३० साधारण अच्छा रहेगा।

१०, १७, १९, २०, २४, २६ क्रमांकों के नामों के लिए सटीक तथ्य को समझते हुए भी विपरीत कार्यवाही करने की बुद्धि से हानि होगी।

३, ११, १२, के लिए नितान्त अनिष्ट प्रद रहेगा।

१, २, ५, १३, १५, १६, १८, २३ क्रमांकों की, अनूभूत बुद्धि कौशल से परिवार समाज या जनता के सुन्दर हित मति की उपादेयता होगी ;

दोनों पक्षों में

तिथियों में अपने मात्रा स्वर से शुभाशुभ जानना चाहिए।

(१।६।११) प्रतिपदा षष्ठी एकादशी तिथियाँ १, ५, १३, १४, २८ के लिए उत्तम ४, ९, १६, १७, २२, २७, २९, ३० के लिए विशेष नेष्ट हैं।

(२।७।१२) द्वितीया सप्तमी द्वादशी तिथियाँ ३, ११, १९, २१, २६ के लिए सर्वोत्तम २, ६, ८, १०, २०, २७, २९, ३० के लिए विशेष नेष्ट हैं।

(३।८।१३) तृतीया अष्टमी त्रयोदशी तिथियाँ ७, १२, १५, १८, २३, २४, २५ के लिए सर्वोत्तम १, ४, १३, २४, २८ क्रमांकों के लिए विशेष नेष्ट हैं।

(४।९।१४) चतुर्थी नवमी चतुर्दशी तिथियाँ ४, ९, १६, १७, २२, २७, २९, ३० क्रमांकों के लिए विशेष उत्तम एवं ३, ११, १९, २१, २६ क्रमांकों के लिए विशेष नेष्ट हैं।

५।१०।१५, या ३० पञ्चमी दशमी पूर्णिमा और अमावास्या २, ६, ८, १०, २०, क्रमांकों के लिए उत्तम एवं ७, १२, १५, १८, २३, २४, २५ के लिए विशेष नेष्ट हैं।

२, २ घण्टे के क्रम से चलने वाले घटी स्वर का उदाहरण प्रश्न कर्त्ता जिज्ञासु की प्रश्न कालीन समय से ही होगा।

उक्त फलादेश की सटीक तथ्यता या तत्थ्य हीनता जो हो यथार्थ सम्मतियों से उल्लिखित महानुभाव प्रोत्साहन या जो चाहें देंगे। ता० १५ अगस्त सन् १९६८ को भाद्रपद मास सप्तमी तिथि गुरुवार के दिन सायंकाल ६½ बजे तक पञ्चाङ्गों में किसी में लिखी है। यह तिथि ता० १४-८-६८ बुधवार के सायंकाल ४ बज कर ५२ मि० से प्रारम्भ होकर ता० १५ के सायं ६½ बजे तक है। सप्तमी का पूरा मान २५ घण्टे ३६ मिनट तक है।

भारत की राजधानी दिल्ली में प्रातः काल ९ बजे श्री इन्दिरा गांधी तथा काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में श्री अमरचन्द्र जोशी, राष्ट्रीय पताका फहरावेंगे। ये और जनता भी ध्वजा का अभिवादन करेगी। इस समय सप्तमी तिथि का व्यतीत समय १६ घण्टा ८ मिनिट होता है। बुधवार के सायं ४।५२ बजे से "दिने वर्णां स्वरो ग्राह्यः" से इन्दिरा के वर्णां स्वर इ, तथा अमर चन्द्र।

श्री इन्दिरा के वर्णां स्वर इ से सप्तमी तिथि का उ स्वर बाल स्वर में राजधानी का, अमरचन्द्र जोशी के कुमार स्वर में विश्व-विद्या की राजधानी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में झण्डोतोलन होगा।

तिथि का भुक्त घण्टादि १६।८ × ५/२ = ४० घटी २० पल के २४०० + २० = २४२० पलों में ५।२७ का भाग देने से (२ घण्टा १० मि० ४८ से.) या ३२७ पल का भाग देने से ३२७)२४२०(७ सात स्वरों के वीतने पर ८ वें स्वर में झण्डाभिवादन आदि कार्य होगा।

२२८९
———
१३१

अर्थात् सप्तमी तिथि के इ स्वर को १ स्थान देने से—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
इ उ ए ओ अ इ उ ए आठवां ए स्वर होगा।

फलित हुआ कि इ स्वर के साम्राज्य में ए स्वर का तात्कालिक राज्य चल रहा है।

श्री इन्दिरा के वर्ण स्वर इ से तिथि स्वर बाल में तत्काल के ए युवा स्वर के साम्राज्य का झण्डोतोलन अभिवादन आदि से राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की ज्ञान विज्ञान की समृद्धि अच्छे रूप में वर्धमान होगी। दोनों अपने कार्य में सफल होंगे, गौरव वृद्धि होगी।

श्री इन्दिरा का व्यक्तिगत महत्त्व शुभोन्मुख एवं श्री जोशी का वैयक्तिक महत्त्व मन्त्रणा दीक्षा आदि से सफलता की ओर जा सकेगा।

झण्डा किस दिशाभिमुख होकर किसने फहराना चाहिए। दोनों के नामों के स्वरों से उत्तराभिमुख होकर झण्डोतोलन कार्य अतीव शुभद रहेगा।
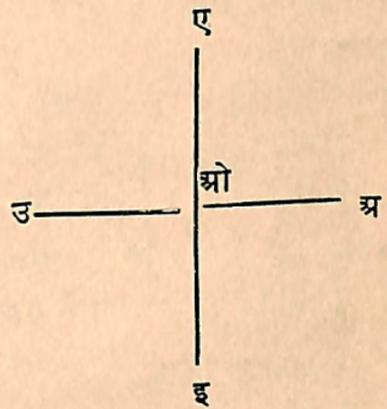
विशेष—काशी के सूर्य घड़ी के सूर्योदय से उक्त काल कहा गया है। वस्तुतः दिल्ली के अक्षांश २८।२९, पलभा ६।३३ पल कर्ण १३।४१ ($\sqrt{(१२)^{2} + \text{पलभा}^{2}}$ = पल कर्ण) दिल्ली मध्य रेखा से पूर्व ४'।१४" काशी से ३२' पश्चिम, काशी से पश्चिमोत्तर ३४°।३६ दिल्ली से काशी पूर्व दक्षिण ३२' के उपकरणों से ३२ मि × $\frac{५}{२}$ = $\frac{११५}{२}$ = ५७½ पल का अन्तर पड़ता है। जो ८ वीं स्वर की दशा १३१ पल बीती है वह ३२७–१३१ = १९६ पल या ३ घटी १६ पल शेष रहने से कोई अन्तर नहीं पड़ेगा इससे आगे और सूक्ष्म चलने में अन्तर पड़ सकेगा। ग्रहगणित गौरव से अलम्।

१३।४१
१२
६।३३
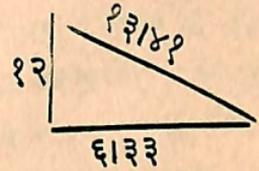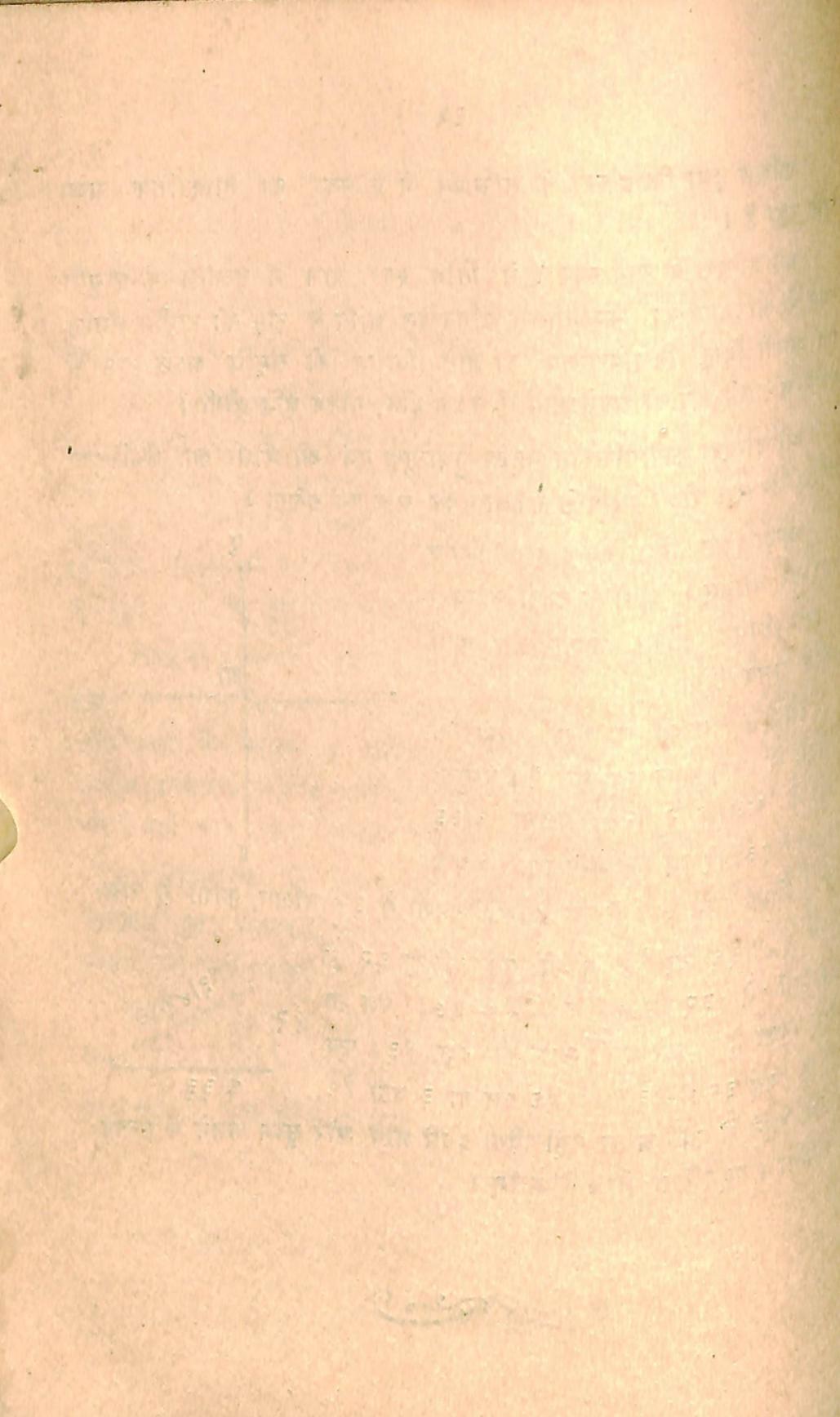
प्राणी (जीव) के हृदय में, हंस-चार सोऽहं की भावना—

जीव के श्वास प्रवेश नाभि में – सूर्य तत्त्व दूषित वायु को दूर करता है तथा चंद्र तत्त्व वायु प्रवेश के लिए होता हैं। परमहंस योगी उक्त सोऽहम्-या हंसः भाव से प्राण और अपान की एकरूपता की साधनिका से ब्रह्मीभूत होता है इस प्रक्रिया से ह और ठ, या-रा और म, या-शि और व, या-ता और ल की एकता से हठ, राम, शिव और ताल या अनेक प्रकार की शब्द सृष्टि होती रहती है।

"सिद्धसिद्धान्त" पद्धति में—

हकारः कीर्त्तितो सूर्यः मकारश्चन्द्र उच्यते

हकारः निर्गमे प्रोक्तः सकारोऽन्तः प्रवेशने—हंसः,

तथा "गारुड" में, रकारेण वहिर्याति मकारेण विशेत्पुनः

राम रामेति रामेति जीवः जपति सर्वदा" कहा गया है।

स्वर, आत्म स्वरूप भी कहा है, जो योगगम्य है, स्वर शास्त्र में, चारों वेद शास्त्रान्तर, संगीत के साथ सारा त्रैलोक्य स्वर में स्थित है।

स्वरे वेदाश्च शास्त्राणि स्वरे गन्धर्वमुत्तमम्

स्वरे च सर्वं त्रैलोक्यं स्वरमात्मस्वरूपकम्"

इत्यादि

("शिव स्वरोदय")

पञ्च तत्त्वात्मक (आधुनिक विज्ञान के १०९ तत्त्वात्मक) शरीर में दृढ़ योगी सञ्जीवन तत्त्व को ही ग्रहण करता है, निर्जीवन तत्त्व को शरीर से बाहर करते हुए अमृतत्वको प्राप्त होता है। किस समय किस तत्त्व की प्रधानता हो रही है, यह योग गम्य या गुरु गम्य है। तथापि सिद्धसाधक जन नासिका में दक्षिण वाम स्वरों की गति विधि से परिचित होते रहते हैं।

कुछ लोग एक शंकु १२ अंगुल की लम्बी चिक्कन लकड़ी या पत्थर से नासिका के अग्रभाग (मुह) से श्वास की गति का ज्ञान कर लेते हैं।

(१) वाम या दक्षिण नासापुट के श्वास गमन से पार्थिव-तत्त्व (पृथिवी) की प्रधानता।

परिशिष्ट [क]

श्वास से प्रवेश-निर्गम स्वर

सोऽहम्, हं सः, शि व, ता ल रा म आदि—

शरीर के नाभि में कुण्डलिनी नाम की महाशक्ति का एक केन्द्र है। शक्ति-केन्द्र से २० नाड़ियाँ (१० ऊपर और १० नीचे) चार सीधी (दो दाहिने और दो बायीं) गई हुई हैं। ये २४ प्रधान नाड़ियाँ (धमनियाँ) हैं। वास्तव में स्थूलतया "शतञ्चैका हृदयस्य नाड्य:" १०१ नाड़ियों की और भी अनेक सहायक नाड़ियाँ शरीर में रक्त प्रवाह (वायु वेग) श्वास के आदान प्रदान के माध्यम से कर रही हैं।

(१) इडा (२) पिंगला (३) सुषुम्ना (४) गान्धारी (५) हस्तिजिह्विका, (६) पूषा, (७) यशा, (८) व्यूषा (९) कुहू, और (१०) शंखनिका प्रधान दश नाड़ियों के ये नाम हैं।

इडा नाडी का नाम चन्द्र-नाड़ी और पिंगला का नाम सूर्य-नाडी है। सुषुम्ना का नाम शम्भु नाड़ी है।

चन्द्रनाड़ी शीत प्रधान है, शक्ति इसकी अधिष्ठात्री है, इसलिए यह वाम नाडी=वाम स्वर रूप में है। सूर्य नाड़ी उष्ण प्रधान, शिव अधिष्ठान, दाहिनी नाड़ो या दक्षिण स्वर, श्वास की होती है। वैदिक परम्परा में इन्हें "अग्नि सोमौ" कहा है। आज का विज्ञान इस प्रकृत क्रम को सम्भवतः औक्सीजन (०) कारवनडाई ओकसाइड (Co_2) से कहता होगा।

जिस प्रकार सूर्य चन्द्रमा अग्नि-सोम हैं इसी प्रकार सौर मण्डल में, मंगल पार्थिव तत्त्व (पृथिवी से उत्पन्न कुज) बुध वाक् तत्त्व, बृहस्पति श्रेष्ठमतिक जीव तत्त्व, शुक्र तामस और ज्ञान तत्त्व, और शनि दुःख स्वरूप वायु तत्त्व है।

(२) नासापुट के ऊपर श्वास के आदान प्रदान से अग्नि तत्त्व
(३) नासापुट से नीचे से बहते हुए वायु से जल तत्त्व
(४) नासिका के दोनों पार्श्व से श्वास गमनागमन से वायु तत्त्व
(५) नासिका के मध्य से प्रचलित वायु, जिसे स्वरज्ञ संक्रमण कालीन वायु भी कहते हैं, उसे आकाश तत्त्व की प्रधानता समझते हैं।

हृदय कमल के मुख्यतया आठ विभागों के भी प्रत्येक विभाग के दो विभागों के १६ भागों में ५ तत्त्वों का एक पाली में आरोह दूसरी पाली में अवरोह होता है। जिसे निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा रहा है।

	आरोह		अवरोह	
	२ मिनिट तक पार्थिव तत्व		१० मिनट तक आकाश	
	४ ,, ,, जल ,,		८ ,, ,, वायु	
आरोह	६ ,, ,, तेज ,,		६ ,, ,, तेज	अवरोह
	८ ,, ,, वायु ,,		४ ,, ,, जल	
	१० ,, ,, आकाश ,,		२ ,, ,, पृथ्वी	
	३० मिनट में पाँचों तत्त्व		३० मिनट में ५ तत्त्व	

हृदय के आठ विभागों के एक विभाग में आरोह-अवरोह के क्रम से १ घण्टे में एक विभाग, तो ८ घण्टे में ८ विभागों में तत्वों का सञ्चालन, इस प्रकार २४ घण्टे में प्रत्येक तत्त्व की ८×२×३=४८, ४८ आवृत्तियाँ हो जाती हैं।

श्वास की गति :—

२ मि०=५ पल=५×६=३० असु (प्राण) अतः १ मिनट में $\frac{३०}{२}$=१५ साधारणतया श्वास सञ्चार का क्रम होता रहता है।

इस प्रकार २४ घण्टे में, २४×६०×१५ = ९००×२४ = २१६०० असु = प्राण, श्वास सञ्चार होगा। इस प्रकार एक अहोरात्र में २१६०० असु या $\frac{२१६००}{६}$ = ३६०० पल÷६० = ३० असु, एक पल में जो मि का $\frac{२}{५}$ या २४ सेकण्ड के बराबर होता है।

अतः १ मिनिट में $\frac{२१६००}{२४×६०}$ = १५ श्वास की गति सिद्ध होती है।

स्वस्थ पुरुष के श्वास के तार तम्य से १ श्वास में ५ नाडी गति तो १५ श्वासों में १५ × ५=७५ हृदयगति या नाडी गति होगी।

"एकविंशति सहस्राणि षट्शतानि तथोपरि, हंस हंसेति हंसेति जीवो जपति नित्यश:" पुराणों ने स्वष्ट कहा है।

श्वास की जगह यहाँ श्वास गति का अभिप्राय, नाडियों की गति या हृदयगति (धड़कन) से सम्बम्ध रखता है।

चान्द्र दिन (तिथियों में) में दक्षिण वाम स्वर चलन क्रम

योगियों का अनुभव है कि शुल्कपक्ष को प्रतिपद से तृतीया तक में एक एक घटी क्रम से पहिले चन्द्र स्वर (वाम स्वर) चलता है, तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपद तिथि से तृतीया तिथि तक पहिले सूर्य स्वर (दक्षिण स्वर) चलता है।

शुक्ल और कृष्ण प । में चन्द्र सूर्य स्वर चक्र

शुक्लपक्ष	तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
	स्वर	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	चं.	चं.	चं.
कृष्णपक्ष	तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
	स्वर	सू.	सू.	सू	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	चं.	चं.	चं.	सू	सू.	सू.

१५ से पूर्णमासी, ३० से अमावास्या होती है।

फल विचार

जिस तिथि में जो स्वर चल रहा हो वह ५ घटी तक पाँच तत्वों के साथ चलेगा तत्पश्चात् ५ घटी तक दूसरा स्वर चलेगा। जैसे शुल्क पक्ष की प्रतिपद तिथि को ५ घटी तक चन्द्र (वांया स्वर) पुनः ६ से १० तक सूर्य (दक्षिण स्वर) चलने के क्रम से ६० घटी = २४ घण्टे में $\frac{६०}{५}$=१२ या ६० × $\frac{२}{५}$ × $\frac{१}{२}$= १२ संक्रान्तियाँ एक अहोरात्र में पृथिवी आदि तत्त्व चलन में हो जाती है।

उक्त प्राकृतिक क्रम में, व्यत्यय, चन्द्र स्वर के (वांये स्वर के) उदय के समय यदि सूर्य स्वर, अथवा सूर्य स्वरोदय काल (दाहिने स्वर) में चन्द्र स्वरोदय जिस दिन प्रतीत होता है, उस दिन अशुभ संकेत, हानि तथा मन में उद्वेग होगा।

रात्रि में चन्द्र स्वर तथा दिन भर सूर्य स्वर प्रचालन की साधनिका जिनसे की जाती है, निस्सन्देह वे योगी हैं।

(१) यात्रा, विवाह, वस्त्र अलंकार, भूषण परिधान सन्धि, गृह प्रवेश आदि के लिए वांया स्वर शुभ है। दक्षिण या वाम जो भी स्वर चले यात्रा आरम्भ के समय प्रथमतः वही पैर चलाना चाहिए। स्वर साधन कुशल महात्मा "कबीर दास" ने भी—

"जो स्वर चलै सो पग दीजै
लोक वेद का कहा न कीजै"

कहा है।

(२) युद्ध, जुआ की प्रतिस्पर्धा, स्नान भोजन मैथुन, व्यवहार-भय भंग-के लिए दाहिना स्वर उत्तम कहा गया है। पृथिवी आदि किस तत्व को कैसे जाना जायगा—

(१) पृथिवी तत्त्व	पीत वर्ण
(२) जल तत्त्व	श्वेत वर्ण
(३) तेज तत्त्व	रक्त वर्ण
(४) वायु तत्त्व	नील वर्ण

और (५) आकाश तत्त्व को धूम्र वर्ण से समझना चाहिए,

हृत्कमल के पूर्व आदिक दल में पृथिवी आदिक तत्त्वों में, तत्त्व विशेष के प्रचलन को समझ कर स्वर शास्त्रज्ञ, योगी, दैवज्ञ, प्रश्न कर्त्ता के अनुसार फलादेश करता है।

पूर्व में वायु तत्त्व के चलने से संग्राम करने की इच्छा होती है।

अग्नि	,,	,,	भोजन	,,	,,	,,
दक्षिण	,,	,,	क्रोध	,,	,,	,,
नैऋत्य	,,	,,	भोग विषय	,,	,,	,,
पश्चिम	,,	,,	सुखानुभूति	,,	,,	,,
वायु	,,	,,	यात्रा करने की	,,	,,	,,
उत्तर	,,	,,	किसी पर कृपा करने	,,	,,	,,
ईशान	,,	,,	राज्य प्राप्ति	,,	,,	,,

सन्धि स्थान (दो पत्रों की) परम आनन्द की अनुभूति होती है।

इस प्रकार ज्योतिष और योग-शास्त्र का परस्पर अभेद सूचित होता है ॥ इति ॥

दो नामों से आपस की मैत्री या शत्रुता का विचार

मित्रों, (दोस्तों) स्त्री, पुरुषों, प्रत्येक के साथ व्यवहार, राज्य-व्यापार-धन या किसी भी अभीष्ट कार्य के लिए निम्न क्रम से भी विचार किया जाता है।

ऋण और धन के साधन का चक्र ("समरसार" से)

साध्याङ्क	त ६	त ६	त ६	न ०	ग ३	भू ४	मा ४	नु ०	नि ०	नि ०	गा ३
	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
साधकांक	रु२	रु२	म५	न०	न०	र२	य१	न०	भ४	व४	गा३

यहाँ स्वामी = साधक, सेवक = साध्य, पति = साधक, पत्नी = साध्य गुरु = साधक, शिष्य = साध्य इत्यादि ।

जैसे—राम-साधक, सीता-साध्य है ।

अतः र् + आ + म् + अ
० + २ + ५ + २ } साधक अंकों से = ९

स् + ई + त् + आ
० + ० + ३ + ६ } साध्य अंकों से ९

साधक और साध्य के अंकों के प्रथम योग में ९ का भाग देने से शेष ग्रहण करना चाहिए ।

राम सीता दोनों के अंक योय ९, ९, में आठ का भाग देने से शेष १, १ बचने से दोनों में परस्पर अभेद है या साम्य है ।

जहाँ जन्मपत्रियाँ उपलब्ध न हों ऐसी स्थिति में उक्त चक्र से वर-वधू का मेलापक विचार अच्छी तरह किया जा सकता है ।

साधक गुरु का नाम (१) श्री पं.रामयत्त ओझा और (२) श्री पं.बलदेव पाठक

साध्य शिष्य ,, ,, केदारदत्त जोशी

र् + आ + म् + अ + य् + ३ + त् + न् + अ ओ + झ् + आ ० + २ + ५ + २ + ० + २ + ० + ४ + २ + ४ + ४ + २ = २७—२१ भी = २७

क + ए + द् + आ + र् + अ + द् + अ + त् + त् + अ + ज + ओ + श् + ई + ६ + ४ + ४ + ६ + ३ + ६ + ४ + ६ + ३ + ४ + ६ + ० + १ = ५१

२७ ÷ ८ = शेष ३
५१ ÷ ८ = शेष ३ { "जिसका शेष अधिक हो वह ऋणप्रद होता है ।"

दोनों गुरु नामों से यहाँ भी उत्तम साम्य है ।

यहाँ दोनों गुरू और एक शिष्य में साम्य तो है, किन्तु स्वनाम धन्य स्वर्गीय पं० रामयत्न ओझा तथा स्व० श्री पं० बलदेव पाठक मेरे आराध्य गुरु (प्रधानाचार्य ज्योतिष विभाग का हि. वि. वि.) थे, समस्त गणित ज्योतिष के साथ उक्त स्वर शास्त्र का भी ज्ञान इन पक्तियाँ के लेखक को गुरु कृपा से ही प्राप्त हुआ था । अतः इस शरीर पर गुरु का ऋण भारस्वरूप नहीं, अपितु गुरु गौरव स्वरूप है जिसका भुगतान सम्भव नहीं है ।

लेखक

भूमि गत द्रव्य ज्ञान

भूमिगत द्रव्य ज्ञान के लिए अत्यन्त सूक्ष्म गणित की आवश्यकता होती है।
२४ घण्टे के—एक वार में सातों वारों का सात विभाग
२४ ,, की ,, तिथि १५ पन्द्रहों तिथियों का विभाग
२४ ,, के एक नक्षत्र में २७ नक्षत्रों के विभाग क्रम…से सर्वप्रथम सूक्ष्म इष्टकाल में तिथिवार नक्षत्र योग करण का ज्ञान कथित गणित पद्धति से करना नितान्त आवश्यक है।

प्राचीन वास्तु निर्माण में राज-महल का विस्तार बताया है।

"वितस्ति द्वितयं हस्तो राजहस्तश्च तद्द्वयम्
दश हस्तैस्तैश्च दण्डस्यार्त्रिशद्दण्ड निवर्त्तनम्"

३० दण्ड लम्बे चौड़े (प्लाट) पिण्ड को निवर्त्तन कहा गया है ३० दण्ड × १०० = ३०० हाथ (राजहस्त) का द्विगुणित ६०० हाथ होता है।

६०० ÷ २ = ३०० गज या ९०० फीट लम्बी और ९०० फीट चौड़ी भूमि की निवर्त्तन संज्ञा है।

यदि एक मकान की इस प्रकार की स्थिति हो तो इस मकान में उक्त माप का एक सर्पाकार चक्र बनाकर उक्त पिण्ड में रखना चाहिए।

चन्द्रमा का स्पष्ट जहाँ तक हो सके १ एक एक मिनिट तक का गणित से बना लेना चाहिए।

खेती	अ.	भ	कृ	मे.	पू.	उ.
उ.	पू. भा.	श.	रो.	श्ले.	पु	ह.
अ.	श्र	ध.	मृ	आ	पु.	चि.
उ.	पू. षा	मू.	ज्ये.	अ	वि.	स्वा

"चक्र को कैसे स्थापित करें" यहाँ पर आचार्य ने "गुरु मुखाद् ज्ञेयम्" गुरु मुख से जानना चाहिए कहा है, किन्तु विद्वान् कुशलदैवज्ञ तत्कालीन आकाश खगोल ज्ञान वश इस चक्र को वास्तु पिण्ड में स्थापित कर सकता है।

(१) चन्द्रमा के नक्षत्र में सूर्य और चन्द्रमा दोनों हैं तो अवश्य उस स्थान में धन स्थापित होता है।

(२) सूर्य नक्षत्र में दोनों हों तो धन नहीं है।

(३) अथवा धन (द्रव्य) की जगह उस स्थल में शल्य (हड्डी) समझनी चाहिए।

द्रव्य कितनी दूरी की गहराई में है।

चन्द्रमा के नवांश वश, १…९ गुणित हाथ या १…९ × २…३ हाथ की गहराई में द्रव्य की स्थिति की घोषणा करनी चाहिए।

चन्द्रमा की बलाबल की स्थिति से पर्याप्त या सामान्य या नाम मात्र आदि धन की घोषणा करनी चाहिए।

अन्य ग्रहों के सम्बन्ध से सुवर्ण, रजत, ताम्र, लौह आदि धातु का ज्ञान करना चाहिए।

ऐसी स्थिति में मन्त्र तन्त्र प्रयोग आवश्यक होगा—

विष्णु गणेश, ग्रह, क्षेत्रपाल, मातृका भैरव महादेव नाग आदि की पूजा करनी चाहिए।

मदिरा, तथा वलि आदि का भी संकेत है।

मन्त्र का भी उल्लेख—

"पद्मासने चन्द्रातपेन ऐं क्लीं हूँ वद वद वाग्वादिनी स्वाहा" इस मन्त्र से ६ महीने तक त्रिकाल-सन्ध्या में जप हवन पूजन से भूमिगत (पूर्वजों का स्थापित) द्रव्य प्राप्ति और उसका सदुपयोग होता है।

मानव जीवन और ज्यौतिष-शास्त्र

ज्यौतिष शास्त्र की अपनी महत्ता तो है ही पर ईश्वर आराधना एवं उसकी कृपा सर्वोपरि है। कभी-कभी साधारण से साधारण मनुष्य भी इस अनन्त शक्ति की प्रेरणा से ऐसी बात बोल देता है कि जो कालान्तर में सत्य घटित होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि ज्यौतिष का मानव के दैनिक जीवन से

भी घनिष्ठतम सम्बन्ध है जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इस प्रकार ज्योतिषशास्त्र किसी एक की थाती नहीं अपि च जन-जीवन की सम्पत्ति है।

१. मनो विभङ्ग भी किसी अनिष्ट की सूचना देता है।

वम्बई में एक महिला, भाई की कुशल न मिलने से बहुत अधिक चिन्ता से कर्त्तव्य शून्य सी हुई थी। वाराणसी के एक तार से उसे वाराणसी में जन्माष्टमी के दिन भाई के डूब कर मृत्यु की सूचना मिल ही गई। कुछ घण्टों के पश्चात् वहिन की भी हृद्गति शून्य हो गई। सच्चे अर्थ के भाई बहिन थे। इस भविष्य ज्ञान में परिवार का ज्योतिषी पूर्ण असफल रहा।

२. एक बड़े मड़े मकान के विभिन्न परिवारों के कुछ सदस्य उसी मकान की एक बैठक में उपस्थित थे। एक सज्जन अपना दाहिना हाथ चूम रहे थे, इसलिए कि उसमें खुजलाहट हुई थी। दूसरे दोस्त उनकी मजाक उड़ा रहे थे कि आपकी हाथ चूमने की आदत पड़ गई है। १०, १५ मिनट के भीतर एक कम्पनी से उन्हें बोनस का रूपया धनादेश से (धन) भी मिल गया। तब मजाक उड़ाने वाले उनके दोस्त ने भी अपना हाथ चूमा, हथेली की सच्ची खुजलाहट के मित्र ने उनसे कहा, हाथ चूमने का नशा हो गया है क्या ?

३. छात्रावास में रात की नींद से एक छात्र रोते हुए जग गया। उसके साथियों ने रोने का कारण पूछा तो उसे स्वप्न में मां की मृत्यु का समाचार मिला वह रोने लगा था। उसके साथियों ने उसे सान्त्वना दी कि स्वप्न का फल प्रतिकूल होता है। हंसना अशुभ, रोना शुभ होता है तुम्हारी मां की आयु बढ़ गई है। किन्तु प्रातः होते ही स्वप्न का ही समाचार सही हुआ, उसके घर से उसके माता की मृत्यु का समाचार पत्रालय विभाग से उसे मिल गया।

४. कभी किसी मित्र आदि की अप्रासांगिक स्मृति हो जाती है जो दूरस्थ है। संयोग है कि वह मित्र किसी समय घर पर उपस्थित होते देखा गया है। यह दूरानुभूति [Telipathy] है।

५. हाथ की हथेली की खुजलाहट जिस दिन हो निश्चय है उस दिन कहीं न कहीं से पैसा हाथ में आ ही जाता है।

६. दाहिने पैर के तल की खुजलाहट किसी यात्रा की सूचना देती है। अनेक उदाहरण सही हैं।

७. प्रातः काल शयन त्याग के अनन्तर अशुभ दर्शन, अरुचि का शब्द श्रवण आदि समग्र दिनचर्या में व्यवधान की सूचना देते हैं। आवाल प्रसिद्धि है।

८. कुत्ता, बिल्ली, गौ आदि के क्रन्दन भी गृहस्थों को क्लेश प्राप्ति का संकेत करते हैं।

९. कभी कदाचित् मुख्य द्वार के आसन्न पल्ली आदिकों का सङ्घर्ष भी अशुभ सूचना देता है।

१०. आदरणीय सहृदय का प्रातः काल का दर्शन दिन की शुभचर्या का अवश्य द्योतक होता है।

११. अच्छे सुस्वादु भोजन का दिन मङ्गलाय होता है।

१२. पुत्र पौत्रवती, मङ्गलमुखी, सती, साध्वी और सौभाग्यवती महिला का दर्शन दिन चर्या में शुभोदय की सूचना देता है।

१३. प्रातःकाल ईशान से अग्नि कोण तक अच्छे शब्द के साथ उड़ने वाले पक्षिओं में कौआ आदि की वाणी इष्ट-मित्र मिलन की सूचना देती है।

१४. एवं दक्षिण नैऋत्य दिशोन्मुख पक्षियों का र व (शब्द) अशुभ सूचना देता है।

१५. प्रकृति के लक्षणों से भी गृहस्थ लोग सुभिक्ष-दुर्भिक्ष (सुवृष्टि सूखा) आदि का अनुमान लगा लेते हैं।

१६. घाग की लोकोत्तियाँ अपनी सटीकता से आज भी ग्रामों में सुप्रसिद्ध सुनी जाती हैं। इत्यादि।

———

परिशिष्ट [ख]

ज्योतिष शास्त्र की एक शाखा, स्वर विज्ञान भारतीय संस्कृति की अपूर्व निधि रही है। कुछ लोगों ने भ्रमवश इसको आज के वैज्ञानिक युग की नवीन उपलब्धि मान लिया है।

वस्तुत: यह हमारी प्राचीन देन में ही संकालित की जासकती है। अधिक उल्लेख या घुमाने की आवश्यकता नहीं है, भारतीय संस्कृति का सर्व प्रसिद्ध ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण और श्रीमद्भागवत इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

गणित ज्यौतिष शास्त्र की वेद मूलकता जिस प्रकार सिद्धान्त शिरोमणि (ग्रह गणिताध्याय) के तृतीय विभाग की भूमिका में दिखाई गई है, इसी प्रकार फलित ज्यौतिष की प्रामाणिकता, आदिकाव्य वाल्मीकि एवं श्री मद्भागवत पुराणों के माध्यम से यहाँ दी जाती है।

बाल्मीकि-रामायण में फलित ज्यौतिष की पर्याप्त उपलब्धि है। शकुन स्वप्न, ग्रहयोग, नक्षत्र, नक्षत्र सम्बन्ध से मुहूर्त्त आदि का उल्लेख आदि काव्य में मिलता है।

बाल्मीकि में जातक ज्यौतिष

बाल काण्ड सर्ग १८ श्लोक ८—१०

"ततश्च द्वादशे मासि चैत्रे नावमिके तिथौ,
नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु।
ग्रहेषु कर्कटके लग्ने वाक्पताविन्दुना सह,
कौशल्या ऽजनयद्रामं दिव्यलक्षणसंयुतम्"।

चैत्र मास (वैशाख से प्रारम्भकर बारहवाँ) नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न, वृहस्पति के साथ चन्द्रमा था, और पाँच ग्रह उच्च के थे, ऐसे समय साम्राज्ञी कौशल्या ने दिव्य लक्षणों से युक्त श्री "राम" को जन्म दिया था।

आचार्य वाराह से आज तक फलित ज्योतिष में ग्रहों की उच्च राशियाँ निम्न भाँति से कही गई हैं। सूर्य ग्रह मेष राशि में १० दश अंश तक अश्विनी के तीसरे चरण में पूर्ण उच्च का कहा गया है।

चन्द्रमा	,, वृष राशि के		,,	तीन अंश में कृतिकानक्षत्रके द्वितीय चरण में				
मङ्गल	,, मकर	,,	,,	अठाईस	,, ,,	घनिष्ठा ,, ,,		....
बुध	,, कन्या	,,	,,	पन्द्रह	,, ,,	हस्त	द्वितीय	....
बृहस्पति	,, कर्क	,,	,,	पाँच	,, ,,	पुष्य	द्वितीय	....
शुक्र	,, मीन	,,	,,	सताईस	,, ,,	रेवती	चतुर्थ	....
शनि	,, तुला	,,	,,	वीस	,, ,,	स्वाति	चतुर्थ	चरण में

पूर्ण उच्च के कहे गए हैं।

उक्त वाक्य में पक्ष का उल्लेख नहीं है। किन्तु श्री राम का जन्म चैत्र शुल्क नवमी तथा श्री कृष्ण का जन्म भाद्र कृष्ण अष्टमी तिथियों में हुआ है। इसमें कोई विकल्प नहीं है। तुलसी दास जी ने पक्ष का स्पष्ट उल्लेख किया है।

"चैत सुदी नवमी मधुमास पुनीता
सुकुल पक्ष अभिजित् हरि प्रीता"

अभिजित् मुहूर्त्त ११।३६ बजे दिन से १२।२६ बजे दिन तक अयोध्या में हो सकता है। तथा ११।५० बजे से २।८ बजे तक कर्क लग्न का समय भी हो सकता है।

पुनर्वसु नक्षत्र के चौथे चरण में श्री राम का जन्म होता है, क्योंकि बृहस्पति के साथ चन्द्रमा है, बृहस्पति कर्क राशि में उच्च का होता है। तिथि और चन्द्रमा के ज्ञान से स्पष्ट सूर्य की राशि, ग्रह गणित से सुखेन ज्ञात की जा सकती है, अर्थात् सूर्योदय से ६ घण्टा आगे तक पुनर्वसु का मान होने से कर्क लग्न के साथ बृहस्पति चन्द्रमा और पुनर्वसु की संगति गणित से ठीक होती है। ऐसी स्थिति में अष्टमी की समाप्ति नवमी का प्रारम्भ अर्थात् मध्याह्न व्यापिनी नवमी की भी संगति ठीक बैठती है। अतः सूर्य की राश्यादि मीन के (७ वें ८ वें या नवें नवांश) में होने से, सूर्य ग्रह अपनी उच्च राशि में नहीं होता है इस प्रकार बुध और शुक्र ग्रह जो सूर्य के आसन्न तथा आगे या पीछे सदा रहते

हैं बुध और शुक्र भी यदि मीन में हो तो दोनों में एक शुक्र ही उच्च का होता है। चन्द्रमा जो अपनी राशि कर्क का है, उच्च में नहीं है। मङ्गल मकर में उच्च का हो सकता है। इस प्रकार, मङ्गल, वृहस्पति शुक्र और शनि (शनि तुला में होने से उच्च का हो सकता है) ये चार ग्रह उच्च राशियों के हो सकते हैं न कि पाँच। इस क्रम से श्री राम की जन्म कुण्डली निम्न प्रकार की होगी। प्रायः प्रत्येक जातक की जन्म पत्रियों में श्री राम की जन्मपत्री मङ्गल प्रकरण में इस भाँति की दी हुई देखी जाती है।
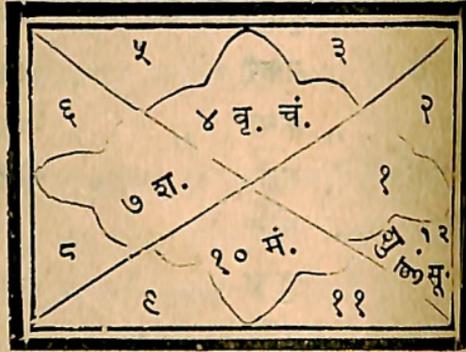
ग्रह गणित की उच्च राशियाँ

[1]उच्च नाम—-प्रत्येक ग्रह कक्षा का एक आकर्षण केन्द्र है उससे छ राशि आगे सातवीं राशि में तत्तद्ग्रह का नीच संज्ञक आकर्षण बिन्दु है। उच्चाकर्षण विन्दु पर पहुँचते हुए ग्रह बिम्ब भूमि से दूर होने से छोटा एवं नीच आकर्षण बिन्दु पर पहुँचने से भूस्थित दृष्टि से बड़ा दिखाई देता है। कक्षा-वृत्त

१ 'दूरे स्थितः स्वशीघ्रोच्चाद ग्रहः शिथिल रश्मिभिः
सव्येतराकृष्टतनुर्भवेद्वक्रगति स्तदा। (सू. सि.)
उच्चस्थितः व्योमचरः सुदूरे नीचस्थितः स्यान्निकटे धरित्र्याः
अतोऽणु बिम्बः पृथुलश्च भाति भानोस्तथासन्नसुदूरवर्त्ती।
यो हि प्रदेशोऽयम मण्डलस्य
दूरेभुवस्तस्य कृतोच्च संज्ञा
सोऽपि प्रदेशश्चलतीति तस्मात्प्रकल्पिता
तुङ्गगतिर्गतिज्ञैः''
(''भास्कराचार्य'' सिद्धान्त शिरोमणि-ग्रह गोलाध्याय)

(कान्ति वृत्त) का भूमि से परम दूरी का विन्दु उच्च एवं समीपस्थ बिन्दु का नाम नीच है। उच्चाकर्षण वेग के शैथिल्य से ग्रह भू-स्थिति से वक्र (विलोम) गतिक हो जाता है। साथ ही यह उच्च विन्दु भी सदा नियत न होकर गतिशील होते हुए ग्रह की तरह कक्षा में भिन्न-भिन्न राशियों पर जाता है। अर्थात् ग्रह गणित सिद्धान्त से उच्च स्थान भी चल राशियों में ग्रहों की तरह चलायमान होते हैं। किन्तु फलित ज्यौतिष के उच्च सदा एक रूप स्थिर कहे गए हैं। अतः संशय होता है— कि बाल्मीकि के समय में, वराहाचार्य कालीन ग्रहों की स्थिर उच्च राशियाँ ही यदि उच्च राशियाँ कही गयी हैं तब तो वाल्मीकि में कथित राम-जन्म की ५ ग्रहों की उच्चस्थिति में संशय-प्रद समस्या उपस्थित होती है, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। अथवा आदिकाव्य कालीन फलित ज्यौतिष उच्च राशियों और साम्प्रत की फलित की उच्च राशियों में परस्पर अन्तर माना जाय? अथवा "उच्च संस्थेषु पञ्चसु" का कोई गहन-गूढ़ अभिप्राय हो सकता है। जैसा कालिदास ने भी "रघुवंश" के सम्राट दिलीप पुत्र रघु की जन्म कालीन ग्रह स्थिति में भी—"पाँच ग्रह उच्च के थे," ऐसा कहा है इस शोध के विषय पर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया जाता है।

राहु और केतु को, ग्रह मानकर उनकी भी उच्च-नीच, राशि, तथा उनकी स्वतन्त्र की भी मित्र शत्रु आदि राशियों की कल्पना में फलिताचार्यों के अनेक मत हैं। राहु के सम्बन्ध के विसम्वाद में किसी पक्ष को स्वीकार कर लेने से कदाचित् "पांच ग्रह उच्च के थे" सङ्कोच से ऐसा कहा जा सकता है।

क्योंकि फलिताचार्यों ने—

"बल से युक्त चार तारा ग्रह (मं० बृ० शु० और शनि) अपनी राशियों या अपनी उच्च राशियों में जिस जन्म पत्री में बैठे हों ऐसे योग से पंच महा-पुरुष का जन्म होता है" कहा है। जैसे—

शुक्र बृहस्पति केन्द्र में गए हों, अपने उच्च में बैठा शनि भी केन्द्रगत हो,

चर लग्न में जन्म हो, तो ऐसे अवतार योग में कोई अवतारी पुरुष जन्म लेता है।

अवतार योग में उत्पन्न पुरुष का फल—

अवतारयोगज पुरुष का नित्य नाम स्मरण किया जाता है। वह तीर्थ होता है, उसके सकल मनोरथ सफल होते हैं। वह काल कर्त्ता (समय के वश में वह नहीं उसके वश में समय) इन्द्रिय-जेता, वेदान्तवेत्ता, वेदशास्त्र-ज्ञान का उत्तम सत्पात्र राजा और लक्ष्मी पति होता है।

ज्योतिष में तारा ग्रहों की संख्या ५ मानी गई है। पञ्चतारा स्पष्टी-करणाधिकार में आचार्यों ने मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि को, पांच तारा ग्रह से उच्चारण किया है।

पांच तारा ग्रह एक साथ उच्च राशियों में नहीं हो सकते हैं, ४ तारा ग्रह मं० वृ० शु० और शनि का उच्च संस्थत्व सम्भव है।

फलित की उक्त विचार मीमांसा से भी चर लग्न के जन्म से सम्बन्धित ४ तारा ग्रहों की उच्चादि सत्पद संस्थान गत स्थिति मर्यादा पुरुषोत्तम अवतरित श्रीराम की जन्मपत्री में चरितार्थ देखी जा रही है। उक्त जन्म पत्री में शुक्र की दशम की स्थिति मानने से सूर्य की वर्गोत्तम नवांश (मीन राशि के अन्तिम नवांश में) मीन नवांश की ११।२७° मानने से चैत्र शुक्ल नवमी कर्क लग्न गुरुचान्द्री योग में श्री राम का जन्म समीचीन होता है किन्तु संस्थेपु पञ्चसु की जगह "उच्च संस्थेपु चतुर्षु" पाठ पढ़ना निरापद होगा?

"ताराग्रहै: बलयुतै स्वक्षेत्रस्वोच्चगैश्चतुष्टयै:
पञ्च पुरुषा: प्रशस्ता: जायन्ते तानहं वक्ष्ये।
केन्द्रगो सित देवेज्यौ स्वोच्चे केन्द्रगतेऽर्कजे
चरलग्ने यदा जन्म योगोऽयमवतारज:
पुण्यश्लोकस्तीर्थचारी कालादर्श: कालकर्त्ता जितात्मा
वेदान्तज्ञो वेदशास्त्राधिकारी जातो राजा श्रीधरोऽत्रावतारे"

("जातक पारिजात")

आदिकाव्य में ग्रह योग फल—

दैवज्ञों ने सूर्य मङ्गल और राहु के योग से राजा दशरथ की मृत्यु का संकेत किया है।

"आवेदयन्ति दैवज्ञाः सूर्याङ्गारकराहुभिः
प्रायेण हि निमित्ताना-मीदृशानां समुदभवे
राजा मृत्युमवाप्नोति घोरां वापदमृच्छति"

आ० का० स० ४ श्लो १७

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार

पुष्य नक्षत्र में भरत की, और श्लेषा में लक्ष्मण शत्रुघ्न की उत्पत्ति कही गई है। "पुष्ये जातः प्रसन्नधीः भरतः सार्पर्क्षे शत्रुघ्नलक्ष्मणौ"।

इससे चैत्र शुक्ल दशमी में श्री भरत जी एवं चैत्र शुक्ल एकदशी (कामदा) में लक्ष्मण शत्रुघ्न की समुत्पत्ति हुई थी। युक्तिबुद्धि से पुनर्वसु की समाप्ति और पुष्प प्रवेश के आसन्न श्री राम, तथा पुष्प समाप्ति अश्लेषा प्रारम्भ के समीप श्री भरत जी, तथा श्लेषा की समाप्ति एवं मघा के प्रारम्भ में श्री शत्रुघ्न लक्ष्मण, त्रैलोक्यनाथ श्री विष्णु के अंशों से ये चारों भाई भूमण्डल में अवतरित हुये थे।

ज्योतिश्शास्त्र का कथन है कि रेवती अश्विनी, आश्लेषा मघा, ज्येष्ठा और मूल की सन्धियों में उत्पन्न बालक विशेषतः ज्येष्ठा मूल में उन नक्षत्रों के एकादि चरण वश पिता माता, धन के विनाश के लिए तथा अश्लेषा मघा में......धन माता एवं पिता के निधन के लिए होते हैं। यह योग, ४, ८, १२, १६, २० वर्षों की अवधि तक घटित होते देखे गये हैं। अतः राजा दशरथ की मृत्यु में उक्त कारण भी उपस्थित था। मूल शान्ति कर्म से, उक्त

वर्ष ई० सन् १९६७ में—

सं० २०२३ शक वर्ष १८८८ सन् १९६६ के मई जून में सूर्य मङ्गल राहु का योग हुआ था। राष्ट्रपर इस योग का कैसा शुभाशुभ प्रभाव पड़ा? पाठक स्वयं समझ सकेंगे।

अनिष्ट योग कट जाता है। आज के विकसित ज्यौतिष में मूल शान्ति पर भी स्वतन्त्र ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, किन्तु

वाल्मीकि में मूल शान्ति का उल्लेख नहीं है। इसी प्रकार क्षय और अधिमास आदिका भी स्पष्ट उल्लेख सा नहीं है। वाल्मीकि ने मूल नक्षत्र (धनू राशि या धनुष राशि) को (रघुवंशियों के लिए पुष्य) राक्षसों का नक्षत्र कहा है। अवान्तर कालीन आचार्यों ने भी मूल नक्षत्र का अधिपति राक्षस कहा है।

"ऋक्षेशाः"--"शक्राग्नी खलु मित्र इन्द्र निऋतिः, क्षीराणि" इत्यादि
(नक्षत्र प्रकरण, मुहूर्त्त चिन्तामणि)

युद्धाभिमुख प्रस्थित राम ने, "हमारा नक्षत्र शुभ है। राक्षसों का राक्षस नक्षत्र "मूल", मूलवता धूम केतु से स्पष्ट हो गया है। महाकाल से ग्रहीत राक्षसों के नक्षत्र ग्रह से पीडित हो गये हैं। यह सब राक्षसों के विनाश का काल हो गया है" इत्यादि कहा है।

"नक्षत्र वरमस्माकमिक्ष्वाकूणां महात्मनाम्,
नैर्ऋतं नैर्ऋतानां नक्षत्रमभिपीड्यते।
मूलो मूलवता स्पृष्टो धूप्यते धूमकेतुना,
सर्वं चैतद्विनाशाय राक्षसानामुपस्थितम्।
काले कालगृहीतानां नक्षत्रं ग्रहपीडितम्,
प्रसन्नाः सुरसाश्चापो बनानि फलवन्ति" ॥

वा. युद्ध. स. ३ श्लो. ५२-५५

वाल्मीकि में मुहूर्त्त ज्यौतिष—

राम राज्यभिषेक के लिए बसिष्ठ ने आदेश किया है, सूर्य चन्द्र की उत्तम स्थिति, (उत्तम नक्षत्र योग) उत्तम मुहूर्त्त उत्पन्न होते ही बसिष्ठ ने उत्तम अयोध्यापुरी में राम राज्याभिषेक के लिए प्रवेश किया।

सुविमल आकाश में सुप्र म सूर्य उदित हुआ, पुष्य नक्षत्र का दिन था। कर्क लग्न तथा कर्क के चन्द्रमा में रामराज्याभिषेक किया जा रहा था।

"ततः प्रभातां रजनीमुदिते च दिवाकरे पुण्ये नक्षत्रयोगे च मुहूर्त्ते च समागते

वसिष्ठो प्रावि‍वेश पुरीम.......
उदिते विमले सूर्ये पुष्ये चाभ्यागतेऽहनि
लग्ने कर्कटके प्राप्ते चन्द्रे रामस्य च स्थिते," अयो० का० स० १५-३

वैवाहिक संस्कार में ज्यौतिष—

विवाह के पूर्व नान्दी श्राद्ध (वृद्धिश्राद्ध) पितृ पूजन आवश्यक होता है (धर्मशास्त्र)। तदनन्तर विवाह संस्कार किया जाता है। आज मघा है तीसरे दिन उत्तराफाल्गुनी में (रामादि चारो भाइयों का) वैवाहिक संस्कार करो। आज भी उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र विवाह के लिए आचार्यों के आदेश से उत्तम प्रचलित है।

"पितृकार्यञ्च भद्रन्ते, ततो वैवाहिकं कुरु
मघा ह्यद्य महाबाहो तृतीये दिवसे विभो
फल्गुन्याभुत्तरे राजंस्तिष्ठन्वैवाहिकं कुरु ॥"
(वाल स० ७१-२३-२४)

विवेचना—

त्रिकालज्ञ वसिष्ठ ने उत्तम मुहूर्त में स्वयं अयोध्यापुरी में प्रवेश किया। इसलिए देवताओं के निमित्त विशेष लक्ष्य को स्वीकार कर रावण वध के प्रयाण के लिए राम का (वनवास रूप) यात्रा मुहूर्त वशिष्ठ ने दिया था। १४ वर्ष तक की यात्रा के लिए रावण वध के लिए मुहूर्त्त था, और १४ वर्ष की पूर्ति में ही भरद्वाजाश्रम प्रयाग में रावण वध के अनन्तर श्रीराम पहुँचे थे।

"पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पञ्चम्याम् लक्ष्मणाग्रजः
भरद्वाजश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्" युद्ध १२७ श्लो० १

पञ्चमीतिथि का उल्लेख है। वर्ष के २४ पक्षों में पञ्चमी तिथि २४ अधिक मास में २६ होती है। किस मास पक्ष की यह पञ्चमी थी ग्रह गणित

ज्यौतिष का यह आवश्यक शोध विषय है। मेरी प्रज्ञा इसे चैत्र शुक्ल पञ्चमी मानती है।

भरत प्रियाख्यान अध्याय में–हनुमान दूत रूप में–"कल पुष्य नक्षत्र सम्बन्धित दिन में, हे भरत ! तुम श्रीराम को देखोगे।" अपने उत्तरदायित्व से मुक्त होकर रामराज्य का सुखानुभव करोगे।"

"भरद्वाजाभ्यनुज्ञातं द्रक्षस्यद्यैव राघवम्

अविघ्नं पुष्ययोगेन श्वो रामं द्रष्टु मर्हंति" १३१–५३

इसी सर्ग में सम्मान से विभीषण की विदाई कर राम ने राज्य सिंहासन सुशोभित किया।

लब्धवरं कुलधनं राजा लङ्कां प्रायाद्विभीषणः"

सं० १३१–६३

युद्ध के लिए किष्किन्धा छोड़कर युद्ध प्रयाण के मुहूर्त का भी उल्लेख आदि कवि ने किया है कि "सुग्रीव ! आज उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र है कल उत्तरा युक्त हस्त नक्षत्र में, समग्र सेना के साथ रावणवध के लिए लङ्का प्रस्थान उचित है।

"उत्तरा फाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते"

अभिप्रयाम सुग्रीव ! सर्वानीक समावृत्ता" यु० ४ श्लोक ६

वर्त्तमान मुहूर्त्त ज्यौतिष में उक्त आधार की परिपुष्टि होती है कि हस्त नक्षत्र में प्रस्थान कर स्वाती और चित्रा में स्थानान्तर में रुक कर पुनः विशाखा नक्षत्र में अपनी जय की इच्छा करने वाला राजा ने युद्ध के लिए देशान्तर में यात्रा करनी चाहिए।

प्रस्थाय हस्तेऽनिलतक्षधिष्ण्ये स्थित्वा जयार्थी प्रवसेद्विदैवे"

"मुहूर्त्तं चिन्ता मणि यात्रा प्रकरण"

हस्त नक्षत्र दिग्द्वार नक्षत्र कहा गया है जिसमें चारों दिशा की यात्रा सविशेष है, तथापि दक्षिण दिशा की यात्रा के लिए तो हस्त नक्षत्र विशेष महत्त्व का है। तथा "दक्षिणां चापराह्णे" वसिष्ठ वचन से दिन के चतुर्थ विभाग में, पूर्व के आसन्न प्रदेश में रणयात्रा प्रवृत्त राम की सेना ने रात्रि बिताई होगी।

इसी प्रसंग में "चन्द्रमा का प्रिय रोहिणी नक्षत्र बुध ग्रह से आक्रान्त है जो प्रजा के लिए अशुभ सूचक है।"

कौसलेय समाज के ज्येष्ठा नक्षत्र पर मंगल ग्रह ने आक्रमण किया है, आकाश में विषाखा की तरह—

"प्राजापत्यं तु नक्षत्रं रोहिणी शशिनः प्रियाम्
समाक्रम्य बुधस्तस्थौ प्रजानामशुभावहः
कोसलानां च नक्षत्रं व्यक्तमिन्द्राग्नि दैवतम्
आक्रम्याङ्गरकस्तस्थौ विषाखामिव चाम्बरे"

युद्ध का १०३-३४·३५

फलित ज्यौतिष में मङ्गल ग्रह को सेनापति (नेता) ग्रह कहा है, बुध ग्रह को कुमार ग्रह कहा है। नेता और कुमार की स्थिति से भी विजय की सूचना ज्यौतिष से प्राप्त है।

वाल्मीकि में शुभाशुभ निमित्त—(शकुन ज्यौतिष) तथा पशुपक्षियों की बोली का ज्ञान—

रावण के रथ सञ्चालक घोड़े काले वर्ण के दिखाई दिए। ....

राम के पक्ष में, सुन्दर निमित्त (शकुन) देखे गए जो सब प्रकार विजय की सूचना देते थे। इस प्रकार अपनी जय के निमित्तों (शकुनों) को देख कर श्री राघव प्रसन्न हुए "रावण का बध अवश्य होगा" ऐसा राम को धैर्य हुआ।

"रथं राक्षसराजस्य नरराजो ददर्श ह,
कृष्णवाजिसमायुक्तं युक्तं रौद्रेण वर्चसा।
एवं प्रकारा वहवः समुत्पाता भयावहाः,
रावणस्य विनाशाय दारुणाः संप्रजज्ञिरे।
रामस्य निमित्तानि सौम्यानि च शुभानि च,
बभूवुर्जयशंसीनि प्रादुर्भूतानि सर्वशः।

निमित्तानि च सौम्यानि राघवः स्वजयाय च,
दृष्ट्वा परं संहृष्टो हतं मेने च रावणम्,, ।।

युद्ध का० १०८—२५—२७

इसी प्रकार विवाह के अनन्तर अयोध्या प्रस्थान के समय अनेक अशुभ निमित्तों (शकुनों) के देखने से राजा दशरथ भयभीत एवं चिन्तित हुए और कुलगुरु वसिष्ठ ने भी अशुभ निमित्तों में कोई अन्तरिक्ष भय उत्पन्न हुआ है जो पक्षियों के मुख से सुना जा रहा है" एसा स्वीकार किया एक अँधकार सा सामने उपस्थित हुआ जिससे सारी दशरथ सेना भस्म से आच्छादित सी हो गई, तथापि कुलगुरु ने दशरथ को आश्वासन दिया धैर्य राखिए सब ठीक होगा इत्यादि ।

"घोरास्म पक्षिणो वाचो व्याहरन्ति समन्ततः,
भीमाश्चैव मृगाः सर्वे गच्छन्ति स्म प्रदक्षिणाम् ।
तान् दृष्ट्वा राजशार्दूलो वसिष्ठं परिपृच्छत,
असौम्याः पक्षिणो घोरा मृगाश्चापि प्रदक्षिणाः ।
...........श्रुत्वा वाक्यं महानृषिः

"उवाच मधुरां वाणीं श्रूयतामस्य यत्फलम,
उपस्थितं भयं घोरं दिव्यं पक्षिमुखाच्च्युतम् ।
मृगाः प्रशमयन्त्येते सन्तापस्त्यज्यतामयम्,
ससंज्ञा इव तत्रासन् सर्वंमन्यद्विचेतनम् ।
तस्मिन्तमसि घोरे तु भस्मच्छन्नेव सा चमूः,
ददर्श भीमसंकारं जटामण्डल धारिणम्,
भार्गवं जामदग्न्यं तं राजराजविमर्दनम् ।"

अयोध्या ७१—१३—१६ २३—२४

वाल्मीकि में स्वप्न ज्योतिष

प्रेषित दूत द्वारा राजा दशरथ की मृत्यु का समाचार तथा भरत के ननिहाल से भरत को अयोध्या ले आने के लिए कारवाई की गयी । ननिहाल में दूत पहुँचने

की पूर्व रात्रि में भरत को भयंकर दुःस्वप्न हुए, जिन्हें स्मरण कर दूसरे दिन भरत अपने सहयोगियों से उदास मन से वात कर रहा था, जब कि साथियों ने भी भरत की उदास आकृति देख कर उदासी का कारण भी पूछा था। भरत ने गत रात्रि के स्वप्न का व्याव्यान किया। "मलिन वेश में खुले वालों से अभव्याकृति, पहाड़ से गिरते हुए कलुषित तालाव में गिरते हुए अञ्जलि से तेल पान करते हुए, बारम्बार हँसते हुए, तिल चावल भक्षण करते हुए, निम्न शिरस्क, तैल लिप्त पिता को" कल रात मैंने स्वप्न में देखा। "समुद्र को शुष्क, चन्द्रमा को गिरते हुए तथा खर वाहक रथ से दक्षिण दिशा को यात्रा करते हुए अपने पिता को "कल स्वप्न में मैंने देखा है। मित्रो! यह स्वप्न अच्छा नहीं है, इसी लिए आज मैं उदास हूँ।

अयोध्या काण्ड सर्ग ६९ श्लोक १....२१ उक्त दुःस्वप्न भरत के भविष्य ज्ञान के लिए था। कि "जो मनुष्य गदहे के रथ में दक्षिण की यात्रा करते हुए स्वप्न में दिखाई देता है उसकी मृत्यु अवश्यभावी है।" मेरी या राम की या लक्ष्मण की या राजा दशरथ की किसी न किसी एक की मृत्यु अवश्य होगी।

नरो यानेन यः स्वप्ने खरयुक्तेन याति हि,
अचिरात्तस्य धूमाग्रं चितायां सम्प्रदिश्यते।
शुष्यतीव च मे कण्ठो न स्वरस्थमिव मे मनः,
न पश्यामि भयं स्थानं भयञ्चैवोपपधारये।
—भ्रष्टश्च स्वरयोगो मे छाया चोपहता मम

अयोध्या १–२१

वाल्मीकि में अङ्क गणित—इतिहास भूगोल (अनेक वंश परम्परा तथा वास्तविक भारतवर्ष, जिसमें कान्धार, इराक, काकेशस प्रभृति अनेक देश भी थे) के साथ जोड़ गुणन भाग वर्ग धन आदि का स्थल विशेष पर उल्लेख मिलता है।

मध्ययुग के गणिताचार्यों ने, १ एक अङ्क के दश गुणित उत्तरोत्तर संख्याओं को "एक दश शत सहस्र अयुत लक्ष प्रयुत कोटि अर्बुद खर्व निखर्व महापद्म शङ्कवस्तस्तस्मात् जलधिश्वान्त्य परार्ध्य" इस प्रकार के नाम

दिए हैं, जिनका मूल वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा और युद्ध काण्ड में वाहुल्येन उपलब्ध होता है।

शतः शतसहस्रैश्च वर्त्तन्ते करिभिस्तथा,
अयुतैश्चावृता वीर। शंकुभिश्च परन्तप।
अर्बुदैरर्बुदशतैर्मध्यै श्चान्त्यैश्च वानराः,
समुद्राश्च परार्धाश्च हरयो हरियूथपाः।।

कि. स. ३८ श्लो ३०–३१

ततः पद्म सहस्रेण वृत्तः शंखशतेन च,
युवराजोऽङ्गदः प्राप्तः पितुस्तुल्यपराक्रमः। ३९–२९

दश गुणोत्तर संख्या की संज्ञा अनन्त होती हैं अपार अनन्त की जगह पर अमोघ शब्द का प्रयोग हुआ है।

अमोघ शब्द सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए हिन्दू संस्कृति में सर्वत्र व्यवहृत होता है।

पुराणों के पश्चात् मध्ययुग में श्रीधर-भास्कराचार्य-आर्यभट्ट प्रभृति गणितज्ञों ने गणित की अच्छी गवेषणा की है। शून्य परिक्रमाष्टक का भी मूल वाल्मीकि युद्ध काण्ड के अन्तिम सर्ग १३१ के अन्तिम श्लोक में (११९) में मिलता है।

मध्य युग के आचार्यों ने शून्य अंक को अनिर्वाच्य सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा महान् से महत्तम कहा है। श्री तुलसी दास जी "शून्य के चले जाने से अंक का मान शून्य, तथा अंक की वाम स्थिति में शून्य को दाहिनी मानने से प्रत्येक अंक का दश गुणित मान बढ़ता है" जैसे—

सकल साधना तुलसी पतिरति अंक सम सून।
अंक रहित कछु हाथ नहि अंक सहित दस गून।। तुलसी रामायण में कहा है।

जिस प्रकार किसी भी अंक की दाहिनी ओर शून्य लिखने से उस अंक का मान दश गुना, दो शून्य रखने से एक सौ गुना, हजार लाख गुना

तक अनंत मान बढ़ जाता है और अंक बराबर बायें चला जाता है। इसे स्वीकार कर ज्यौतिष शास्त्र में "अङ्कानां वामतो गतिः" सिद्धान्त उत्पन्न होता है।

जैसे "द्वयब्धीन्द्रोनितशक" वर्त्तमान शक वर्ष में द्वि = २, अब्धि = ४, इन्द्र = १४ अत: वाम क्रम से १४४२ चौदह सौ बयालीस अंक ही ग्रहण किया जावेगा। यदि द्वि + अब्धि + इन्द्र
२ ४ १४ = २४१४ लिखेंगे तो आपेक्षित अभीष्ठ मान १४४२ नहीं होगा। और सिद्धान्त विपरीत (वामगतिक) क्रम से ग्रह गणित अनर्थ कर देगा। जैसे वामगति से अंक मान प्रवर्द्धमान हो रहा है इसी ध्येय को मन में रखकर पत्नी के लिए भी शास्त्रों ने "वामा" शब्द व्यवहार किया है। शून्य दाहिने रखने से अनन्त गुणित तक वढ़ते हैं तैसे ही पति की वाम भाग में पत्नी की उत्तरोत्तर पुत्रपौत्रधनधान्य से वर्धमान होने के अभिप्राय का संकेत "वामा" है। प्राग्गणितज्ञ शून्य को ब्रह्म कहते हुए उसे अविभाज्य अंक कहते हैं।

मन बुद्धि इन्द्रियाँ जहाँ तक नहीं पहुँचती वही शेष अथवा शून्यावतार है।

वाल्मीकि प्रभृति सभी वेदान्त वेत्ता अखण्ड परिणाम हीन स्वतन्त्र सत्तावान् सर्वशक्तिमान् को, ब्रह्म शब्द से कहते हैं।

इसी प्रकार राम नाम, ब्रह्म का अपर पर्याय भी है।

शुद्ध ब्रह्म परात्पर राम !
कालात्मक परमेश्वर राम !
शेषतल्पसुखनिद्रित राम !

इत्यादि ब्रह्म के अष्टोत्तर ही तक नाम नहीं, अपि च सहस्त्र लक्ष, अनन्त नाम कहे गए हैं। लीला जगत् में अखण्ड ब्रह्म ने चार प्रकार से विभक्त होकर दशरथ (दश इन्द्रियों का) के साथ पुत्र सम्बन्ध स्थापित किया है।

अत: यहाँ पर, ब्रह्म की विभक्त स्थिति पर भी उसकी परिपूर्णता स्थिर बनी रहती है।

जैसे बीज गणित से

अ ÷ क = ल । क्रिया से, क) अ (ल

+क×ल

अ—(क ल) = अ — क × ल = शेष

अथवा ल × क + अ—क × ल = अ । तात्पर्य है कि अ रूप ब्रह्म को क रूप हर से विभक्त करने से ल रूप लब्धि और अ—क × ल रूप शेष की उपलब्धि होते हुए भी प्रकारान्तर से अ का स्वरूप विकार रहित है यथावत् है ।

अंक गणित से १७ ÷ ३ = ३) १७ (५

+१५

१७—१५ = २

अथवा ५ × ३ + २ = १७

यहाँ १७ भाज्य, ३ भाजक, ५ लब्धि और दो शेष का सम्बन्ध १७ पूर्णाङ्क से ज्यों का त्यों बना हैं ।

भरत) राम (शत्रुघ्न

+भरत × शत्रुघ्न

राम - भरत × शत्रुघ्न

अथवा

शत्रुघ्न × भरत + राम - भरत × शत्रुघ्न = राम

(धनर्णयोस्तुल्यत्त्वान्नाशे कृते राशि रविकृदेव ।) तुल्य परिमाण की धन और ऋण राशियां जिस राशि से सम्बन्ध रखती है वह विकार शून्य राशि होती है अर्थात् ज्यों की त्यों रहती है ।

लीला जगत् में चतुर्धा विभक्त ब्रह्म भी पारमार्थिक स्थिति में स्वतन्त्र एवं अखण्ड ही रहता है ।

इस प्रकार वाल्मीकि का वेदान्त सम्मत गणित कौशल भी असाधारण गणित प्रतिभा का द्योतक होता है।

"आदि देवो महाबाहुर्हरिर्नारायणप्रभुः
साक्षाद्रामो रघुश्रेष्ठो
शेषो लक्ष्मण उच्यते"
प्रीयते सततं रामः स हि विष्णुः सनातनः"

इस प्रकार वाल्मीकि में खोज करने पर आधुनिक विज्ञान बहुत अन्तर्निहित मिलेंगे।[1]

प्रकृत के स्वर विज्ञान शीर्षक का बाल्मीकि पथ पर राम रावण के युद्ध में किसकी विजय होगी ? इस प्रश्न का हल स्वर शास्त्र से उदाहरण द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

हल—

वाल्मीकि के "राम" नाम की स्वर साधनिका

राम के अनेक नाम हैं तथैव रावण के भी हैं। पौलस्त्य दशानन, दशग्रीव रावण...तो युद्ध में जयाजय के लिए किस नाम को ग्रहण किया जाय ?

वाल्मीकि के पूर्व भी राम नाम विश्रुत था तथा बाल काण्ड में इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामो नाम जैनः श्रुतः वा–८ वा–१० कौशल्याऽजनयद्रामम्।

ज्येष्ठं रामं महात्मानं भरतं कैकेयी सुतम्,
सोमित्रि लक्ष्मण मिति शत्रुघ्नमपरन्तथा" वा० का० १८

राजा दशरथ के चारों पुत्रों का नाम, राम भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न था लोक विश्रुत सार्थक नाम हैं।

---

१. युद्ध कौशल भी वाल्मीकि में पर्याप्त उपलब्ध है। जैसे कबूतरों की उड़ान द्वारा शत्रु सेना की गतिविधि आज भी जानी जा रही है। तद्वत् राम रावण के युद्ध में परस्पर का सैन्य बलादि जानने के लिए शुक सारण प्रेषणाध्याय (युद्ध काण्ड २५) द्रष्टव्य है।

इसी प्रकार उत्तर काण्ड सर्ग १६ श्लोक ४७ में, प्रसिद्ध रावण नाम-करण महेश्वर ने (शिव) किया था—

"अवज्ञातं यदि हि ते मामेवैष्यत्यसंशयः
एवं महेश्वरेणैव कृत नाम स रावणः"

तथा राम रावण का युद्ध उपमा हीन है, जो राम रावण के ही युद्ध के सदृश है। जैसे "गगनं गगनाकारं"–आकाश की उपमा का सादृश्य आकाश से ही है।

अतः राम रावण के युद्ध विजय का विचार राम और रावण नाम से ही होगा।

(१) राम नाम का मात्रा स्वर—

राम नाम के आदि वर्ण र में आ स्वर अ स्वर का दीर्घ भेद है

अतः राम नाम का मात्रा स्वर अ होता है।

इसी प्रकार रावण ,, ,, भी ,, ,, अ ,, ,,

(२) वर्ण स्वर—

राम और रावण नाम से वर्ण स्वर चक्र में नाम का आदि वर्ण र, ए स्वर के नीचे हैं इसलिए

राम का वर्ण स्वर ए रावण ,, ,, ,, भी ए = ४	दोनों का समान स्वर है, इसलिए सब तिथियों में दोनों का समान शुभ या अशुभ होगा।

(३) ग्रह स्वर—

दोनों में रा आदि अक्षर पे पो रा री चित्रा से तुला राशि राशि का ईश शुक्र ग्रह-स्वर चक्र में ए आता है, = ४

इस लिए समान स्वर होने से दोनों का दोनों पक्षों में (कृष्ण और शुक्ल) समान बल रहेगा।

(४) जीव स्वर—

राम नाम में र् + आ + म् + अ जीव स्वर चक्र से

२ + २ + ५ + २ = १० ÷ ५ = शेष ० या ५ = ओ

एवं रावण ,, इ् + आ + व् + ण् + अ

२ + २ + ४ + ५ + १ = १५ ÷ ५ = शेष ० या ५ = ओ

दोनों का समान जीव स्वर होने से १२ बारहों महीनों के वर्ष के प्रत्येक मास में युद्ध के लिए तुल्य बल रहेगा।

(५) राशि स्वर—

राशि स्वर चक्र से तुला के आठवें नवांश में (दोनों का रा होने से) राशि स्वर ए सिद्ध होता है जिसकी संख्या = ३ है वर्ष भर की पांचों ऋतुओं में दोनों का समान बल रहेगा। युद्ध में न किसी का जय और न किसी की पराजय।

(६) नक्षत्र स्वर—

नक्षत्र स्वर चक्र से दोनों का (चित्रा नक्षत्र होता है) नक्षत्र स्वर उ सिद्ध होता है। अतः उत्तरायण या दक्षिणायन किसी में युद्ध होने से दोनों का समान बल रहेगा। नक्षत्र स्वर संख्या ३ है।

(७) पिण्ड-स्वर —

पिण्ड स्वर चक्र से

र् + आ + म् + अ = राम

४ + २ + २ + १ = ८ ÷ ५ = ३ उ संख्या ३।

र् + आ + व् + अ + ण् + अ

४ + १ + २ + १ + १ + १ = १० ÷ ५ = ० ओ संख्या=५

इस जगह पर स्वरों में वैषम्य है। अतः जिस वर्ष के जिस समय में रावण का पिण्ड स्वर ओ से पञ्चम स्वर ए, मृत्यु स्वर चलेगा, तथा राम के पिण्डस्वर उ से युवा स्वर ओ जिस वर्ष के जिस समय में चला था, उस समय राम ने रावण पर विजय पाई थी।

(८) योग स्वर—

राम के मात्रादिक पिण्डपर्यन्त स्वर संख्या योग—

१ + ४ + ४ + ५ + ३ + ३ + ३ = २३/५ = शेष ३ = उ होता है

रावण के मात्रादि पिण्ड पर्यन्त स्वर संख्या योग—

१ + ४ + ४ + ५ + ३ + ३ + ५ = २५ — ४ = ० या ५ शेष से ओ होते हैं

प्रभवादि १२ सम्वत्सरों के १२ वर्ष के उस चक्र में राम ने युद्ध में उसके वध के लिए रावण को ललकारा था जब रावण का मृत्यु स्वर ए और राम का युवा स्वर ओ का भोग चल रहा था।

६० सम्बत्सरों के नाम पूर्व में दे दिए हैं। राक्षस वम्वत्सर ४८ वें से ६० सम्वत्सर तक के १२ वर्ष के बीच राम ने रावण का वध किया होगा।

संभवत: यह स्थिति वनवास की समाप्ति के अन्तिम १४ वें वर्ष में होती है इसके पूर्व ए सम्वत्सर १२ वर्षों में राम के योग स्वर उ से दूसरा कुमार स्वर चलता था। कुमार स्वर में युद्ध करने से राम की विजय में अवश्य सन्देह था।

तथा च सम्भाव्य नहीं अवश्यम्भावी राम की जय, जय पराजय चक्र (समर सार ग्रन्थ लगभग १५ वीं शती के शासच श्रीराम-वाजपेयी रचित है। संस्कृत की प्राचीन दो टीकाएँ (१) भरत टीका (२) रामटीका है तीसरी हिन्दी में हनुमान् शर्मा जयपुर लगभग १९११ में क्षेमराज श्री कृष्ण दास वम्बई से छपी है) उसके जय पराजय चक्र से—

"अङ्कास्तुलारि भजतीधभुगानका:"—श्लोक ७)

राम के, र् २ आ ३ म् ६ अ ६ = १७

रावण के र २ + अ ३ + व् ८ + अ ६ + ण् ३ + अ ६ = २८

सत्रानुसार १७ − १२ = ५ ÷ ८ = शेष ५

२८ − १२ = १६ ÷ ८ शेष = ०

"शेष बहुत्वत: स्याज्जेता स एवं बलप: सुधिया विधेय:" अधिक शेष विजयी कम शेष पराजित होता है। अन्वय व्यतिरेक से राम की विजय प्रत्यक्ष स्पष्ट होती है।

मल्लयुद्ध कुश्ती आदि अनेक स्थलों पर इस विद्या का उपयोग किया जा सकता है। इति।

श्रीमद्भागवत के १२ स्कन्ध (१२ भाव) और ज्योतिष के १२ भाव (१२ स्कन्ध)

कात्यायन-कृत चरण व्यूह में, चारों वेदों के मन्त्रों की संख्या १ लाख

महाभारत और व्याकरण में भी क्रमशः एक एक लाख केवल ज्यौतिष में ४ लाख मन्त्रों का उल्लेख मिलता है।

"लक्षं वेदाश्चत्वारः लक्षं भारतमेव च, लक्षं व्याकणं प्रोक्तं चतुर्लक्षन्तु ज्यौतिषम्"

उक्त वाक्य से ज्यौतिष शास्त्र की अधिक व्यापकता प्रतीत होती है। श्रीमद्भागवत के प्रथम स्कन्ध प्रथम श्लोक से--

"जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्"—जन्म की ध्वनि के साथ पुराण प्रारम्भ कर १२ वें (अन्तिम) स्कन्ध के (अन्तिम श्लोक से) १३ वें अध्याय श्लोक २३ वें में--

"नाम संकीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम्।
प्रणामो दुखशमनस्तं नमामि हरिं परम्॥"

"पाप रूप शरीर का व्यय=प्रणाशन हरि-नाम संकीर्तन से होता है' इत्यादि कहा है।

प्रश्न होता है, किसका मोक्ष या किसे शुभ लोक की प्राप्ति होगी। शरीर का व्यय अवश्यम्भावी है। शरीर को जन्म मृत्यु के बन्धन से मुक्त करना ही श्री मद्भागवत् का मुख्य उद्देश्य या विषय है।

सभी प्राणी (जड़ या चेतन) जीवन मरण के बन्धन से मुक्त नहीं हो सकते तो कौन किस प्राणी की मुक्ति होगी, और कौन प्राणी पुनर्जन्म के प्रपञ्च में पड़ेगा ? इसका समाधान ज्योतिर्विद्या के सूत्र ग्रन्थ (जो महर्षि जैमिनि प्रणीत है) से स्पष्ट होता है।

सूर्य ग्रह से लेकर शनि ग्रह तक सात, राहु तक ८ ग्रहों में जिस स्पष्ट ग्रह का, अंश कला विकलादिक सब ग्रहों से अधिक हो वह ग्रह आत्म कारक ग्रह होता है।

"आत्माधिकः कलादिभि र्नभोगः सप्तानामष्टाना वा"

"जैमिनि सूत्र" पाद १. सूत्र ११

तत्पश्चात् उत्तरोत्तर कम के अंश से

तस्यानुसरणादमात्यः	१३
तस्य भ्राता	१४
तस्य माता	१५
तस्य पुत्रः	१६, तस्य ज्ञातिः १७, तस्य दाराश्च १८

१. आत्म कारक २. अमात्य कारक ३. भ्रातृ कारक, ४. मातृकारक, ५. पुत्र कारक ६. ज्ञाति कारक, और ७. स्त्री कारक ग्रह होते हैं।

''स ईष्टे बन्ध मोक्षयोः,' (जैमिनीय सूत्र प्रथम पाद १२) इस सूत्र का का आशय है कि—

आत्म कारक ग्रह नीच राशि पाप योग से बन्धन का स्वामी होता है, और उच्चादि शुभ राशि योग से मोक्ष प्रद होता है।

''उच्चे शुभे शुभ लोकः'' (द्वितीया पाद ६८ सूत्र)

यदि आत्मकारक के नवांश से द्वादश नवांश में शुभ ग्रह हो तो स्वर्गादि शुभ लोक प्राप्ति होती है।

तथा

'' केतौ कैवल्यम्'' (सूत्र ६८)

आत्भकारक नवांश से १२ वें (व्यय भाव) नवांश में केतु हो तो मोक्ष होता है। तो—

''क्रियचापयोर्विशेषेण'' ॥ ७० ॥ सूत्र से जिसका अभिप्राय टीकाकारों ने अपने व्याख्यानों में ''आत्मकारक नवांश से भागवत पुराण के प्रथम स्कन्ध से १२वें स्कन्ध रूप) १२वें नवांश में मेष या धन राशि होने पर भी सायुज्य मोक्ष होता है'' बताया है।

महर्षि जैमिनि ने फलित ज्योतिष के १२ वें भाव (व्यय) से जैसे जन्म ग्रहण करने वाले मानव की मृत्यु मोक्षादि विचार किया है इसी अर्थ को प्रकाराणतर से महर्षि वेद-व्यास ने श्रीमद्भागवत के १२ वें स्कन्ध (व्यय) मोक्ष से कहा है।